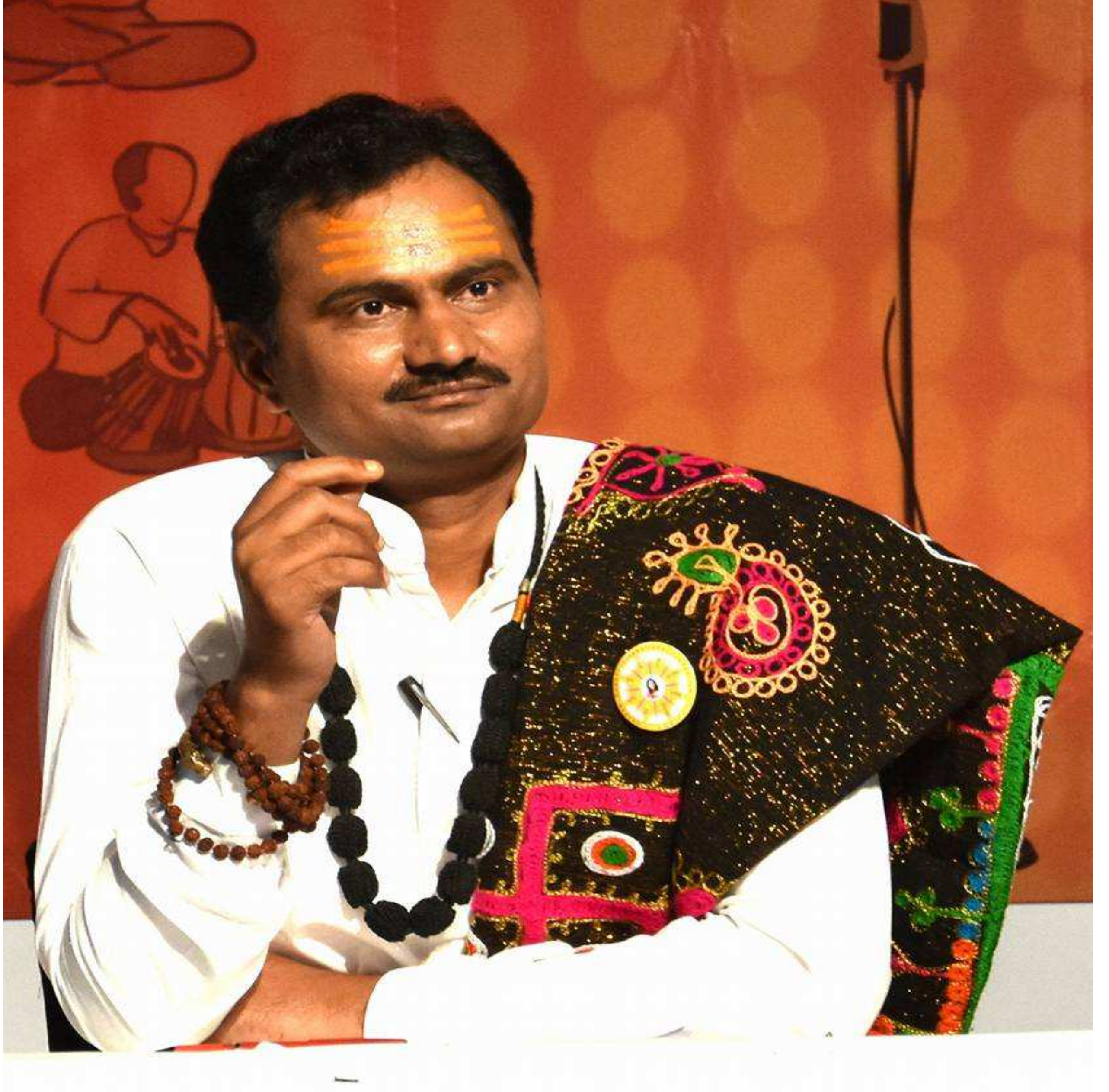
रंग चारण नी रीत भाग-1

चारण कविश्री जोगीदानभाई गढवी (चडीया) रचित रचनाओ



परशोत्तम रूपाला
PARSHOTTAM RUPALA



कृषि एवं किसान कल्याण और
पंचायती राज राज्य मंत्री
भारत सरकार
Minister of State For Agriculture & Farmers Welfare and Panchayati Raj
Government of India
D.O. No. ....MoS(AC&FW)/PR/VIP/2016/
તારીખ: ૧૮ મી માર્ચ, ૨૦૧૭.

શુભેચ્છા સંદેશ

ચારણો એટલે શિવ ઉપાસક - ચારણો એટલે માતૃશક્તિના પૂજક – ચારણો એટલે લાગણીઓનો ધુઘવતો સાગર - ચારણો જેની જીભે સરસ્વતિજીનો વાસ – ચારણો એટલે આધ્યાત્મિકતાના રંગે રંગાયેલ વ્યક્તિત્વ .... ચારણો માટે આવા અનેક વિશેષણો હું ઘણા સમયથી સાંભળતો આવ્યો છું અને અનેક સાહિત્યકારો જુદી જુદી પોતીકી વ્યાખ્યાઓ કરતા આવ્યા છે. ચારણ કવિશ્રી જોગીદાન ગઢવી રચિત ૧૪૦ કૃતિઓના સંપુટ "રંગ ચારણની રીત" માં આ હંધુય એક સાથે જોવા મળે છે, તેમ સહજ કહી શકાય.

ચારણ જગદંબા આઈ સોનબાઈ માં ના ગુરૂ પુજ્ય દોલતદાનજી ના ભાણેજ દ્વારા નિત પ્રભાતે સુર્યદેવને એક શુધ્ધ છંદ અને કાવ્ય બંધારણ સાથેની રચનાનો અર્ધ્ય આપવાની સાધના દ્વારા ચારણી સાહિત્યનો વારસો આપે જાળવી રાખ્યો છે, તે જાણીને આનંદ અને સંતોષની લાગણી અનુભવું છું.

મિત્ર કીજીયે ચારણા, અવર આળ પંપાળ,
જીવતડા જસ ગાવસી, મુવે લડાવણ હાર .....

આપની સાહિત્ય રચનાનું ઝરણું સતત ખળખળ વહેતું રહે અને અમ સૌ સાહિત્ય રસિકોને તે ભિંજવતું રહે, તેવી આશા સાથે આપના ઉજ્જ્વળ ભવિષ્યની કામના સાથે ચારણી સાહિત્ય સાધનાની ઉજળી પરંપરાના વાહક તરીકે ઉત્તરોત્તર પ્રગતિ કરતા રહો, તેવી શક્તિ - જોમ આપની કલમને પ્રાપ્ત થાઓ, તેવી સુર્યદેવ અને માં જગદંબાને વંદના સહ પ્રાર્થના કરૂં છું. "રંગ ચારણની રીત" પુસ્તિકાને મારી અનેકાનેક શુભેચ્છાઓ તેમજ સતત નવી રચનાઓ અને સાહિત્યસર્જનની અપેક્ષાસહ,

એ જ ... *પરશોત્તમ રૂપાલા ના ઝાઝાથી રામ રામ...*

પ્રતિ:
શ્રી જોગીદાનભાઈ ગઢવી – ચડીયા.

Delhi Office : Room No. 322, 'A' Wing, Krishi Bhawan, Dr. Rajendra Prasad Road, New Delhi-110001
Tel. : +91-11-23383975/76 Fax: +91-11-23383971, E-mail : mosrupala@gmail.com, p.rupala@sansad.nic.in
Gujarat Office : Plot No. 219, Sector-20, Gandhinagar, Gujarat-382020, Telefax: 079-23260013



"કેળવ ગુરૂકૃપા"
બી—૪૪, રાધાકૃષ્ણ નગર
મોતીબાગ પાસે, વંથલી રોડ,
જુનાગઢ—૩૬૨ ૦૦૧
ફોન : ૦૨૮૫—૨૬૭૦૨૫૮

તા.૦૭/૦૨/૨૦૧૭

ભાઈશ્રી, જોગીદાનભાઈ,

આપની કવિતા મેં ઘણી સાંભળી છે. સવારના પોરમાં તમે એક દુહો લખો છો. તમે પુજય દોલતદાન બાપુનાં ભાણેજ છો. એટલે આ બધુ તમારામાં સહજ આવે.

હમણા આપે "રંગ ચારણની રીત" નામના પુસ્તકમાં ૧૪૦ જેટલી રચના લખી છે તે બધીજ ઉતમ છે. મેં તમને સાંભળ્યા છે. ચારણી સાહીત્યમાં આપે મોટું ખેડાણ કર્યુ છે. તેનો મને ખુબજ આનંદ છે.

"રંગ ચારણની રીત" ખુબજ વંચાય અને આપણો ચારણ સમાજ લાભ લ્યે. ઈતર સમાજ પણ વાંચે વિચારે એવુ હું માતાજીને પ્રાર્થના કરૂ છું.

લી. ભીખુદાન ગઢવી



હે પ્રભુ ! આ જગતને સુધારજે અને શરૂઆત મારાથી કરજે.



चतुराई चारण तणी, रीता राजपुता,
रूप वखाणु नागरा,आसन अवधूत्ता !

चारणी साहित्य नो मारो जेटलो अभ्यास छे ऐमा भुतकाळ मा थई गयेला चारण महाकविओ नी रचनाओं वांच्या पछी मने ऐम हतु के चारणी साहित्य हवे संस्क्रुत साहित्य नी जेम भुतकाळ नो विषय बनी जशे पण चारण कवि मित्र भाई श्री जोगीदानजीऐ मारी ऐ मान्यता ने जुठ्ठी साबीत करी ऐवु ऐनु सर्जन नु निरीक्षण करता मारी थोड़ी घणी साहित्य विशे नी समजण ने लाग्यु छे !
वधु ईमानदारी थी वात करु तो ऐम नी उत्तम क्रुत्तिओ जेम जेम वांचतो गयो ऐम ऐम ऐणे साहित्य नी चोरी करी ने पोता ना नाम पर चडावी दीधी हशे ऐवी शंका पण सतत रही छे पण ऐ बाबत मा पण हु ज जुठ्ठो साबीत थयो छु !
भाई श्री जोगीदानजी मा ऐ क्षमत्ता छे ज के जे चारणी साहित्य नी ऊजळी परंपरा ना महाकवियो मा नज़रें चडे छे !
वाणी नी देवी सरस्वती जो मारु सांभळे तो ऐटली ज प्रार्थना करीश के " हे माँ !
साहित्य नी दुनिया ना दुकानदारों ने सांचववा के ना साचववा ऐ हु तारी मर्ज़ी पर छोडु छु पण जोगीदान चाडीया जेवा साहित्यप्रेमी पण स्वमानी चारण कवियों ने तु नहि साचवें तो ऐमा लाज तारी जशे !
जोगीदान जेवा कवियों ने तो लखवा ना हेवा छे ऐटले लख्या ज करशे केम के ऐने नथी सफळ थवु के नथी कोई ईनाम अकराम जोता के नथी कोई स्टेज,मंच के व्यासपीठ पर चडीने सभाओं नी ताळीयो पड़ावी ने पोता नो अहंकार संतोषवो !!!

तु उग्ये तिमीर टळे,आथम्ये थाय अंधकार,
ऐथी स्मरे संसार, ई जाणे जोगीदान जी !

स्नेहाधीन प्रफुल दवे

સ્નેહાધિન
પ્રફુલ્લ દવે





'ચારણ ચોથો વેદ, વણપઢ્યો વાતું કરે;
ભાખે અગમના ભેદ, જેની જીભે જોગણી.'

કાળચક્રની ધરી ઉપર યુગોથી ચારણ ઊભો છે .
સંસ્કૃતિની પહેરેદારી અને સમય સમયના પ્રવાહ
ઝીલતી આ વાહક પરંપરામાં એક આગવું નામ
એટલે જોગીદાન ગઢવી.
રોજ ઊઠીને સૂર્યદેવનાં વધામણાંની કવિતા કરતો
આ કવિ ચારણી સાહિત્યનો એક નવો સીમાસ્તંભ છે .
અવિરત વહેતું કવિતાઝરણું ઇ-બૂક સ્વરૂપે
આપણી સામે આવે છે.
આ સુખદ પળે મારી પ્રસન્નતા અને શુભકામના.

-અરવિંદ ત્રિવેદી (લંકેશ)

।।રામ।।
રામ સ્મરણ સાથે
અરવિંદ ત્રિવેદી
લંકેશ

[कवीराज नी काव्य केडीये]

चारणी परंपरा मां अनेक कवीओ थया. महात्मा ईसरदास अने सुर्यमल्लजी मिंसण थी मांडीने वर्तमान काळना चारण कवीओना साहित्य तरफ नजर करीये, तो युग युगना रंगो ने पोतानी कविता मां झीलीने, आज ए साहित्य जनमानस मां आगवुं स्थान ग्रहण करी चुक्युं छे.

चारणो नी कलमनी सरवाणी थी साहित्य नो बाग सिंचायो. ए बागमां विध विध रंगनां पुष्पो खील्यां, विध विध रंगनी सोडम उडीने फळा थी फलक सुधी फडाका मारवा लागी छे. साहित्य ना पटोळा पर, कलम ना कसबे चारणो ए अवनवी भात पाडी छे.

ए भात निरखतां हैयुं ठरे छे. कोई ए भक्तिनी भात पाडी, तो कोईए विर रसनी, कोईए वैराग्य नी तो कोईए शृंगार नी.

नेहडा नो निवासी चारण आज आधुनिक युगना रंगे रंगायो जरूर छे, पण एनी कविता मां तो आज पण गार अने गोरमटी नुं माधुर्य जोवा मळे छे. जीवन नी जंजाळ थी कंटाळेला ने जीवन जीववानी हाम पुरी पाडी छे.

ए उजळी चारण परंपरा मां थया छे जोगीदान गढवी भगवती आई सोनल माना गुरू प.पु. दोलतदान बापुना ए दोहित्र. दोलतदान बापुनुं खोरडुं एटले जोगीदान नुं मीठुं मोसाळ. दोलतदान बापुनी काव्य संपती ना वारस बन्या जोगभा.

प्रबंधादि अटपटी वाणी, भेद भाषा मां रचायेल दोलतदान बापुनुं साहित्य. समजवा कठीन थई पडे एवा दिर्घतम समास अने अलंकारो.

पु. दोलतदान बापु ज्यारे ब्रह्मलीन थया त्यारे कानाभाई डांगरने एम कहेता गयेला के, मारू साहित्य समजाववा पाछो हुं आवीश. (मारुं मानवुं छे के ए पाछा जोगीदान ना स्वरूपे पधार्या छे.)

जोगभा नी कविता ए कविता नथी, पण जीवन नी केडी छे. जीवतर ए वार्ता नथी, जीवन जीवन छे, उतार चढाव, सुख दुख, तंतो तकरार, ए समग्र जीवन नां अविभाज्य अंग छे.

जीवन नां आ अंगो ना रंगो ज्यारे काव्य मां जिलाय छे त्यारे अनोखी भात पडे छे. जोगभा नी कलमे ए रंग जील्यो छे, भक्ती, शृंगार, वीर, वैराग्य आदी रसो थी तरबोळ एमनी रचनाओ रंजन नी साथे प्रेरणा पुरी पाडे छे.

नवरात्री पर्व पर शकती रास रमवा नीकळे छे, त्यारे वैराट रूप धारी ए शकतीनो एक पग खैबर घाट उपर होय अने बीजो हेमाळा ना खोपरा उपर होय. ए जोगमाया ना पगनी धमके धरणी हाली उठे. ए प्रसंगनुं वर्णन जोगभा ए अदभुत कर्युं छे.

'मंडाण भेंचक भुवन तोळे धरण खोळे धम्मीयां,
नफराण नोळे ग्रसण कोळे घटण घोळे घम्मीयां,
खळकंत चुडो हाथ खप्पर जब्बर जोरे जम्मीयां,
मद छक्यां मारण जोग चारण रास मोगल रम्मीयां.'

'मद छक्यां मारण' मद मां चुर बनेला गर्विष्ठो ना गर्वनुं गंजन करनार. आहा, शुं शब्द प्रयोग.

ए भगवतीना ताळीना टपाके त्रणे लोक गाजी उठे छे, संभारो ए चरण -
'त्रय लोक गुंजण पडत ताळी भेळीयाळी भम्मीयां'

एक रचना मां जोगभा ए आईने पाडा पीनारी कही छे. पाडा पीवे ए मा होय खरी ???? पण कया पाडा ????

असुर रूपी पाडा, जुल्मो सितम नी समशीर लई मजलुमो पर कहर ढाळनारा, ए पाडा छे, ए महिष छे, जोगमाया ए दुष्टो ने दंडे छे.

'पीये पाडा दीये थाप त्यां प्राहटे, चुंसी ले चामने रगत चंडी'

शब्द ने बह्म नी उपमा तो आदीकाळ थी अपाई छे, पण जोगीदिन तो शब्द ने समशीर कहे छे.

'वरताती थई वैखरी, खमां खमां कही खेर,
जगत जुकावे जोगडा, शब्द तणी समशेर.

ज्यारे ज्यारे देशने शाशक भान भुल्यो छे, न्याय छाबडामां अन्याय खडकाय, ने पलुं एक बाजु नमे, त्यारे त्यारे आ समशीर चाली छे. शब्द नी

आ समशीरे घाव मार्या छे, पण क्यां ? हैया मां, हाम हारेला नो हाथ जाली उभो कर्यो, कायरने भड करी भारथ भेडव्यो.

वर्तमान काळ मां नशो ए विकट समस्या थई पड्यो छे, केटलाय डुबी गया छे बंध बोटल मां. ए विशे जोगभा कहे छे के -

दोवा रे' नही दोबडी, छोरां रे' वण छाश,
जुओने केवो जोगडा, नशो नोंतरे नाश.'

धर्म नो अंचळो ओढी बेठेला धर्म ध्वजो के जे समाज ने नफरत सिवाय कांई आपी शक्या नथी, वैमनस्य वधारी, वेर करावनारा धर्मधुरंधरो ने फटकारतां पण जोगभा अचकाया नथी -

करतोय कुडां काम पाछो मंदरे जई मा'लतो, चावी गरीबनां चावणां ने चटक थी जे चालतो, विदवान थी नही वा'ल बस वितवान थी वहेवार छे, धिकेकार छे धिक्कार छे धमहीन ने धिक्कार छे.

जोगभा नी कलम नी बीजी बाजु पण छे, निसर्ग ना वर्णन मां, प्रकृतीना चरित्र चित्रण मां आ चारण नी कलम ओर खीली उठे छे. चोमासानुं आ वर्णन जुओ -

एवी विजळीयुं व्रळकाट करे,
धरणी धडडाट नी आश करे,
ओली ढेलडीयुं संग ढुम रही,
केहुं केहुं मोरां कलकाट करे,
जाणे जोगडा चारण जाप जपे,
गगने पियु गरजाट करे'

आहाहाहा | गगने गरजाट करतो मेघ केवो लाग्यो ? जाप जपता चारण जेवो. वाह उत्प्रेक्षा नी छणावट. तो वळी अषाढ नां ओवारणां मां मेघने, घोडे चडी परणवा आवता वरलाडा नी उपमा आपी छे.

ज्यारथी काव्य लेखन सरु कर्युं त्यारथी सौ प्रथम भगवान सुरज नारायण नो दोहो लखवो त्यार बादज धरती पर पग मुकवा नुं नीम छे.

एमनी कई कविता मुललवी ? एक प्रश्न थई पडे छे. एक एक थी चडीयाती रचनाओ लखनार जोगभा लांबु आयुष्य प्राप्त करे, अने आवी सरवाणी वहावता रहे, एवी जगदंबाने प्रार्थना

अनुक्रमणिका

1-|| शारदा अष्टक ||

छंद: भुजंग प्रयात

सुंणो आरदा सारदा मा सगत्ती
विंणा वाम हाथे सुगाथे वगत्ती
जणीं जोगडा ज्योत मातुं जगत्ती
भणुं आसनी पद्म भावे भगत्ती.||01||

सुरो सात नी मात तुं वेद वांणी
नमुं पाय तोळे प्रसो शिस पांणी
जपी जोगडो गावतो हेत गांणी
असां उरमे मां उजांणी उजांणी.||02||

तुंही वेद वाता दीपो सुर दाता
गुणीं काल ग्याता सुक्राता सुहाता
भणें जोगडो भाग्य वारी विधाता
असुरा सुरा साज मे सुर साता.||03||

तुंही स्वेत पद्मे की हंसे बीराजे
मया जोगडा चारणा रस्ण राजे
बणें छंद गीता गीरा गोम गाजे
अनेकाय नेकाय सुं काज साजे.||04||

तुंही मात योगा न जोगा जणेत
तुंही सुर शब्दा परब्धा प्रणेता
तुंह मन्न वांणीय जांणी जनेता
तुंहीं प्रांण पांणी विनांणी वनेता.||05||

तुंही ब्रह्म चारी सदा स्वेत सारी
जपुं नाम जारी उचारी उचारी
असां घट्ट मे मां रहो ऐक धारी
पडुं पाय तोरे पुकारी पुकारि. ||06||

बिधु शब्द बंबा गिरंबा गजानी
अचंबा भया मां प्रलंबा पखानी
जपां जोगडा जुग दंबा जुबानी
अळां आदी अंबा बसो नित्य बानी.||07||

सदा स्वेत धाता लळी पाय लागुं
जगावो जीवे ज्योत जे तेज जागु
जगे जोगीदानम् तमो गुंण त्यागुं
महा सुर मां सुरता मात मागुं.||08||

2 - || चारण गांन ||

राग: श्री रामचंद्र कृपालु भजमन (मिश्र सारसी)

श्री शारदा सुंण आरदा सत वचन धर्म न छोडीये
नित प्रोढ जागी प्रेमथी जगदंबीका कर जोडीये
यादी करी ऐ अगम नी ने दीव्य तेज दीपावीये
जप जांन जोगी दांन चारण गांन पावन गावीये..||01||

छे भव्य जे भूत काळ ऐने अधीक सौ उजळो करो
जळ हळ थतो जे जगत मां ऐ धरम ने पाछो धरो
वंदन करी विश्वे श्वरी ना रदय ने रे रीझावीये
जप जांन जोगी दांन चारण गांन पावन गावीये..||02||

दारु ने गर्णींये दैत्य सोनल वात ने संभारी ये
व्यसनो तजी ने वेगळां नीज धर्म चारण धारीये
आयल तणां आदेश बावन नियम सर्व निभावीये
जप जांन जोगी दांन चारण गांन पावन गावीये..||03||

पद मान वैभव विमळ वांणी वाल जन विश्वेसरी
सुख सायबी मां सकल चारण ओपवो मां ईश्वरी
ज्ञाती सकळ गंगा गणी बद लेश ना उर लावीये
जप जांन जोगी दांन चारण गांन पावन गावीये..||04||

दीकरी ने गर्णींये देव ने नव दहेज कारण दोभीयें
आयल उपासक अगम ना सुध आचरण थी सोभीये
नीज पुत्र वधु ने पुत्री गणी खुब व्हाल नेह व्रसावीये
जप जांन जोगी दांन चारण गांन पावन गावीये..||05||

ईरशा अहम त्यागी हरीरस नित्य चाखे चाह थी
कुड कपट ना हो काळजे नव छके ई वाह वाह थी
ऐवा अजाचक निम धारी खाज अखज न खावीये
जप जांन जोगी दांन चारण गांन पावन गावीये..||06||

आतम बली मन अडग निर्भय निडर हो जग नाथ सु
सत करम जन हीत हो सदा हे मात चारण हाथ सु
निज देश धर्म पत नार कज बंबोळ रगत बहावीये
जप जांन जोगी दांन चारण गांन पावन गावीये..||07||

आयुं जगत मायुं फरी अवतार लई ने आव शे
जय जय जपी जगदंब नी ए गीत अमियल गावशे
प्हाडा ने वाडा सकळ त्यज सब ऐक बन जग आवीये
जप जांन जोगी दांन चारण गांन पावन गावीये..||08||

अथः श्री चारण गांन स्तुती

3 - || आव्योय हेमुं याद ||

राग : हे कान तारी मोरलीये मोही ने...

मीठप कंठे मोरलो, (ऐवो) सरवोय गुढो साद
जीव अमारो जोगडा, आव्योय हेमुं याद.

हे दान तारा रे कसुंबल कंठ मां,, ..मधरा रे मोर बोले...
ऐवा ढांकणीया गामना रे ..रतनु साख ना ..
जीरे हेमु भाई क्यारे आवे...हांरे हेमुं भाई क्यारे आवे..

हे..दान तारां रे गितडीयां ने गायतां..पांपण्युं मा ॉ पांणी आवे
ऐवा कळायेल कंठ ना ,..रे रुडा साद ना ..
जीरे ऐ गीतडां ने कोंण गावे..हांरे हेमुंभाई क्यारे आवे......

हे..दान तारा रे रुपक माय रोई ने ..गुजरात गांडी बनी..
ऐवा रांक नां रतन ने ..कडवां सासरीया...
जीरे आ जग मां कोंण लावे....हारे हेमु भाई क्यारे आवे..

हे दान गरजे अहाड नो मेघ त्यां..यादीयुं तारी आवे..
ऐवा काळजा ने कोरता.. रे ..मनडां मोंहता...
जीरे कानजी ने कोंण गावे...हारे हेमु भाई क्यारे आवो..
हे दान वाल्यप वळुंभतो वाट्य रे, ..जोगी दांन जुंवे..
ऐवा सरवण मास नी ..रे आठ्यम रात ना...
ग्येला हेमुं भाई क्यारे आवे..जीरे हेमुं भाई क्यारे आवे...

(कळायेल मोर जेवा कसुंबल कंठ ना गायक हेमुभाई गढवी ने हैया ना भावथी श्रद्धा सुमन रुप जोगीदान गढवी रचित आ भावगीत थी कोटी कोटी वंदन)

4 - || मोगल रास सप्तक ||

छंद: मिश्र त्रोटक दुर्मिला

तरवारुंय तांणीय मेघ मंडाणीय घांघणीयाणीय घोर घुमे
फरड़डाट फरे रण फुद्दर मोगल भेळीयो व्रेमंड मांय भुमे
करे हाक बजे ज्यम डाक पडे कन धाक धधाक धधाक धमे
चडीया चरिताळीय कोप क्रोधाळीय रुप डाढाळीय रास रमे. || 01||
हुकळी उकळी हूहूकाट करे झूमती घुमती चख आग झरे
घडे डाट दीये हथ घाव रीपु शीर पीर वदी दुठ पाग परे
खणकी झणकी रणकी खड़गां डंणकी दल तुं अहरांण डमे
चडीया चरिताळीय कोप क्रोधाळीय रुप डाढाळीय रास रमे. || 02||
खणेंणाट करी कर कांकण ने अडेडाट तुं आयल आभ उठे
कडेडाट कडेडीय विजळ सी आय राखह माथेय देव रुठे
रमे राहडो तुं हत्थ जोगणीयुं जेर जम दड्ढी वाका बुक जमे
चडीया चरिताळीय कोप क्रोधाळीय रुप डाढाळीय रास रमे. || 03||
धणेंणाट धणेंणीय केहर सी हणेणाट करी रण हाक रची
गणेणाट करी उचे आभलीये उड्यां माथलडां ज्यम होड मची
खलके खमकारी चारणा चारीय खोट ते मोगल केम खमे
चडीया चरिताळीय कोप क्रोधाळीय रुप डाढाळीय रास रमे. || 04||
करती किलकाट किलोल कली तारुं रुप भयानक आज रणे
दीये ठेक धरा पडतो थडको फड़को पड़तो जाई शेष फणे
तर हुर रुधी रांय रेल तवां त्रब केल मुकेल ना खेल क्षमे (खमे)
चडीया चरिताळीय कोप क्रोधाळीय रुप डाढाळीय रास रमे. || 05||

धर ओखाय घारीये गोरव याळी ये नाळीये गोखण गाम गमे
लीये चारण लेखण नाम लाजाळीय जोगण तुं नीत नेह जमे
कीरपा कीरपाळीय नेक नेजाळीय नृप घणां पद शिस नमे
चडीया चरिताळीय कोप क्रोधाळीय रुप डाढाळीय रास रमे. || 06||

उचरेल तुं मात उदोह उदोह जुदोह नको कोई आज जडे
तरवार ग्रही तरवेरोय तेखण पुजण सोजण पाय पडे
जोगी दान करे अनुमान सुजान तुं सोय भले नव तेह समे
चडीया चरिताळीय कोप क्रोधाळीय रुप डाढाळीय रास रमे. || 07||

(पुज्य आई श्री मोगल ना चरणों मां हजारो वंदन सह रास सप्तक)
पेहला पांच अंतरा मां माताजी नो क्रोध छे पण पांचमा अंतरानी
छेल्ले माताजी क्षमे कही ने वळता भाव मां छेल्ला बे अंतरा मां
आई नो राजीपो व्यक्त करवा कालावाला करेल छे...)

5 - || ....नशो नोंतरे नास.... ||

दोवा रहे न डोबडी.छोरां रहे वण साश.
जुवो ने केवो जोगडा.नशो नोतरे नास.(01)
खेतर रहे न खेडवा.रहे न खीलडे राश.
जुवो जगत पर जोगडा.नशो नोतरे नाश.(02)
बोल्या करशे बायडी.कायम घर कंकाश.
जुवो जगत पर जोगडा.नशो नोतरे नाश.(03)
गोथां खाता गटर मां.पडे नरक नी पास.
जुवो जगत पर जोगडा.नशो नोतरे नास.(04)
गांजो पी गांडा बने.ईज्जत नी नई आस
जोने केवो जोगडा.नशो नोतरे नास.(05)
भुंड तणो ते भाई गण.दारु नो जे दास.
जुवो नजर थी जोगडा.नसो नोतरे नास.(06)
खुवार करतो खोळीयुं.लथडे जीवती लास.
जुवो ने भमता जोगडा.नसो नोतरे नास.(07)
ईज्जत नई ना आबरु.बोल्ये य मारे बास.
जोडे गमे न जोगडा.नसो करे ई नास.(08)
दोरु पी बस डोलतो.त्रिया ने देतो त्रास.
जो घर भागे जोगडा.नसो नोतरे नास.(09)
गणसे नई कोई गाममां.जंतर वाग्ये जास.
जो साचु क्हे जोगडो.नसो नोतरे नास.(10)
खोटा ईज्जत खोईने.वोरो नही विनास.
जाळव घर क्हे जोगडो.नसो नोतरे नास.(11)

6 - || कवित ||

आलम अढार अवनी पे जो अराधे जाकुं
भार जो अढार वन्न संपत मे सायो है.
कुरु खेत दीयो सैन अक्षिणी अढार पुरी
युद्ध भी अढार दीन चाह चल्लवायो है.
आयुध अढार हत्थ देख्यो अरजुन्न रुप
अध्याय अढार गीता गांन मे गवायो है.
कहे जोगीदान कान जीलण कुं आयो जल्ल
दीन गीन ती मे ये अढार अंक आयो है.

कृष्ण ने अढार आलम पुजे छे..अढार भार वनस्पति तेणे वन मां गायो ने चरावी छे..कुरुक्षेत्र मां सैन्य पण अढार अक्षणी लीधु..युद्ध पण अढार दीवस चाल्युं..अर्जुन ने वैराट रुप बताव्युं तेमां पण अढार हाथ मां आयुध लीधा..गीता पण अढार अध्याय मां गाई अने आजे ज्यारे जळ झीलवा आव्या छे..त्यारे तेमना जन्मदीन गोकळ आठम थी आज सुधी ना अढार दीवस थाय ते आंकडो पण कृष्ण चुक्या नथी....जळ झीलणी नां अढार अंकी ने हजारो वंदन...जय श्री कृष्ण

7 - || बेटी बउं बाप ने वाली ||

राग: माडी अमे बाळ तमारां....

काले जे बोलती काली..समजु थई सासरे हाली....
लागी ऐने हाथ मां लाली. .बेटी बउं बाप ने वाली...

ढींगलां लैने धोडती ती जे.आज उभी अण डोल
मांडवे आवि मौन बनी जो...बेन दीये नई बोल
ठाकर नई वात आ ठाली.. बेटी बउं बाप ने वाली..
भाई काजे आखा गाम ने भांडे..मात नो खाती मार
(तोय) विर खम्मा कई वाल वरहावे...ऐवडो जीव उदार
हेताळी हिबकी हाली...बेटी बउं बाप ने वाली..

बापु तमे ऐने बोलता ना कंई.... बउं भोळी मुंज बा..
करी भलांमण काळजां चीरे ...गभरुडी ईय गा..
प्रेमे जेने कोड थी पाली..बेटी बउं बाप ने वाली...

जाउं छुं के त्यांतो काळजुं कंपे..मन मां बाप मुंझाय
साचवज्यो के त्यां सेरडो पडतो, (जांणे) जीवडो बारो जाय
खावा धाय खोरडुं खाली...बेटी बउं बाप ने वाली..

दीकरी नई आ छे दीकरो मारो...जीव छे जोगीदान.
ममता ऐनी मावडी जेवी.......पाथरी देती ..प्रान
आहुडा आंख मां आली..... समजु थई सासरे हाली....

8 - || मोहन नामे मातमा ||

मोहन नामे मातमा, गांधी थ्या गुजरात
जग आखा मां जोगडा, वातुं छे विखीयात
गांधी माथे गोडसे, नाथु धरीयुं नाळ
जोतां पडीयुं जोगडा, फलक धरा ने फाळ
पेरी ऐकज पोतडी, राख्यो रुडो रंग
जायो पुतळी जोगडा, गांधी निरमळ गंग
स्तय उपास्युं सर्वदा, वालां गण्यां न वस्त्र
जुलमी आगळ जोगडा, सामो थ्यो विण सस्त्र
आफळीयो अंग्रेस सुं, वणीक रख्यो तें वट्ट
जांण्यो मोहन जोगडा, परम विर परगट्ट
मुकवी आखा मलक नी, तुला धरा तरवार
जुक्यो कबु ना जोगडा, पोग्यो जुध थी पार

हे तुला (त्राजवां पकडनार) ते मलक आखा ना हाकेम अंग्रेज नी तरवार नीची मुकावी...विण हथीयारे जुक्या वगर तुं जुद्ध नी पार पोग्यो

प्रयोग सत्ये पामीया, ऐक सितत्तर आप
जे तप कारण जोगडा, बनीया भारत बाप.

ऐकसो ने सित्तोतेर प्रकरण नी सत्य ना प्रयोगो पछी सत्य नो जय थाव करनार हे महात्मा ऐ सत्य ना प्रतापे आप भारत (रास्ट्र) ना बाप (पिता) बन्या...सत्य मेव जयते

भण्या विदेसे भाई ने, बापु भारत बोल
जे गांधी थी जोगडा, दुनिया जाती डोल

दक्षीण आफ्रीकाये भाई ना संबोधन थी ओळख्या अने.भारते बापु ना बोल थी नवाज्या

करम तणां केवां करम, (जे) बापु नो पण बाप
जेणे सत नी जोगडा, छोडी जग पर छाप

करमचंद गांधी ना केवां उजळा करम हशे...जेने आखुं रास्ट्र पिता कहे छे...ऐनाय पिता बन्या नुं सद भाग्य मळ्युं

रमत सिख्यो घर राजनी, दादा बाप दीवान
जुदुं लड्यो के जोगडो, वकिल राज विदवान

गांधीजी ना पिता करमचंद पण राजकोट वांकानेर अने छेल्ले पोरबंदर स्टेट ना दीवान होई राजकारण तो नानपण थीज रहेल पण हे वकिलराज महात्मा तमे कंईक जुदी रीते लड्या

पडघायो प्रथमी परे, सत्य अहींसा साद
जे पथ जाता जोगडा, युगे युगे ऐक आद.

बुद्धत्व पामेल सिवाय ना लगभग ते मारगे कोई चाल्या नथी पण हे महात्मा तमे सत्य अने अहींसा नो हेवो साद पाड्यो के तेना पडघा आखी प्रथमी पर पडघाया..जे रस्ते आखा युग मां कोई ऐकाद जण जाय ते मारगे आप चाल्या

9 - || भजुं तुंने मात भवानी ||

राग: माडी अमुं बाळ तमारा

फोगट आ दुनिया फानी...भजुं तने मात भवानी
जुगो थी पार मे जानी, जोगण तुं मात जोगानी
खोरडे आवी खेलती माडी ..आई लेती अवतार
छोरुं तारां ना राखती छेटा..अंब करो उपकार
गायें नीत भाव थी गानी..आवो हवे मात उदानी
कोल दीघेला कुळ मां रेवा, आई करो ने याद
बोल दीयो बुट बेचरा बायुं ..सोरु दीये छे साद
पाछा लीयो मात पिछानी..देवल ने बाप देथानी
जुग पलटावण जोगणी अमने..केम भुली कीनीयांण
अहम भांग्यो यमराज नो एनी..जग आखा ने जांण
देसण पत देव तुं दानी..., माजी सुंण वात मेहानी
मोड बनी आखी नात्य नो माडी..मढडा टिंबे मात
काम उजागर कोम नां माडी .आई किधां अखीयात
बोली जे केहरी बानी..सोनल नई कोई थी छानी
चारणो वंदे आध्य चंडीका,.केम धरे नई कान
नाद अंतर थी मात नेजाळी ..जगवे जोगी दान
पाछी ना करती पानी....बेठी था होल बुढानी

10 - || जे कुळ झुल्ला जोगडा, सांयो साचो संत ||

झुल्ला कंचन झुल्लसे, मेंगळ आला मल्ल
जेह नवाज्यो जोगडा, भूज बडो भुज बल्ल.
ठार्या तें ठाकर तणां, वाघा सांया वीर
जे गढ ईडर जोगडा, थडक विरमदे थीर.
ईडर गढ ने उतरी, साया माथे शंक
जेह विरम दे जोगडा, आडोय भाटां अंक
आप समा थी उजळी, नव खंड माथे नात
जग साया कर जोगडा, विर साया नी वात

भेंती पेठी भाट ने, खेल्या अवळा खेल
तोय
गुंणीयल करतो गेल, जो गढ ईडर जोगडा
सायो दुभव्यो शंक थी, (ई) ईडरा तणीं अबक्ख
(माटे) वहमी लागी वक्ख, जालणसी ने जोगडा
सळग्या वाघा स्यामना, वाले करीयल वार
जे सांया ने जोगडा, तनमन कानड तार
ठार्या तें ठाकर तणां, वाघा सांया वीर
जे गढ ईडर जोगडा, थडक विरमदे थीर.
पंचाळी ना पुरीयां, वेगे दोडी न वीर
चारण ठारे चीर, झुल्लो सांयो जोगडा

जय श्री कृष्ण

11 - || पिंगळ नाम प्रचंड ||
छंद: चतुस्पदी नाराच

हती हजुर हाजराय कंठ मे कदंबरी
रटंत छंद राधीकाय सेंण कान संभरी
भवेण राव भावणी डणंक काव्य डींगळा
जती व्रतीय जोगडा प्रचंड नाम पिंगळा

सतत्त चित्त चेतवे महा चतुर चारणा
सगत्त मात सारदा वळुंभ लेती वारणा
अनोख वात नाखणी ग्रजंत नाद जेगळा
जती व्रतीय जोगडा प्रचंड नाम पिंगळा

छटा अनेक छंद रुप लेख जात लावणा
कदीक सिस्ट काव्य मे गुंणी गझल्ल गावणा
लखे अद्वैत लेखणी कलम ब्रसी महा कळा
जती व्रतीय जोगडा प्रचंड नाम पिंगळा

आवीया अनेक जो प्रकांड भेद पावीय
पुरांण वात की प्रतां लखांण लार लावीया
मथेल सायरो महा तथापी पार ना तळां
जती व्रतीय जोगडा प्रचंड नाम पिंगळा

पढे निदान सास्त्र ज्ञान वान मोक्ष पायेगा
कलम्म आप ने लीखा वो याद आज आयेगा
अनेक बार आंणसी जलक्क नैंण जळजळा
जती व्रतीय जोगडा प्रचंड नाम पिंगळा.

पिंगळ नाम प्रचंड.

ओगणीसमी सदी,वीसमी सदी, आजे ऐकविसमी सदी..आंम त्रण सदी थी जाग्रत नाम ऐटले भावनगर राज्यकवि पिंगळसी बापु...

वित्यां जुवो वरसो भला, ऐक सतक उन साठ
जनम उजल ई जोगडा, पिंगळ सिखवे पाठ

चारण कविता छंद चित, प्रीत कर पढ्यो पुरान
जद रचयो भल जोगडा, पिंगल वेद प्रमांन

ऐक रखी है अंतरे, चारण कवि गण चाह
जन्म पताउत जोगडा, उजवे भर उत्साह

जद पिंगळ जन्मा दीना, तद भावेणां तीर
जळ थळ राजी जोगडा, ईस निख नयन अधीर

क्रीष्ण रटण रसणा करी,घट नव रख्यो घमंड
जाती चारण जोगडा, पिंगळ नाम प्रचंड

. छंद: चतुस्पदी नाराच
हती हजुर हाजराय कंठ मे कदंबरी
रटंत छंद राधीकाय सेंण कान संभरी
भवेण राव भावणी डणंक काव्य डींगळा
जती व्रतीय जोगडा प्रचंड नाम पिंगळा

सतत्त चित्त चेतवे महा चतुर चारणा
सगत्त मात सारदा वळुंभ लेती वारणा
अनोख वात नाखणी ग्रजंत नाद जेगळा
जती व्रतीय जोगडा प्रचंड नाम पिंगळा

छटा अनेक छंद रुप लेख जात लावणा
कदीक सिस्ट काव्य मे गुंणी गझल्ल गावणा
लखे अद्वैत लेखणी कलम ब्रसी महा कळा
जती व्रतीय जोगडा प्रचंड नाम पिंगळा

आवीया अनेक जो प्रकांड भेद पावीय
पुरांण वात की प्रतां लखांण लार लावीया
मथेल सायरो महा तथापी पार ना तळां
जती व्रतीय जोगडा प्रचंड नाम पिंगळा

पढे निदान सास्त्र ज्ञान वान मोक्ष पायेगा
कलम्म आप ने लीखा वो याद आज आयेगा
अनेक बार आंणसी जलक्क नैंण जळजळा
जती व्रतीय जोगडा प्रचंड नाम पिंगळा

. कवित्त

विक्रम सवंत दो हजार द्विय सित्तर को
मित मे उचित्त धर्म दीप नाम धार्यो है.
आवन अनेक नेक नामदारी अती नेह
माडू महा मूल अति भाव आव कार्यो है.
रोशन कीयो हे कुल तेज राज कवि ताप
बाप ऋण आप ईहि ओसव उतार्यो है.
पाता उत पिंगल नरेला नवे खंड नाम
कहे जोगीदान नेह नगर निहार्यो है.

माढ

खेले नेह भर्यु नव खंड..रे ऐक पिंगळ नाम प्रचंड.
जळहळ चारण जोगडे भाळी..आतम ज्योत अखंड

काळज कायम कृष्ण ने राख्यो..क्रिष्णे कर्या खुब काम
जेंणे सीता ने जंगल मेली, नव लीधुं ऐनुं नाम
भगती ऐवी भावेंणा भावे ,मानो ऋषी मरतंड रे..
खेले नेह भर्युं नव खंड.. रे ऐक पिंगळ नाम प्रचंड.

फांकडुं गाया के फिर नही आना..चित्त सियानां चेत
ज्ञाती चारण माथे गुंणीजन..हरदम राख्युं हेत..
खडतल बांधो आख खुमारी..पंड्य हुता पडछंद
खेले नेह भर्युं नव खंड.. रे ऐक पिंगळ नाम प्रचंड.

काग मेधांणी य आशायुं करता..साहित्य केरी सुजान
ऐवी अनोखी वातुं अजांणी....जांणे छे जेगीदान
त्रण त्रण सतक थी आवे अविचळ..भ्रात नरेला भुमंड
खेले नेह भर्युं नव खंड.. रे ऐक पिंगळ नाम प्रचंड.



12 - || भुलुं क्यांथी भाल ||

राग: माढ

दोहो

वतन तणीं आ वातडी, गळके आंहुं गाल
जरीये मनथी जोगडा, भुलुं क्यांथी भाल

गीत

जेने निरखी मनखो न्याल रे ..तने भुलुं क्यांथी भाल रे

नेक अनेको ना पाळीया पोढ्या..खोटा न ऐना ख्याल रे..
साबर मती ने वात्रक सेढी, माझुम भोळी मात

हाथ मती ने खारी हेताळी..मेश्वो त्यां मलकात
सात नदी ना संगम वाळां..वौठा माथेय व्हाल रे..
जेने निरखी मनखो न्याल रे ..तने भुलुं क्यांथी भाल रे
घेघुर लीलका उतावळी घेलो..गौतमी काळु भार

भोगावा पर भाव छे भारी...रांणक नो रखवार
गढरे ईडर गजवी ने थ्योतो..संघ कावठीयो साल रे..
जेने निरखी मनखो न्याल रे ..तने भुलुं क्यांथी भाल रे
रैयत बोल्युं पाळेलुं राजे..खस्ता कर्युं तुं खेर

गांफ धणी गजमार उजाळ्यो ..वट्ट थी वाका नेर
कामण गारां काळज घेलां..मानव साचां मराल रे
जेने निरखी मनखो न्याल रे ..तने भुलुं क्यांथी भाल रे
मात समांणी ने नेहडी सांई..लाखेणी वात लखाई

मालीक केरां माथां लीयावे.,चारण नी च..तुराई
चडीयो माढ ने आज चितारे..गातां मुख गुलाल रे..
जेने निरखी मनखो न्याल रे ..तने भुलुं क्यांथी भाल रे
भीम रसोडु ने पांडव शाळा..मध्ये मळाव तलाव

देख्यां जोगी दान दीलावर.. भोळा जण नां भाव
धणींयांणी थउं धोळकानी कई..नारीयुं थाय निहाल रे..
जेने निरखी मनखो न्याल रे ..तने भुलुं क्यांथी भाल रे ..
लोथल पासे गाम लीलुडूं....सुरग वाळा सोहाय

भायुं मळे नवरात्युं मा भेळा..उरमां उजांणी थाय..
बाळपणुं जांणे कानमां बोले..धिंगा मस्ती धमाल रे..
जेने निरखी मनखो न्याल रे ..तने भुलुं क्यांथी भाल रे ..

13 - || कवित ||

शिव ना सिकार्यो सती भाव को सतानो लक्ष
दक्ष प्रजापत्त अती आचर्यो अनर्थ है
यज्ञ मे उतार्यो देह न्याळ्यो सती शिव नेह
सुंणंतो उठ्यो रुद्र भारती को भर्थ है.
आयो शिव काळ झाळ मुंड तुंड कंठ माळ
वांन विकराळ जो न गुथ्यो जीव गर्थ है
लीयो अवतार दुजो मेनावती मात कुंख
पति शंकरा को पाउं वात दुजी व्यर्थ है.
कहे जोगीदान जोगीराज शिव सर्ण भजी
हैमजा भवानी सधु सैल जो समर्थ है

14 - सुर्य वंदन सपाखरु

काळा वादळा हठाळा माळा,गाळा गरजाळा मळी, त्रांणीया बांधीया गोढ तीमीराळा तांण.

त्यांतो

आवीयो सादूळो सूर त्राटक्के अजा रे टोळ, ओळे घोळे कोळे बुक्का अंधकारा आंण.

भांगीया खेखट्ट जट्ट पट्ट अंधकारा जोगा, भळक्के डणंके भळेळाट उग्यो भांण.

जळक्के ढळक्के तेज तिमीराळा त्रागा त्रागा, वागा हथ लागा सातो कुदीया केकांण

चडीया न चुके पथ पडीया कीताक्क पाणां,

नांणा नत टांणा पूरो निकळे नवांण

जांण जोगीदांण भांण खरो म्रदायु री खांण

वांण वरदांण करां धरंतो क्रीपांण

भगवान सुर्य नारायण ने मारां नित्य वंदन छे

15 - || देवल सत नाम दियाळी ||

ढाळ: रावळी परज

देवल सत नाम दियाळी, सगती सारण सूडाळी रे, जनमी जगदंब जोराळी.....टेक

साद तारो ज्यां सांभळ्यो त्यातो, ऐज आव्यो अणसार..(02)
वचन संभारी आवियां वेगुं, परखांणी जूग पार..
भावे तने सून्य मां भाळी, सगती सारण सूडाळी रे, जनमी जगदंब जोराळी....||01||

दिपवी आखी देव जाती तें, आई धर्यो अवतार..(02)
वरतायो तारी वाणीयुं मां मने, सघळा वेद नो सार..
पोतावट एवडी पाळी, सगती सारण सूडाळी रे, जनमी जगदंब जोराळी....||02||
पग पाताळे ने भेट भूमी पर, आभमां शिस उठेल
जोग सिद्धी महा जोगणी जांणे, खलके मांड्यो खेल
परगट भू आभ पाताळी, सगती सारण सूडाळी रे, जनमी जगदंब जोराळी....||03||
नेह नेहे जाई नात्य जगाडे, सोनबाई जेम साथ..(02)
चडीयो जोगीदान चहे छे, हेत छांयो तुज हाथ..
हरखी सर राख्य हेताळी, सगती सारण सूडाळी रे, जनमी जगदंब जोराळी....||04||



16 - || पतंग दोर नी प्रित ||

राग : कागडा कदीये कारहे नावे....

दोहो

बनवुं साचुं बापला , ऐक बीजा ना आंत
जुदा न थावुं जोगडा, सिखवे छे सकरांत

गीत

पतंग नी दोर थी प्रितडी पुराणी......(०२)
सउ ने जोने सिखवी जाती, उतरायण नी उजाणी..
साथे उडवा सोगंद लेईने, बेउ नी गोठडी बंधाणी..
कंठ कोरी ने कोटे लगावी(०२) किनिया बंध केहवाणी..
पतंग नी दोर थी प्रितडी पुरांणी...||01||

दल थी दोरीये साथ दीधो त्यां, मोज्युं आकास नी मांणी
ईरसा पेच मां ढील ना आपतां, (०२)काया दोर नी कपाणी..
पतंग नी दोर थी प्रितडी पुरांणी...||02||

साथ पतंग नो छुटतां भेळी, पडती थईन पटकाणीं
नोखाय थाता निरखी जात ने(०२)धणीं विना धुळ धाणी
पतंग नी दोर थी प्रितडी पुरांणी...||03||

पतंग एकलो भाळी पवन पण, तुरत लई जाय तांणी
लोक बधा ऐने मांड्या लुंटवा(०२)करुंण थई ती कहांणी
पतंग नी दोर थी प्रितडी पुरांणी...||04||

उजळां बेय छे ऐक बीजा थी, जोगी दान ल्यो जांणी..
ऐकलां ईतो साव अधुरा..(०२)राजा होय के रांणी...
पतंग नी दोर थी प्रितडी पुरांणी...||05||

17 - || धरम चारण धार ||

ढाळ: विरा तारे हिरा नो वेपार

धरम चारण धार , जे घर आयुं ले अवतार,
धिंगो एवो धरम चारण धार...टेक
धतंग मेली धुंणवाना , अलख नाद उचार जी..(02)
साधे हर नी सूरता मां (02) आतम नो एकतार
धिंगो एवो धरम चारण धार. ||01||

विसय थी रे वेगळो तुं , देखी ने पर दार जी(02)
दारुय ग्रहता देव ने गण्य(02) भोमी पर नो भार
धिंगो एवो धरम चारण धार. ||02||

भामण जात्युं जेमां भळीयुं, दिक्षा ले दरबार (02)
पुजे जेने प्रेम थी ओली (02) आजे वरण अढार
धिंगो एवो धरम चारण धार. ||03||

मागण मं था मां गणा, तारा मोह ने तुं मार जी (02)
आदम जात उपासवी ई(02) पाप छे पारा वार
धिंगो एवो धरम चारण धार. ||04||

जोगीदान के जाण साचुं, वेधु कर्य मां वार जी(02)
अंतर पट कर उजळा ई (02) सोनल वांणी सार
धिंगो एवो धरम चारण धार. ||05||

18 - || आई नी अकळांमण ||
छंद : सारसी

दोढेक लीटर पीये दारु.चिकन मुरगां चावता.
मंडाय पाछा मंच माथे गीत सोनल गावता.
देवीय कोटी वरण देखो जुवो कई दिश जाय छे.
ज्वाळा लगे छे जोगडा मन आतमो अकळाय छे..||01||

सोनल तणां आदेश नी आ देश ने कीम्मत नथी.
एनां जण्यां नेय अहम छोडी हालवा हीम्मत नथी.
कहेवाय चारण एक धारण दरश क्यां देखाय छे.?
जळवा लगेछे जोगडा मन आतमो अकळाय छे..||02||

धन देखतां सौ धोडता भल धरम नातो धुळमां.
सत धरम छंड्या पछी सोनल केम जनमे कुळ मां.?
आभे निरखती आई नुं पण मन घणुं मुंझाय छे.
जळवा लगे छे जोगडा मन आतमो अकळाय छे..||03||

ईरशा करी खुद आपणां जण पद पकड भूं पाड़ता
जनता वचाळे जायके दरीयाव दील जीम द्हाडता.
ई दोगला जण देख सोनल समसमे नीसहाय छे.
जळवा लगे छे जोगडा मन आतमो अकळाय छे..||04||

दीकरी लीये घण दायजे ने तोय दानव दोभता.
सरजुं भुल्यां संतान सारण सिनेमा जई शोभता.
अव तरण कारण आई ने को देह नव देखाय छे.
जळवा लगे छे जोगडा मन आतमो अकळाय छे..||05||

पण जो सेनल ने राजी करवी होय तो .....
उजळो घणों ईतिहास जेनो जुवो कां झांखो पड्यो.
दादो ईशर पण दान जोगी रगत आंसुं कां रड्यो.
चहु दीश चारण एक धारण रंग जो रेहलावशो.
सुरगे गयेली सोनबा ना रदय ने रीज्जावशो..||06||

खपीया घणां खुंखार जोद्धा भौम मां भळीया भड़ो.
ए वातडी वांचो विरो नीज आंन्त से नव आखडो.
पाडाय साड़ा तरण त्रोडी वरण ईक वद्धावशो.
सुरगे गयेली सोनबा ना रदय ने रिज्जावशो..||07||

अढळक जनोये एक थावा बहुं गायुं बापडे.
घर कान जोगीदान तो सनमांन साचुं सांपडे.
अभिमान कुड ईरशा तजी जो एक थई ने आवशो.
सुरगे गयेली सोनबा ना रदयने रिज्जावशो..||08||

19 - || मेहा सधू मुंझाय छे ||

चारण जगदंबा आई सोनबाई मां नो संदेश छे के चारण होय ई दारु न पिये दारु तो दैत्य पीये..जेनी मती दैत्य होय ई दारु पीये...तो प्रिय चारण बंधुओ शुं आपडी आईयो दारु पी शके खरी ??आई करणी जी ने घणां समय थी दारु ना रसीको ये माताजी ने दारु चडाववानुं सरुं करेल छे जे परंपरा नेकारणे लोको दारुने प्रसाद गणी ने चारणो जेवी देवताई जाती ने दारु ना रवाडे चडावी अधःपतन ना मार्गे वाळ्या छे..अमुक लोको पोतानो दारु बंध न थाय ते माटे ऐवो तर्क करे छे के माताजी दारु पिवतां हता..पण मित्रो विचारो तो खरा के गुजरात मां आजे पण चारणो ना घरमां दारु नुं नाम न लेवावुं जोईये तेवुं गुजरातनी तमाम चारण बेनु दीकरीयुं ईच्छे छे , तो करणीजी पण चोथी पेढीये गुजरात ना दीकरी छे. श्री करणीं मा ना पिता ना दादा भीमाजी किनीया धांगध्रा ना खोड गाम थी राजस्थान गया ते भीमाजी ना पुत्र नी पौत्री ऐटले के चोथी पेढीये आई करणी जेवी महान जगदंबा नो जन्म थयो जे चारणो ना उत्थान माटे जन्मी हती पण आजे तेमना प्रसाद ने नामे चारणो दारु धरी ने अधः पतन ने मार्गे जई रह्या छे..तो शुं आई ने आ गमतु हशे??? ना..मां ने ऐ नज गमे पण शुं थाय ..छोरु कसोरु थाय पण माता कुमाता केम बने ?? माटे ऐ मां मुंझाय छे...

|| मेहा सधू मुंझाय छे ||

छंद : सारसी

दारु पीवेनई देवियुं पण पापीया ओ पाय छे
दारु धरावे दैत्य त्यां देसांण पत दुभ्भाय छे
करणी मढे आ कुडी करणी ना थवानी थायछे
जाउं कीसे हुं जोगडा मेहा सधू मुंझाय छे || 01||

दीकरा उठी दारु धरे ई मा तणुं शुं मुल छे
पुत्तर नहि ई पाप पाक्या धीक्क वा मुख धुल छे
दाडो उठाड्यो दारुऐ ने खाज अणखज खाय छे
जाउं कीसे हुं जोगडा मेहा सधू मुंझाय छे ||02||

जे जोगणीं जम थी लडी केवि हशे करणीं कहो
ऐना जण्यां ना असुर थाशो रीत चारण मां रहो
पोते पिवा मदीराय पापी गीत जुठां गाय छे
जाउं कीसे हुं जोगडा मेहा सधू मुंझाय छे ||03||

20 - || राजबाई रंगे रमे ||
ढाळ:गरबी नो

माना चुड़ला मां चंदर चमकाय, भेळीयो आभे भमे
मळी हारे मां आवड महमाय, राजबाई रंगे रमे..टेक

माडी छोरु नी करवा ने साय, धमणें व्रेमंड धमे
तारा गण केमे गणींया न जाय, राजबाई रंगे रमे..01

अमे बोलावी ज्यारे पण बाई, त्राड दईन आव्यां तमे
भीड पडतां तुं सामे भळाय, राजबाई रंगे रमे..02

तोळा दरशन थी दारीद दळाय, नवे खंड चरणे नमे
तुंतो भुख्या नुं भाथुं भणाय, राजबाई रंगे रमे..03

माडी चडीया नी जीभे चितराय, जोगीदान भेळी जमे
पछी कोळे ई सोळे कळाय, राजबाई रंगे रमे..04

तुंतो वायु ना रुपे रे वाय, पार कोंण तोळो पमे
मारा कुळ नो तुं सुरज कळाय, राजबाई रंगे रमे..05

जेना नेंणा मां हुती नबळाय, ई भुप कैंक रेढा भमे
ई रात कोई त्यां केमे रोकाय, राजबाई रंगे रमे..06

21 - || बुटभवानी अष्टक ||
छंद:भुजंग प्रयात

नमौं कष्ट हर्ताय कल्यांण कारी, नमौं मात देवल्ल देथा दूलारी.
नमौं दोहीता मांड़वा ग्राम मानी, भजौ चारणी बूट मातृ भवानी...01

तुंही मात करणीं भगीनी न काची, सगी बेचरा नी बहन तुंज साची.
चुंवाळां वचाळे त्रवारुंय तानी, भजौ चारणी बूट मातृ भवानी...02

सती नो पती बाप देथो सवायो, जणीं थी दणीं गाम गामे गवायो.
नमौं अंश हिंगोळ बापल्ल बानी, भजौ चारणी बूट मातृ भवानी...03

सवत चौद ने वर्ष विते सताशी, पुरण ज्योत तुं जग्त अंबा प्रकाशी.
ग्रजे गंध्रवां गांन खारौड गानी, भजौ चारणी बूट मातृ भवानी...04

नमौं गाम अरणेंज वागे नीशांणो, जगत नी जणेंता तणुं रुप जांणो.
जती भुपती पुजता पर्स पानी, भजौ चारणी बूट मातृ भवानी...05

खरी खोळले ब्राह्मणां ने खीलावे, महा मान क्षत्रिय ने तुं मीलावे.
तुही वैष्णवा शुद्र नी स्हाय सानी, भजौ चारणी बूट मातृ भवानी...06

तवां आशरे मात जे जन्न आवे, प्रसी पांव ने मन्न वांछीत्त पावे.
हुवे ना कबुं भक्त ने कोउं हानी, भजौ चारणी बूट मातृ भवानी...07

रखौं हाथ चडीयाह ने शीस चंडी, असां आशिसां आप मातुं अखंडी.
रहौ जोगणीं जोगीदानम जुबानी, भजौ चारणी बूट मातृ भवानी...08

22 - || सोनल प्रभाती ||
ढाळ: अखंड रोजी हरी ना हाथ मां

हेजी एवां
गगन वलोंणां तोळां गाजीयां, नेतरां तांणें ज्यां नेजाळी
सामे रे उभेली आई सोनबा, आवड भेळी रे आंटाळी........टेक
घमर रवायो मांड्यो घुमवा, नवग्रह गोळी मां नीयाळी
वेग थी फुंकायो तेदी वावडो ने, गरज्यां डुंगरा ने गाळी..
गगन वलोणां.....01

तेज रे फुवारा समीं त्रांबडी, तोर थी लीये हाथ ताळी
मुखडे मलकती ए मावडी, मांखण तावे ममताळी
गगन वलोणां.....02

जग नी जनेता तुंतो जोगणी, भजीयें विह रे भुजाळी
आयल हमीर घरे उशरी आखी नात्य अंज वाळी
गगन वलोणां.....03

सोनल प्रभाती गावे सारणो, मढडा वाळी मरमाळी
चडीयो जपे रे तुंने चारणी, जोगीदान के जोराळी..
गगन वलोणां.....04

जोगीदानभाई गढवी मो - नं. 9898360102

23 - || आवाहन स्तोत्र ||

दोहा

सुभ संपत आयु सगत.यस स्वास्थय अरु आन
जपत स्तोत्र यह जोगडा.प्रम पद करत प्रदान.||01||

सर्व परि सगती स्मरण.अखिलेस्वरि अखंड
जग्न पुकारत जोगडो.प्रकटो मात प्रचंड.||02||

छंद : शैल भुजंग

ॐ सती साधवी भव प्रीया तुं भवानी.जया जोगणी तुं परा शूल्ल पानी.
कवच नाम तारु कलीकाल कामा.सतक नाम जापे द्रसूं मात सामा
भवां खेचरी भूचरी बोल खम्मा. मया रक्ष तुं रक्ष तुं रक्ष रम्मा.
हवे दर्श दूर्गा दीयो मात दानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||03||

नमो आर्य पिन्नाक धारीय आध्या.नमो सुंदरी सांम्भवी सर्व साध्या.
नमो बुद्धी हुंकार ने चित्त रूपा. नमो चैतना सत्य आनंद् स्वरुपा.
अनेकाय वर्णा असीम् विक्रमा तूं.नमो वन्न दुर्गा महाबल्य मा तुं.
अनन्ता नतूं मां अमुं थी अजानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||04||

नमो मोचनी भव त्रिनेत्रीय तन्ना.नमो चंद्र घंटा महा तप्प मन्ना.
नतो जांणतो मात त्यारे नीहाळी. प्रखीती तने साव पासे पासे प्रचाळी.
करुं पस्च तापो हवे दर्श आपो. प्रजाळोय पापो छुडावोय शापो.
बकुं बाळ तोळो मया ऐक बानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||05||

नमो चित्त चित्राय भावीनी भव्या. प्रियं रत्न भाव्या अपर्णा अभव्या.
मुनी याज्ञ वल्कल्ल मार्तंड मानी. जपी जोगीदाने वसीस्ठे वखानी
नमो सर्व शास्त्रो मयीं मात सत्या.परीधान पट्टांम्बरी मात प्रत्या
महा सर्व मंत्रो मयी जोग जानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||06||

नमो दक्ष कन्या सती तुं सुवर्णा.नमो दक्ष यज्ञम विनाशीनी वर्णा.
नमो अज्ञी ज्वाला क्रुरा काल रात्री. दयालीय नित्या क्रीया सिद्धी दात्री.
नमो भद्रकाली करालीय कात्या. नमो घोर रूपा असूरांण घात्या.
परा पाटला अस्त्र सस्त्राय पानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||07||

मधू कैटभां ध्वंस कारन कूमारी. महीस मर्दनी विश्व कल्याण कारी.
तुंही चंड मुंडन विनाशीनी चंडी. नमो शुंम्भ नैशुंम्भ हंन्ता हखंडी.
नमो राज लक्ष्मीय नारायणीं तूं. महोद्री जगत्त सर्व तत्वम जणी तूं.
नमो मुक्त केशी मूखी रौद्र मानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||08||

नथी जांणतो मंत्र के तंत्र माता. विधी यंत्र नी हुं न जांणुं विधाता.
नथी जांणतो ध्यान के ग्यान धारा. नथी जांणतो अर्थ हुं वेद चारा.
प्रणायम्न जांणुं हुं अग्यान योगी. जपुं नाम तारुं जुंवो दान जोगी
न मुद्रा न यज्ञो न स्लोको सयानी.प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||09||

कलम सिद्व ज्ञाना सवीत्रीय शेषी. परम ईश्वरी विष्णुं माया तपेशी.
पुरुषा कृती वैष्णवी ब्रह्म वाणी. त्रिपुर मालीनी शैव तुल्या त्रीसाणी.
दता धर्म अर्था अरू काम मुक्ती. अनेकास्त्र धारी जलोद्रीय जुक्ती.
महा मोक्ष दाता जूगो पार जानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||10||

कर्यो आभमां मात ऐवो कडाको.धरा तल वितल मां थयो मा धडाको.
सुंन्यो निज्ज काने जुवो जोगीदाने.अहो आत्म तत्वं प्रकट्टी प्रमाने.
दीयां दर्शनो शीव तत्वं समाने.अहा मातृ आयन्न रखुं पद् रमाने.
द्रशी सर्व तत्वेय ऐको समानी.प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||11||

दोहा

अर्पण जग आदेश्वरी. उकल्युं रहस्य अजान
जे दरशन भये जोगडा. पाठत पुन्य प्रमान.||12||

24 - ||सोनल सांणोर||

महा शक्ति सिरां मोड तुं मोड मा, जोडमां जुनांणे ज्योत जगती
मात मढडा महा सारणां मेवती, सेवती सत्य नो धरम सगती
खुदाने मात तुं खेलवे खोळले, भाळीयुं रूप वैराट भारी
जाप चडीयो जीभे जपे ज्यां जोगडो, मात सोनल सूंणे अर्ज मारी.||01||

सरज तोळी अमुं गावता सारणो, गरज कोई तणीं कमण गणींये
तरज ज्यां विंझणों वाय त्रीलोक त्यां, भेद मारु परज कांउं भणीयें
महा सरसती नुं रुप तुं मावडी, नावडी उबारण मात न्यारी
जाप चडीयो जीभे जपे ज्यां जोगडो, मात सोनल सूंणे अर्ज मारी.||02||

जमाडो हाथ थी जोगमाया जदे, तदे महा लक्ष्मी रुप तमणुं
जनम तें जोगणीं धर्यो अम जात मां, अहो हो केवडूं भाग्य अमणुं
दरस तोळां सदा नयण ने दिसतां, विसो हथ आयखुं जाउं वारी
जाप चडीयो जीभे जपे ज्यां जोगडो, मात सोनल सूंणे अर्ज मारी.||03||

जांम ने मुखो मुख भण्युं तें जोगणी, रोगणी नथी मुज नात्य रांकी
नेहडे नवां लख डणंकती डोसीयुं, ओछीयुं जगत नव लीयो आंकी
दैत दारु तणों डामवा देवतुं, खीजांणी खुब ने थयल खारी
जाप चडीयो जीभे जपे ज्यां जोगडो, मात सोनल सूंणे अर्ज मारी.||04||

ममत मां नाखती मात म्हादेव ने, ध्यांन कैलास पर तुंज धरवे
महा काली बणीं जुद्ध मां मंडती, हय दळां कटक ने तुंज हरवे
अजा ना मारतल उपरे अंबका, त्रबकती भाळीयुं तेग तारी
जाप चडीयो जीभे जपे ज्यां जोगडो, मात सोनल सूंणे अर्ज मारी.||05||

25 - || प्रेम सतक ||

जूग जुना ई जोगडा, तांतण बांध्या तेम
पोरह वाळान पादरे, पागल करे ई प्रेम.01

रांणा सांणा मे रीयो, कूंवर्य काळज कोर
दलना बांधेल दोर, जीव्या मुवा ना जोगडा.02

मानो पदमा मांगडो, जेने, हैये साचुं हेत
प्रित मां थई ग्यो प्रेत, जाय गते नई जोगडा.03

प्रेम रख्यो वन पांदडे, म्हेल कनक ना मोई
राधव खातर रोई, जनक तनुजा जोगडा.04

जीव सटोसट जुजती, यम नी हारेय ऐह
सावितरीय सुनेह, जीवता करतो जोगडा.05

कोमळ जेनां काळजा,नित प्रिति नां नेम
जम पांहे थी जोगडा, पाछा लीयावे प्रेम.06
मनमां कायम मोहनो, आंख भींजावण अंग
राधा ने लाखो रंग, जोगण कई दउं जोगडा.07

पागल थई ने प्रेममां, मुकीयुं खोळे माथ
सुलोचना वर साथ, जळती दीठी जोगडा.08

प्रेम न जेंणे पारख्यो,ऐनुं, जीवन दोजख जाय
जळ मां रई ने जोगडा,जांणे, हैयां तरस्यां हाय.09

रदय रखापत रंगीयुं, काळज वांचे कोन
सरगे भेळीय सोन, जाय चिता मां जोगडा.10

पर्वत तोड्यो प्रेममां, धधकी पय नी धार
आखर भोकी आर, जो घट प्रेमे जोगडा.11

प्रेम निभाव्यो पिंगळा, जीवडो प्रिते जाय
जोह मजाके जोगडा, हैडुंय फाटेल हाय.12

आकरसाता अंगमां, ऐतो, वालाय ठाला वेम
जोया वण पण जोगडा, प्रांण दीये ईज प्रेम.13

मांणह नी शुं मांडीये, जेने, वातेन वाते वेम
जोयल साचो जोगडा, पंख वाळा मांय प्रेम.14

सारस विण नी सारसी, जूरे नहीं दे जान
जीवे न नोखी जोगडा, समजो बात सुजान.15

सारस वण नी सारसी, माथा फोड्य मरे
प्रितम वींण परे, जीवे कदी नई जोगडा.16
प्रेम मसंदर प्रांणथी, धर्यो न साचो ध्रम्म
भांगीन गोरख भ्रम्म, जगवी लई ग्यो जोगडा.17
(मछंदर ने मोह हतो..प्रेम नई..नहीतर जो प्रेम होत तो गोरख तेने लई जई न सकत..मोह तुटी सके..प्रेम नई....)

खांभी जोतां खीमरा, हैये छुटेल हाय
लोडण हैये लाय, जपटी जाळुं जोगडा.18

वेलनटानी वातथी, खिमरो रोयेल खूब
मरियो हुं मेहबूब, जांण्यो ना किं जोगडा.19

दलडा ने भावे दिधा , तें, रांणां कुंवर ने रंग
ऐथी अंगो अंग, मारु, जोतां फरक्युं जोगडा.20

खांभी थई ग्यो खीमरो, रांणो थई ग्यो राख
नजर्युं ज्यां तुं नाख, जीवतां थाता जोगडा.21

मर्यो मर्यो नई मांगडो, एवि,पदमा केरी प्रीत
रांणा कुंवर नी रीत, जरी न विहरो जोगडा.22

पदमा पांणी पांपणे, आंणल विरहण आग
नाग मती ने नाग, जाय भुल्यां से जोगडा.23

प्रिती केरो पारख्यो, सोंहणीये जे सार
मरियो प्रित मेहार, जेलम नदीये जोगडा.24

हीर सीता पण हेतमा, रांझा प्रितम राम
काळज नोतो काम, ज्योत प्रितु नी जोगडा.25

पामो प्रित पुरांण मां, भारत नोखी भात
वेलेन्टाई नी वात, जाखी दिससे जोगडा.26

व्योम समोय विसाळ ई, कहो लखुं हुं केम
जडे न शबदो जोगडा, प्रेम कह्यो बस प्रेम.27
(जोगीदान गढवी (चडीया) कृत `प्रेम पुरांण` सतक (१०० दोहा मांथी)...)

26 - गगन गरबो

सारसी

वरळाक छम थई विजळी, नवरात रमवा नीसरी
कडेडाट करती काटक्या ने वात आहो वीसरी
मंडाण भेंचक करत मेघो सकळ भोमे साजीयो
वादळ बर्णी विस्वेसरी नो गगन गरबो गाजीयो
करता करम जे लोक काळा चेन चाळा चोकमा
बे सरम लंपट बेसतां जे मात दरसण मोक मा
ए पाप ने पडकार करतो झीके सरपर झाझीयो
वादळ बर्णी विस्वेसरी नो गगन गरबो गाजीयो
रमझोळ झांझर तणां रणके दोम डणके देवीयां
करमाळ धर कीरपांण कंकण सकळ चारण सेवीयां
चंडी अगन झर नेंण चडिया भूप अहरो भाजीयो
वादळ बर्णी विस्वेसरी नो गगन गरबो गाजीयो
नीकळी जुवो नवलाख नेजे चूडा खड खड चारणी
हुकळी करे अटहास हरखे धरम सत नो धारणी
रमत्युं करे नवरात रंगे मोगलां सम माजीयो
वादळ बर्णी विस्वेसरी नो गगन गरबो गाजीयो
करमांय कंकण खडग खप्पर जबर रमती जोगणी
दैतांण डमवा जपट जमवा भमे भ्रेकड भोगणी
जळळाट जोगीदान जननी ,तरत यादुं ताजीयो
वादळ बर्णी विस्वेसरी नो गगन गरबो गाजीयो

27 - भजन
राग: तोडी

शिव ने ऐज शीवा समजावे, (02)
भेद अगम पद भांख भवानी, दीव्य परा दिखलावे...
शिव ने ऐज शीवा समजावे.....टेक

तत्व रजस तम ने सत सगती, आतम थी उपजावे
आज रमा अविनास अखंडी, बहुधा रुप बतावे
शिव ने ऐज शीवा समजावे.....01

धुन मां ध्यान धरी तुं धुरजट, अलख कही ओळखावे
गणगण ती हुं सात गगन मां, गीत ई वेदो गावे
शिव ने ऐज शीवा समजावे.....02

तुं पद नो ज्यां तार तुटे ने , हूं पद ना हर खावे
आतम त्यां ॐ कार उचारी, परत परम पद पावे
शिव ने ऐज शीवा समजावे.....03

कलम बिराजी कांकण वाळी, चडीया सुं चितरावे
जीव शीव जोगी दान जनम म्रत, सास्वत थी सरखावे
शिव ने ऐज शीवा समजावे.....04

28 - || सोनल मां नो भाव ||

राग : माताजी कहे छे बिये मारो मावो

दोहो

आयल तें अजवाळीयुं, जगमां अमणी जात
जोगण सोनल जोगडा, मढडे जनमी मात.

भाव

ऐवी मढडे पधारी तुं ममताळी रे..
जगदंबा सोनल जागती रे..
माडी भव दख भागे तमने भाळी रे..
लाखेंणी अंबा लागती रे...टेक
हरख्या हमीर जेदी पारणे तुं पोढी रे..
ओल्या नवे ग्रहो ओढणला मां ओढी रे..
त्रीलोकी माया तागती रे.....ऐवी मढडे पधारी.....||01||
छोरुं रे गर्णी ने कीधा समाजे सुधारा रे...
एवा भुंडा करम केरा बधा भारा रे......
माताजी पाछा मागती रे.....ऐवी मढडे पधारी.....||02||
दारु रे ग्रही ने जेंणे दलडां दुभाव्यां रे..
एने तेने तेल नी कडा मां जमडांये ताव्या रे
लायुं रे ऐने लागती रे......ऐवी मढडे पधारी .....||03||
देख्युं ना दर्णी मां कोये ऐवुं जोयुं आजे रे...
तारा गळा मां हजारो सावज गाजे रे ...
व्योमे रे पेंजण वागती रे..ऐवी मढडे पधारी ......||04||
खारा रे खेतर मां तें फुलडां खीलाव्या रे...
जेने जोगीदाने हैया मां रे जगाव्यां रे.....
बाई तूं मोटी बागती रे.......ऐवी मढडे पधारी ...||05||

29 - || सोनल गई सिघार ||

गमियो खुब गमारने, दारु तणों दीदार
जे दुख हारे जोगडा, सोनल गई सिधार.१
कर्यो न नाते कोयदी, ऐक वखत ईकरार
जगसे अबतो जोगडा, सोनल गई सिधार.२

कर्या हता बउ कोडथी ,ऐक थवा उपचार
जरी न समज्या जोगडा, सोनल गई सिधार.३
कान धरे ई केमनी , परमेहरी पुकार
जिवे न जांणीं जोगडा,सोनल गई सिघार.४
नफट बनेली नात नो, विगते करी विचार
जीव बाळी ने जोगडा, सोनल गई सिघार.५
अति हरख थी आईती, चारण सुंणी चीतार
जुवो ई रोती जोगडा, सोनल गई सिधार.६
अंगत हित सुं आखडे, भरी अहम घट भार.
जोई दुभाती जोगडा, सोनल गई सिधार.७
खुद जाण्यु नाही खलक, ऊंघल रिया अपार
जगवे ऐवी जोगडा, सोनल गई सिधार.८
अती विचारी आखरे, बा ई पडी बिमार
जिवन तजी ने जोगडा,सोनल गई सिधार.९
आप्यो जे आदेशथी, सीस्या दौलत सार
जिवे रदय मां जोगडा, सोनल गई सिधार.१०
आंखडीये आंसु तणी, धधकी रहेल धार
जणवुं कोने जोगडा, सोनल गई सिधार. ११

30 - || देव डाढाळी ||

ढाळ: चारणी परज, रावळी शैली

नमीयें नव लाख नेजाळी..,भेर्युं कर देव भालाळी..दरशन दे देव डाढाळी...टेक
चौद लोके एक चुडलो चमके,भांण नो थातो भास
हाथ कांकण एक होय हेमाळे, रंग खेलण तुं रास
हाली आव मात हेताळी..गरजावो डुगरा गाळी रे, खमकारा कर्य खेधाळी....०१

हाथ ना कीधा होय माडीतो.जोगणीं एने जाळ
खोळले ले ने तुं मात खंखेरी, विपदा पाछी वाळ
भाले जेम चकली भाळी, समदर दे माग सेढाळी रे,जडबां दैत चीर जोराळी...०२

मलक आखा नी ममता मेळी,भ्रमणां पाडे भांत
जोग दीपावण जोगणी जागो,अमे तमाणी आंत
ओवो अडेडाटओखाळी, वेगूं कर विह भूजाळी रे, भेळी रेने मात भेटाळी...०३

आई तारो छे अहागळो अमने,मोगल वात्युं मान
वार्य करो विस वंभरी वाट्युं ,जोवुं हुं जोगी दान,
चडीया नी मात चूडाळी ,त्रिभुवण गुंजवो ताळी रे , खडेड्यो आभ ले खाळी...०४

अवनवा समाचार, चारणी साहित्य, रचनाओ, ई-बुक, रोजगार समाचार वगेरे माटे अवश्य ऐकवार चारणी साहित्य (www.charanisahity.in) ब्लॉग नी मुलाक़ात ल्यो.

31 - चारण निति सतक ना दोहरा

प्रेम भावे थी पिरहियुं, उतरे कोठे अन्न
तो
मांणह केरुंय मन्न, जुमवा मांडे जोगडा
(जो घरमां शांति मय वातावरण ईच्छता होव तो स्त्रीयोये घरना तमाम सभ्यो ने खुब प्रेम भावथी भोजन पीरही ने जमाडवुं, जेनाथी बधानुं मन झुमी उठसे, आ निति बघे लागु पडे छे)

चूको कदी ना चारणा, वांणी उपर विवेक
आप बळुकी एक, जीभ अमांणी जोगडा
(चारणोये क्यारेय पोतानी वांणी पर थी संयम न चुकी ने विवेक पुर्ण वातज करवी, कारण के चारण नी जीभ बहु बळवान होय छे,अने अ विवेकी वांणी अणधार्या परिणामो ने नोतरनार होय छे)

कदिय न ककळाववी, आंतरडी ने ऐम
राखी सौ पर रेम, जीवन सुधारो जोगडा
(क्यारेय कोईनी आंतरडी न ककळाववी के न आपडी आंतरडी ककळवा देवी, कारण के जो कोकनी आंतरडी ककळे तो आपणी बुराई बेहे, ने जो आपडी चारण नी आंतरडी ककळे तो सामेना नो वंश वेलो मुळथी उखड़ी जाय, माटे सौ पर दयाभाव राखी ने चारणे देव कोटीनुं जीवन व्यतित करवुं)

ठारो काळज ठाकरा, तो, सोनल रेसे साथ
हजार ऐना हाथ,ईतो, जाय ओवारी जोगडा
(कोक ना काळजां ठारस्यो तो मा सोनबाई सदाय साथे रहेसे, अने एटलुंज नई ए एटली राजी थसे के एना हजारो हाथ थी तमारा ओवारणा लेशे)

आखुं दळ हो आंधळुं, तो एमा, कांणो राजा कोक
मळसे एवाय मोक, पण, जरी न चळवुं जोगडा
(क्यारेक एवा मोका पण हसे के ज्यारे आखु कटक आंधळु हसे पण गोतवा जतां एनो राजाय कांणो मळे, कोय वाते समजता न होय तेवुं बने तो पण चारणे चलीत थई ने पाता पणुं न गुमाववु)

आपि दियो अंबाडियुं,तोय, लिये छांणां मा लोभ
ई
मोटा जण ने मोभ, जरी न समाजों जोगडा
(जेने हाथी नी अंबाडीये बेसाडो ए नुं ध्यान नीचे छांणां मां होय तो एने मोभ एटले के दोरीयां अने वळा नो आधार बनी ऐ छत थासे एवुं न समजवुं)

कूळ हिणां ने जै करो, अछोय वानां आप
तोय
तपसे खोटो ताप, जात न मेले जोगडा
(अ योग्य ने तमें असोवांना करो तोय ई एना कुळ ना लक्षणे खोटो ताप एटले के तामसी पणां मा आवसे एना जाती लक्षण जळक्या विना नई रहे)

अण जांण्ये जळ उतरवुं, भार भरोहो भाम
कर्या जेवां नई काम, जगमां कोदण जोगडा
(अजाण्यां पांणी मां उतरवुं तथा भाम ना भरोंहा पर भार भार मुकवो आ बंन्ने काम कर्या जेवां नई, अपवाद रुप ने बाद करतां)

कुंडा भरो न कोयदी, रंग तणां सुंण राव
नके
उठीन के नई आव, जुकवा वाळाय जोगडा
(रंग ना छांटणा होय कुंडा न भराय एटले के जेनी साथे जे डीस्टन्स मेन्टेन करवुं पडतुं होय ई करवुंज पडे नहीतर जे माथु नमावी जुकता होय ते पछी आवो केहवा उभा थवानी पण तस्ती न लीये अर्थात मान जळवावुं मुस्केल थाय)

पेट न गणींये पारकुं, अधीक न करवी आस
जांणो समतळ जोगडा , अल्प जमण उपवास
(अनाज पारकुं होय पण पेट तो पोतानुंज होय छे ने, माटे अधीक नी आसा न करवी,कारण के अल्प आहार ए पण उपवास ना समोवड छे)

32 - || महामाया स्तोत्र ||

छंद : भूजंग प्रयात

तुंही हे जणेता प्रणेता प्ररब्धा, तुंही जीभ भाखे सरा बोळ शब्धा
तुंही तुं निभावे मया बाळ नाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||01||

तुंही विष्णु पुषा भगं विवस्वानं, तुंही मित्र पुर्जन वरुण् अंशुमानं
तुंही अर्यमा ईन्द्र त्वस्ठाय धाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||02||

तुंही ब्रह्म रूपी भवां सिद्ध भाळी, तुंही सत्य कर्मा सगत्तीय साळी
तुंही द्वा दसां सुर्य नी तेज दाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||03||

तुंही मात तातम् भगीनीय भ्रातम् तुंही सर्व संबंध हो जूग्ग सातम्
तुंही हेत वाळी नको तोड्य नाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||04||

तुंही काल रुपां परे रात काळी, तुंही प्रोढ देती धरा ने उजाळी.
तुंही तुं बडी बोलती ध्रम्म बाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||05||

तुंही हेमतां रैवत्तां वास वंध्या, तुंही हर प्रहर हर समर सुब्ह संध्या
तुंही कामखा मात कल्यांण काता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||06||
तुंही मां दयाळी सदा रेम राखे, तुंही संकटो बाळ ना केम साखे
तुंही जाळवे ताळवे जीव जाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||07||

तुंही दर्श देती नवेरात न्याळी, तुंही निसरे कांबळी ओढ्य काळी
तुंही सांभळे सारणां गीत गाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||08||

तुंही राख चडीयाह ने चर्ण राजी, तुंही क्रोघ त्याजी जीतावेय बाजी
तुंही तुं वडी वंश नी मां विधाता ,महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||09||

तुंही चार वेदम पुराणम प्रमांणी, तुंही सांख्य मे शास्त्र मे तुं समाणी
तुंही चित्र गुप्तां खतावंत खाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||10||

तुंही मोगलम् आवडम् मात काली,तुंही हिंगळा रूप मे आव्य हाली |
तुंही देवलम् दिव्य तेजोय दाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||11||

तुंही तांडवा नृत्य मे शीव तोळे, तुंही रूद्र ना रूप मे दक्ष रोळे,
तुंही मां सती सग्गती सर्व ग्याता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||12||

तूंही चक्र विष्णौ तणे हत्थ छुट्टे, तूंही टूक्क बावन्न मे मात तुट्टे
तुंही सर्व शक्ति पीठे प्रांण पाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||13||

तुंही हिर्ण कस्यंम्प वाराह वेडे, तूंही कच्छ रूपां उभी दैत केडे
तूंही रत्त्त बीजा भ्रखे रग्त्त राता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||14||

तुंही मा मधु कैटभां माग मंडी, तुंही ब्रह्म वारे चडी ब्रम्ह चंडी
तुंही हय ग्रीवां ग्यान मे हो हयाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||15||

तूंही दोउं वन्ना तुंही दोउ वारी, तुंही चार विप्रम् मरां ने मूरारी
तूंही जोगी दानां नवे लक्ख नाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||16||
तुंही अफ्फरां बोल आशिस आपे, तुंही कफ्फरा काळ ने मात कापे
तुंही नफ्फरां पें रखे नेंण राता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||17||

तुंही सर्सती लक्खमी चौद लोके, तुंही मात काली मया रक्ष मोके
तुंही नाम रां गंधवां गीत गाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||18||

तुंही सोवतां मा प्रथी जाय पल्ले, तुंही से चतु दस्स ब्रहमांड चल्ले
तुंही स्वास लेता लखो कल्पजाता,महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||19||

तुंही रुप साकार आकार सगती, तुंही तुं निराकार ने पार पगती
तुंही दुर दुर्रे समिपेय साता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||20||

तुंही द्रग्ग देखीं भुजा लक्ख भाळी,तुंही स्वेत पद्मा विधु विक्कराळी
तुंही तुं समरतां थीरां चित्त थाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||21||
तुंही नाम से सांकळा बंध छुट्टे, तुंही सेवतां ताप त्रेय विध्ध तुट्टे
तुंही पर्सता वो सदा मोक्ष पाता,महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||22||
तुंही सुर्य कोटी समा तेज तप्पे, तुंही तुं जीभे जोगडो नीत्य जप्पे
तुंही सर्व कल्यांण नी हे किराता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||23||

तुंही शब्द मे ना कबुं मात सामे, तुंही तुं पवितां चितां नित्त पामे
तुंही पुंर्ण किन्ना त्रिसन्नाय ताता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||24||

तुंही से न मागुं मया खिन्न माया, तुंही जोगणी जांणती दक्ख जाया
तुंही बाळ हीत्ते जगत्ते हयाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||25||

तुंही कन्न कन्ने तुंही अन्न धन्ने, तुंही तुं विचरती जगे जन्न जन्ने
तुंही मन्न मन्ने प्रसन्ने प्रदाता, महा आध्य शक्ती महंम्माय माता.||26||

कुळ दैवी कल्यांण कर, सनमुख रे कर स्हाय |
जा पद वंदत जोगडो, मात जयति महंम्माय ||27||

नित जागी जो नरणमां, स्तुती यह करै सवार |
जरुर करत मां जोगडा, परा शकत भव पार ||28||

(15 मी कडी मां बे वनचर (वराह ,नरसिंह)/बे जळचर(मच्छ ,कच्छ)/चार विप्र (वामन,परसुराम,/मरा= राम/मुरारी= कृष्ण..ऐम दसावतार ने वंदन छे तथा जोगीदान नी नात अने नाता मां नव लाख ऐटले ऐ तमाम चारण आई ने वंदन छे)

33 - ‖ दैव भौम द्वारीका ‖

छंद: चतुस्पदी नाराच

प्रकट्ट चारणाय घट्ट वट्ट हंन्त वेरीयां
क्रकट्ट कौर वांण पे झपट्ट दंत झेरीयां
लगत्त है भगत्त कोय फूल की फुहारीका
जपंत जोगीदान मान दैव भौम द्वारीका
बजंत ढोल त्रंबकाय झांझ ताल झुम्मरी
करत्त पुकार कोलवो घुमत्त नाथ घुम्मरी
प्रमेशराय ईशराय पार जग्त पारीका
जपंत जोगीदान मान दैव भौम द्वारीका
पुगंत एक पल्ल मे सुणंत नाद सारीया
दूसासनाय दंड दैंण जंग खेत्र जारीया
रखंत ठाठ ठाकरो नवैय खंड नारीका
जपंत जोगीदान मान दैव भौम द्वारीका
जगत्त नाथ साथ आठ रांणीयां जीते रही
कलीन्दि लक्ष्मणाय मित्र विंद सत्या भद्रही
ॠखंम्मणीय सत्यभाम जामवंती ज्वारीका
जपंत जोगीदान मान दैव भौम द्वारीका
अयो श्रीदाम आंगणेय मित्र द्रव्य मांगणे
पितांबरम पटांगणे त्रुठेल प्रित्त त्रांगण
भरेल ढाहरां सुवण ईडर गढां उतारीका
जपंत जोगीदान मान दैव भौम द्वारीका
जहर मिरांय जादवा लहर अलक्ख लादवा
मिळ्यो प्रकट्ट माधवा ब्रसेल रींछ बाधवा
जाम वंत को प्रसंत राम वंत ईहारीका
जपंत जोगीदान मान दैव भौम द्वारीका

34 - || खलक पती ना खेल ||
ढाळ: पाये तने विपळी लागु

खलक पत खेल ई खेले, मालीक ना कोय ने मेले
झाझी कोंण झीक आ झेले, बापलीया तुं आव ने बेले...टेक

खोळीया केरा खोपचा मां क्यां, पुरीया नाथे प्रांण
सदीयुं थी कैक साधको सोधे, जरी ना थाती जांण
सांपडतुं कांय ना छेले, खलक पत खेल ई खेले....०१

देवकी ने तें दूभवा दीधी, कीया गुना मां कांन
जनम्यो जे कूंख जादवा त्यांथी, भागीयो कां भगवान
जणेता ने मूकीयुं जेले, खलक पत खेल शुं खेले...०२

आश लई तारे आंगणे आव्यो , ई जादवा तुंनेय जांण
कीधुं नई कां कानजी पेलुं, सुदामा नुं सनमान
दखीयारो आथडे डेले, खलक वर खेल शुं खेले...०३
पुछीयुं छे बहुं प्रेम थी तुंने , काळजे वाला कांन
मरवा टांणेय माधवा तुंने , जोउं हुं जोगीदान
विंटाळीन वाल्यपुं वेले, खल्लक पत खेल ई खेले...०४

35 - कवित

चडीया चडाई चांप देवता को ब्रहम देव
शीव को धनुस विष्णुं बांण से वरायो है
भयो जुद्ध भारी बाँण बांण पे ब्रसाये बेउ
हर को ना हरी हरी हर ना हरायो है
आग दसदीसौ लाग भयी जग भाग भाग
त्राही त्राही नाद सबै देवता डरायो है
चारण चतूरी जग सूरी देखो जोगीदान
कंथ सैलजा को समाधान जो करायो है

ज्यारे ब्रहमाजीये ने देवताओ ने कान भंभेरणी करी ने विवाद करावी विष्णुं अने शिव मां कोनुं धनुस्य बळवान एवो विवाद करावी बंन्ने वच्चे युद्ध कराव्युं , जे युद्ध थी दुनिया नो नाश थवो तैयारी मां हतो त्यां चारणो ये आवी शिव ने स्तुती करी मनावी समाधान करावेयुं(वाल्मीकी रामायण) (भायु भायुं वच्चे लडाई न थवादेवी ए चारणो नो जुनो धर्म छे,तो पोते तो भायु भायुं वच्चे केम लडी सके ?)

36 - || क्यारे नाव्यो कान ||

बेली आज बचावजे, ऐवुं, गजनुं सुंणतां गान.
जूड विदारण जोगडा,हुं, क्यारे नाव्यो कान.१

अजामिल उचारीयो,भले, मोह पुतर नो मान.
तोय
जीव उधारक जोगडा, हुं, क्यारे नाव्यो कान.२

ईशर केता आर्यगण, खाविंद केता खान.
जुजव रुपे जोगडा, हुं, क्यारे नाव्यो कान.३

सभा वचाळे सरमथी,पंचाळी दत प्रान.
एना
जादव सादे जोगडा, हुं, क्यारे नाव्यो कान.४

भेंतर भिजवे भावथी, विदुर भलो विदवान.
जमवा भाजी जोगडा,हुं, क्यारे नाव्यो कान.५

किडीयुं ना रुपे करी, मारी, प्रेहलादे पेहचान.
जळता थंभे जोगडा, हुं, क्यारे नाव्यो कान.६

अरजण हारे युद्ध मां, जोखम नाखी जान.
जंग जीतावा जोगडा,हुं, क्यारे नाव्यो कान.७

मामेरामां मलपतो,मने, भाळ्यो नरसी भान.
जुवो जुनांणे जोगडा, हुं, क्यारे नाव्यो कान.८

भगतो थ्याता भांभरा,ओली, हुंडी कज हैरान.
जगवे म्हेतो जोगडा , हुं, क्यारे नाव्यो कान.९

मिरां पुकारे माघवा, हवे, रांणो पजवे रान.
जहर पिवा ने जोगडा, हुं, क्यारे नाव्यो कान.१०

सांया नी सनमुख सदा, ईशरा हंदी आन.
जग जांणे छे जोगडा, हुं, क्यारे नाव्यो कान.११

के मंदीर फर कोलवो, भगी पांव भगवान.
जो द्वारापुर जोगडा, हुं, क्यारे नाव्यो कान.१२

पकडे मुजने प्रेमथी,ओल्यो,बोडांणो पण बान.
ज्यां गाडा मां जोगडा, हुं, क्यारे नाव्यो कान.१३

बचलां हो बिल्ली तणां, टिहुं टिटोडी तान.
जपट करंतो जोगडा, हुं, क्यारे नाव्यो कान.१४

कर्या करोडो कांम मे, तोय,पडी नही पेहचान.
जो घट भेंतर जोगडा, हुं, क्यारे नाव्यो कान.१५

वेंकटेश केहता वळी,जगन नाथ पण जान.
जुजवा थांने जोगडा, क्यारे नाव्यो कान.१६

दीये साद ज्यां देवकी, वसु देव सत वान.
जेल जनमवा जोगडा, हुं, क्यारे नाव्यो कान.१७

त्रेता मां आप्युं तठे, जे, वाली ने वरदान.
जाड निचे हुं जोगडा, क्यारे नाव्यो कान.१८

37 - || गोकुळ आखुं गेल मां ||
ढाळ: नंदरांणी तारां मागणां रे

आज वावडो गुलाबी रंगे वायो रे गोकुळ आखुं गेल मां रे
ओल्या मोरलाये सोर रे मचायो रे ढुंगे रे रमी ढेल मां रे ..टेक
काळी हती कोटडी ने, अंधाराय काळां रे,,,
त्यारे देवकीये दीधेलां अंजवाळां रे , जादव रुपे जेल मां रे,,,,
जग तार नारा मारा, जादव जोराळा रे
तारा व्हालां रे बेठा छे थई ने वेरी रे ,हे मथुरा केरा म्हेल मां के,,,,
गोकुळ पधार्या हरी, गीतडां गवांणां रे ,
नंद ने जसोदा राहडा नीहाळे रे,, राधाये रंग रेल मां रे ,,,
बावरी बणेली तेदी , व्रज केरी बाळा,
ओली , गायुं रे उभीती तोडावी ने गाळा रे , वनरायुं झुले वेल मां रे,,,
शिवजी पधार्या जोवा, शांमळो छोगाळो रे,
ऐंणे , आंगणीये अलख जगाव्या रे, टोकरीयाळी टेल मां रे,,,,
नीर जमनाने माथे , काळी नाग नाथे रे,
ओल्या, भोळा रे गोवाळीया भरमांणा रे , खोटा रे गेडी खेल मां रे,,,
जपे जोगीदान जापो , जदुराय जोजे रे,
हवे, नंदना कुंवर राखो नेजे रे, ठाकर आघा ठेल मां रे,,,

(जय श्री कृष्ण)

38 - || भोळा भरवाडीया ||

हे ओल्या भोळा भरवाडीया ने केजो, गोकुळ हवे हीबके चड्यु छे,
एतो मांने तो मनवी लेजो , गोकुळ हवे हीबके चड्यु छे, ,,,,टेक
जगवी नेह केम हाल्यो तुं जादवा, मुकी ने एकलां अमने माधवा,,
एने गोपीयु ना सम दई ने केजो, गोकुळ हवे हीबके चड्यु छे,,,०१

व्रज ना झाड पान रोवे वेलडीयुं, मुंगा थ्या मोरला ने सूनी ढेलडीयु,,
हे एने यमुना ना सम दई ने केजो ,गोकुळ हवे हीबके चड्यु छे,,
गोरी गावडीयु ने खड नई खावा, ध्रपीने वाहरुं जाय नई धावा,,,
हे एने नंद ना सम दई ने केजो, गोकुळ हवे हीबके चड्यु छे,,,
मही ना माट ने वागे ना काकरी, अबखे पडी हवे शेरी ए आकरी,,
हे एने वांसळी ना सम दई ने केजो, गोकुळ हवे हीबके चड्यु छे,,
बनी छे बावरी रोई ने राधा, मुकी ने हालीयो ज्यारथी माधा,,
हे एने राहडा ना सम दई ने केजो, गोकुळ हवे हीबके चड्यु छे,,
कह्यु ते आटलु माने जो कानजी,, जसोदा रीझसे ने रीजे जोगीदानजी,,
हे एने वालप ना सम दई ने केजो,, गोकुळ हवे हीबके चड्यु छे,,,
(जय श्री राधे कृष्ण)

39 - || शीव सरणम् ||
छंद: भूजंग प्रयात

नमो भूत नाथम् भभूतम् भूजंगी, नमो चंद्र वाहन अरी चर्म अंगी
नमो विश्व नाथाय नागेन्द्र नामी, शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||01||

नमो भस्म अंगी जटा बंध गंगा,नमो निल कंठम सदा भूत संगा
नमो हस्त पिन्नांक दैतांण डामी, शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||02||

नमो सर्प कंठा सुरेशम् महेशम्, नमो मुंड मालाय वैदर्भ वेशम्
नमो कामदम् ध्यावतम् योग धामी,शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||03||

नमो नृत्य नायक अजन्माय योगी, नमो जग्त हन्ता जपे दान जोगी,
नमो सुर्य चक्षा कीनो भस्म कामी, शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||04||

नमौ हिंगळा ब्रह्म रंध्राय बासी, नमो काळ काळेश हे नाथ कासी
नमो स्कंध ताता गणेसानुं गामी, शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||05||

नमो सोम ईसम् भीमा वैध नाथम्, नमो मल्लीकार्जुन श्री शैल साथम्
नमौ त्रंबकेदार भोळा भजामी, शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||06||

नमो राम रामेश गौरेश गाथा,नमौ हर प्रिया सोहणां वाम हाथा
नमो नाथ नारेशरा कैक नामी, शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||07||

नमो औम कारम् धरूं नित्य ध्यानम्, नमौ मोक्ष कारम् जपुं जोगी दानम्
नमो पाप हन्ता प्रणामी प्रणामी, शरण शंकरा ले सगत्तीय स्वामी,.||08||

40 - || कौशल्या नुं कल्पांत ||
ढाळ: भजुं तुने भेळीया वाळी

कौशल्या जी कंथ ने केता,वाला कांउ थई गीया वेता
रोक्यां नव नेंणले रेता, लूछी नेंण हीबका लेता....टेक
देव जेवो मारो दीकरो एने, वळावी ने वन वास(०२)
सरग हाल्या तमे एकला स्वामी, हवे, अमने कोनी आस
अवगण शुं आवीया एता, लुंछी आंख हीबका लेता...01

वचन चोरी ना विहर्या वाला, पडीया एकल पंथ(०२)
रझळावी माता राम नी रोती,हुं, क्यांय नी नो रई कंथ
लेखां कीया भव ना लेता, कौसल्या जी कंथ ने केता...02

कोई केगई ने कांई कहे तो, मांडवी ठारेय मन्न (०२)
जानकी राघव जंगले मारे,आ, दोयला केवाय दन्न
तूंने कहुं जूग श्युं त्रेता, लूंछे नेंण हीबका लेता...03

सूमितरा नेतो सतरूहण ने,सूत किरती नो साथ (०२)
एकली हुं आज ओरडो ओढी, नाखुं निसासाय नाथ
दीलासाय दल ने देता, लूछे नेंण हीबका लेता...04

पति काजे मेंतो पकडी नोंती, वनरा वन नी वाट (०२)
जातां स्वामी जोगीदानीजी हुंतो, घर नहीं नईं घाट
जोती रही राम जनेता, लूंछी नेंण हीबका लेता...05

41 - || तिरंगो ||

अंतर नुं अरमान तिरंगो,आन बान अभिमान तिरंगो
झपटे लाख सलामुं झीलतो, छे भारत नी शान तिरंगो. ||01||

सोंणीत थी सिंच्यो छे जेने, तरवारो नी तान तिरंगो
कंठ कसुंबल केसरीयाळो, गरजे चारण गान तिरंगो. ||02||

अखंड भारत चक्र अशोकी, फौज तणुं फरमान तिरंगो
रदय स्वेत रंगे थी रंग्यो, प्रेम तणीं पेह चान तिरंगो. ||03||

हरियाळो धरती ना हैये, धींगु पकवे धान तिरंगो
चडीया घट जग थी चडीयातो, सो सो सरग समान तिरंगो. ||04||

देश दाझ छे जेना दीलमां, भगवो त्यां भगवान तिरंगो
कोम वाद नही जेना काळज, ईस्वर तणीं अजान तिरंगो. ||05||

ओळखतो आक्खी आलम ने, वेधु ने विदवान तिरंगो
फलक तलक फडेडाट फररतो, प्रगती नुं परमान तिरंगो. ||06||

सरहद नो सावज ई साचो, बहादुर ने बळवान तिरंगो
त्राड दई दुशमन पर त्रुट्टे, शहिदो नुं सनमान तिरंगो. ||07||

भूलकां नी शाळा मां भाळ्यो, गाई करे गूलतान तिरंगो
पहाडो पर देतो पडछंदी, देस तणो दरवान तिरंगो. ||08||
नफट नजर नबळी को नाखे, घोर करे घमसान तिरंगो
जग आखा नी जमना माथे, कालीय मर्दन कान तिरंगो. ||09||
बलीदानी चोलेय बसंती, रंग तणूं रोगान तिरंगो
भगत सिंग जेवा भडवीर नुं, जीवतर जोगीदान तिरंगो. ||10||

42 - || ओढा तारी याद ||
ढाळ:ओढा नो मणीयारो

आज श्रावण नी एलीयुं आभे, धीकतो मेधल धार
विहरुं ना हुं वाल्यमा मारा, जाम ओढा ना जुवार,,०१

अमर पणुं मने आवतुं आडुं , मरवुं थ्युं मुशकेल
आंम ओढा विण एकली होथल, जांण पुरांणीय जेल;,०२

कनरे डुंगर काळजुं बाळे, मौंन बेठेलाय मोर
विरह बीके जे वेंण वदीती,ए, सामे मचावेय सोर,,०३
तीर तांणी ने मारीयां ता, ई खीजडो ग्यो गई खोल
थर बाबीडी थाउं ओढा ई, कारमा लाग्याय कोल,,०४
अमल तेदी अमरत लाग्यु तुं, हतुं ओढा तुज हाथ
आज एकलमल एकलो थई ग्यो, छुट्यो बेली नोय साथ,,०५

वेर बांभणीयानुं वाळवूं ओढा, नगर सिमोईनुं नेम
याद सांढ्युं ने एलची आव्यां, जाबु मोरा नीय जेम,,०६

पाळ चखासर पांपणे पांणी, पांगरी ती ज्यां प्रीत
देव जेवा बे दीकरा ओढा,रांण भुलुं कई रीत,,०७

याद तुं ने तेदी कच्छडो आप्यो, वरहे ई वर साद
वतन तारे आज वाटडी जोती, सेंण पाडे नीत साद,,०८

हाय होथल ना हीबका हैडे, जागीया जोगी दान
सांभळ्यो रोतो साद सलुंणो, कनरे मांडीन कान,,०९

43 - || परख साचा प्रेम नी ||

छंद : सारसी

केवां हशे ई काळज जे जिवन जे जीती गीया
वातुं मां रहीगई वेदना ने वखत ऐ वीती गीया
औषध मळे नई आ धरा पर वधल जुद्दा वेमनी
जगमांय जोगीदान क्यां छे परख साचा प्रेम नी..||01||

रोळेल सपनां रांक ना ने भांगीयुं घर भादरे
पछडाई चारण थीयो पागल पोरहा ने पादरे
ईरखा य करतो हशे ईंदर जोड्य भाळीन जेमनी
जगमांय जोगीदान क्यां छे परख साचा प्रेम नी..||02||

वडले वराळुं थईन वसीयो प्रितमो पदमा तणो
परीयुं न वरीयो प्रेम काजे भुतडो केवो भणो
ई मांगडा पदमा तणी कहो प्रित भुलिये केमनी
जगमांय जोगीदान क्यां छे परख साचा प्रेम नी..||03||

प्रथमीय आवी पदमणी मन मोहीयुं ओढा मथे
अंबार रुपनो प्रित अनहद कलम आ केमे कथे
छोड्युं सरग संसार मांड्यो हिये होथल हेमनी
जगमांय जोगीदान क्यां छे परख साचा प्रेम नी..||04||

लाजाळ प्रिति लागणी खोडाय खिमरो खांभीये
लोडणे छांट्या लोय धोबे निसासा दई नांभीयें
पादरे थई ग्यां पाळीया ऐवी करुंणा ऐम नी
जगमांय जोगीदान क्यां छे परख साचा प्रेम नी..||05||

हैये हलामण जेठवा ने सोन वसीयल सांजणी
ऐना विना सउं नार जगनी मानतो ई मां जणी
वेरी थीयुं वांहे पड्युं आ जगत आखुंय जेमनी
जगमांय जोगीदान क्यां छे परख साचा प्रेम नी..||06||

रोमीयो जुलीयट हिर रांझां सोहणीं महीवाल छे
फरहाद सीरी फांकडा ऐ धरम प्रिती ढाल छे
प्रथमी य केवां थीयां प्रेमी यादीयुं रई ऐमनी
जगमांय जोगीदान क्यां छे परख साचा प्रेम नी..||07||

जोगीय घेली बनी जोगण लगन करियां लावथी
रंगेय रोही साळ आवड भज्यां बेजण भाव थी
घर घर महीं जे गीत घुमे ऐह प्रित्युं ऐमनी
जगमांय जोगीदान जेने परख साचा प्रेम नी..||08||

44 - || आवाहन द्वादशी ||

दोहा.

सुभ संपत आयु सगत.यस स्वास्थय अरु आन
जपत स्तोत्र यह जोगडा.प्रम पद करत प्रदान.||01||

सर्व परि सगती स्मरण.अखिलेस्वरि अखंड
जग्न पुकारत जोगडो.प्रकटो मात प्रचंड.||02||

छंद : शैल भुजंग

ॐ सती साधवी भव प्रीया तुं भवानी.जया जोगणी तुं परा शूल्ल पानी.
कवच नाम तारु कलीकाल कामा.सतक नाम जापे द्रसूं मात सामा
भवां खेचरी भूचरी बोल खम्मा. मया रक्ष तुं रक्ष तुं रक्ष रम्मा.
हवे दर्श दूर्गा दीयो मात दानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||03||

नमो आर्य पिन्नाक धारीय आध्या.नमो सुंदरी सांम्भवी सर्व साध्या.
नमो बुद्धी हुंकार ने चित्त रूपा. नमो चैतना सत्य आनंद् स्वरुपा.
अनेकाय वर्णा असीम विक्रमा तूं.नमो वन्न दुर्गा महाबल्य मा तुं.
अनन्ता नतूं मां अमुं थी अजानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||04||

नमो मोचनी भव त्रिनेत्रीय तन्ना.नमो चंद्र घंटा महा तप्प मन्ना.
नतो जांणतो मात त्यारे नीहाळी. प्रखीती तने साव पासे पासे प्रचाळी.
करुं पस्यतापो हवे दर्श आपो. प्रजाळोय पापो छुडावोय शापो.
बकुं बाळ तोळो मया ऐक बानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||05||
नमो चित्त चित्राय भावीनी भव्या.प्रियं रत्न भाव्या अपर्णा अभव्या.
मुनी याज्ञ वल्कल्ल मार्तंड मानी.जपी जोगीदाने वसीस्ठे वखानी
नमो सर्व शास्त्रो मयीं मात सत्या.परीधान पट्टांम्बरी मात प्रत्या
महा सर्व मंत्रो मयी जोग जानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||06||

नमो दक्ष कन्या सती तुं सुवर्णा.नमो दक्ष यज्ञम विनाशीनी वर्णा.
नमो अग्नी ज्वाला क्रुरा काल रात्री.दयालीय नित्या क्रीया सिद्धी दात्री.
नमो भद्रकाली करालीय कात्या.नमो घोर रूपा असूरांण घात्या.
परा पाटला अस्त्र सस्त्राय पानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||07||

मधू कैटभां ध्वंस कारन कूमारी.महीस मर्दनी विश्व कल्याण कारी.
तुंही चंड मुंडन विनाशीनी चंडी.नमो शुंम्भ नैशुंम्भ हंन्ता हखंडी.
नमो राज लक्ष्मीय नारायणीं तूं.महोद्री जगत्त सर्व तत्वम जणी तूं.
नमो मुक्त केशी मूखी रौद्र मानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||08||

नथी जांणतो मंत्र के तंत्र माता.विधी यंत्र नी हुं न जांणुं विधाता.
नथी जांणतो ध्यान के ग्यान धारा.नथी जांणतो अर्थ हुं वेद चारा.
प्रणायम न जांणुं हुं अग्यान योगी. जपुं नाम तारुं जुंवो दान जोगी
न मुद्रा न यज्ञो न स्लोको सयानी.प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||09||

कलम सिद्ध ज्ञाना सवीत्रीय शेषी. परम ईश्वरी विष्णुं माया तपेशी.
पुरुषा कृती वैष्णवी ब्रह्म वाणी.त्रिपुर मालीनी शैव तुल्या त्रीसाणी.
दता धर्म अर्था अरू काम मुक्ती.अनेकास्त्र धारी जलोद्रीय जुक्ती.
महा मोक्ष दाता जूगो पार जानी.प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||10||

कर्यो आभमां मात ऐवो कडाको.धरा तल वितल मां थयो मा धडाको.
सुंन्यो निज्ज काने जुवो जोगीदाने.अहो आत्म तत्वं प्रकट्टी प्रमाने.
दीयां दर्शनो शीव तत्वं समाने.अहा मातृ आयन्न रखुं पद् रमाने.
द्रशी सर्व तत्वेय ऐको समानी.प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||11||

दोहा

अर्पण जग आदेश्वरी. उकल्युं रहस्य अजान
जे दरशन भये जोगडा. पाठत पुन्य प्रमान.||12||

45 - || शिव वंदना अष्टक ||
छंद: त्रीभंगी

करतुंड कटंकर. खाग खटंकर. मुंड मटंकर. भयभीन्ना.
मंथन दधी मंकर. भुजबल भंकर. गरल गटंकर. गणकीन्ना.
निलकंठ नटंकर. लचक लटंकर. जटा जटंकर जणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||01||

जोगण पत जंकर. बात बधंकर. दक्ष दधंकर. हथलीन्ना.
गीयणां गणणंकर. चकर चटंकर. प्रथी पटंकर. रतपीन्ना.
दावानल दंकर. फाट फटंकर. खडग खटंकर. खणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||02||

चडीया चिह चंकर. सारण शंकर. भजो भजंकर. भयहरणा.
जोगीह जपंकर. दान दपंकर. तेज तपंकर. तमतरणा.
अरपे अभयंकर. रुद्र रयंकर. झांझ झटंकर झणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||03||

प्रथमी पड पड़कत.धणणण धडकत. डुंगर दड़कत. दडडदडे
फंण शेषही फड़कत. कछपीठ कडकत. खडगांखडकत. खडडखडे.
भवनेहर भडकत. थड़धर थड़कत. तडडड तड़कत. तणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||04|| .

हरहर कर हणणण. त्रिहुळां तणणण. भुमड भणणण. भणणभमे.
गावत गण गणणण. छावत छणणण. ध्यावत धणणण. धणणधमे.
चख कुंडळ चणणण. भैंचक भणणण. बौलत बणणण. बणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||05||

झपटी धर झुक्का. सबलीत सुक्का. हरभर हुक्का. हडडहमे.
चरअचरण चुक्का. नवखड नुक्का. भुतल भुक्का. भडडभमे.
तांडव व्रत तुक्का.दानव दुक्का. भणण भभुक्का. भणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||06||

हरिवर हररायो. धरपर धायो. तमकर तायो. तरजणींयां.
नव सोच समायो. शिव शव छायो. सती सुधायो. सरजणींयां.
बावन टुक बायो. शिवा सिदायो. सुदसन सायो. सणणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||07||

त्रय लोचन तडीया. आग उघडीया. धोम धखडीया. तणघडीया
चारण गण चडीया. जोगीह जडीया. दानही दडीया. दडवडीया.
कर दुर दखडीया. सौप सखडीयां. हिये हखडीया. हणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.||08||

46 - || मागुं हुंतो एटलुं मावा ||
ढाळ: सोनल मा आभ कपाळी

देख्या दूनियाव ना दावा, वैभव ने धन नी वावा
गेबी तारा गूंणला गावा, मांगूं हूंतो ऐटलुं मावा...टेक

संत नो कायम संग तूं देजे, पूरण कथा मां प्रेम (०२)
निर अभिमानी मनडूं नाचे, नीत्य पूजा नुं नेम
अल्लख व्रत पाळीयें आवा, मागुं हुंतो ऐटलुं मावा, 01

कपट कोदी ना काळजे कोळे, गावुं हरी नां गान (०२)
भोम आखी ना जीव हुं भाळुं, सघळा एक समान
सुरतायुं सून्य समावा, मागुं हुंतो ऐटलुं मावा, 02
भोग वासायुं वेगळी भागे, मन देज्यो मजबूत (०२)
चरित चुकूं नई चडीयो चारण, एक रंगो अवधूत
चारे मूख वेद हो चावा, मागुं हुंतो ऐटलुं मावा, 03

भव आखो ना भूल थी भूलुं, कोयदी तूंने कान (०२)
शोक हरख ने ऐक सरीखा, जोवुं हुं जोगीदान
प्रिति रस भगती पावा, मागुं हुंतो ऐटलुं मावा, 04

47 - || भोमी पर भगवान ||

ढाळ: केने हवे केदी आवीस कान

केतो ग्यो छे कान, ज्यारे ज्यारे जासे धृम नी जान,
भूमी परे आवे छे भगवान ..टेक
देव जातीयुं दारुं पीये एतो, अधम ना एधांण
नीचां करमो नोतरे एतो भूली कूळ नूं भान
भोमी पर आवेछे भगवान ०१
रज्ज समुं ना राखे दीकरा, मात पीता नुं मान
व्रधा स्रम मां करे वेता, देता नई कंई दान
भोमी पर आवे छे भगवान ०२
हरीय आवी हीसाब करसे, नफट सूंण नादान
तेल कडा मां तावसे तने,बेहर पकडी बान भोमी परे आवे छे भगवान ०३
हरख थी जे सेवे हरी ने,मांणह एज महान
गळ्यां गुंणीयल ग्नान ना,ई प्रेमे करशे पान
भोमी पर आवे छे भगवान ०४
मेह्ता माटे मे वरहायो, जेर मीरा ना जान
चतूर भूज ने चारण चडीया, जोश्युं जोगीदान
भोमी परे आवे छे भगवान ०५

48 - चारण है वो चीज

साच सुंणावे ने सुंणे, खोटी न करे खीज,
जांणो क्षत्री जोगडा, चारण है वो चीज
अडग मना वचने अटल, धारी पाडे धीज,
जीव धरी दे जोगडा, चारण है वो चीज
पोस सुदी जे प्रेमथी, बेहकी उजवे बीज,
जांणे सोनल जोगडा, चारण है वो चीज
देरां फेरे द्‌वारका, ईश्वर नां पण ईज,
जो हठ जावे जोगडा, चारण है वो चीज

49 - साडा त्रण प्हाडा प्रथम,प्हाडो

छंद: मनहर कवित

|| नरा / अवसूरा ||

नरा कूळदेवी मात रवेची को लीयो नाम
शंकर को गण आखी भोम अखीयाता है
सूतको है पुत्र माताआवरी को जायो आज
अवल्ल अमल्ल नेह चारण चराता है
ईसर, उसडा, सूडा, सिंगडीया,मळी साथ
लूणल, लोयणा, लोमा, हेठोळा हयाता है
त्रण वीसुं तापे दसां भेद भये साखा भारी
मूख जोगीदान नरा साखे मलकाता है, ||०१||

कीडीया, कागडा, गुढा, गाहु, और ग्रोवियाळा,
गोखरु,घेलडा, घेला, गोयल, गवाता है
जाळग, जामंग, जेत्र हत्था, झीबा,जाजलीया
जगबल्ल, जाळफवा, जेसळ, जीता, ता है
जग्गहठ, जोगडा, देवल, धूना, देहभल्ल,
धधवाडीया,की नांधुं, धूहड, भी धाता है
नरदेव, नेचडा, के नरेला या नामाळग,
कहे जोगीदान नरा नागैया से नाता है, ||०२||

नायक, पायक, है नडीर, और नांदण भी
नजभल्ल पांड्रसिंगा, पालीया, पंकाता है
पोपरीया,बोक्सा, बुधड, बेरा, बावडा,ने
पंचाळ, भुहड, भेंसवडा, भाखुं, पाता है
भुजाळा, मोभल, मागु, मोखराम,मोढेराय
मुळीया, मालीया, राजपाळ, अंग राता है
राजशी, राजैया, रजवेठ,संगे राबा, राय
कहे जोगीदान नरा आजा सोया आता है, ||०३||

अवसूरा,
सूत पूत्र धेनु बल्ल वाके आवीसूर भये
देखी चंड मुंडा देवी कूळ दर सायो है,
कनुआ, कीनीया,कूना,कूंवार, ने, कुंवरीया
कवडीया, खात्रा, खडीयेचा,गोल, खायो है
गेंदळा, गीयड, गोदडा, की खेरा, गढवी,या
खाडाळा, खडायचा, ने खुखड, खमायो है
कहे जोगीदान अभी मान करी सकौ एसा
नराकुळ चाळ अवसूरा, जग्ग आयो है, ||०१||
चांचडा, जडीया, सूगा, साजका, सुरु,ने दास,
जसगार, सगोअर, संभळा, सवायो है
जळीया, झुझार, धूळा, देवळग, देवका, ने
दरंगा, नागीया,नागलांणी, पेथा, नायो है
पाटोडीया, पसीया, ने बुधसी, पिंगूद, बंका,
भोज, बळधा, ने भूवा, मालका, मनायो है
महेरांण, मूळरव, मोखु, मोखा, मोखाया, तो
कहे जोगीदान अवसूरा आसीया, यो है, ||०२||

मूअड, पंगर, मांणु, पिंगु, सासी, पटोळीया,
पेचीया, पाटोडा, होना, होता, जग्ग हायो है
ओल, आपजड, आसपाळ, अरु आसीया, ने
लाळस, लुणीया, वणसूर, अंब वायो है
सामोर, रतन, वाणसीया, ने सोलाखा भला
भाराथे सूमोड, वेगडा, को जुद्ध भायो है
कहे जोगीदान अवसूरा अवनीपे आज
बंकडा, ने साखा जग बोंतेर बसायो है, ||०३||

50 - साडा त्रण प्हाडा बिजो,प्हाडो

छंद: मनहर कवित

|| चुंहवा 'चाळ'बाटी ||

मृदु मती म्रिकुंद अराध्यो महादेव अती
रुद्र ने बतायी राह चारणा की रीता है
बारा साल आयु स्राप बाल सूत घर सोहे
ब्रामन को दीयो दान बोत मन बीता है
म्रीकंदु पढायो मृत्यु जीत है महेस ईश
कहो मारकंडे कैसी करंतो कवीता है
ओही मात आवरि ने कियो नाद आसमासे
कहे जोगीदान जग्ग रवेची जपीता है, ||०१||

वाकी वंश वेल वीर वेद को पठंत वारी
चहुंदीस वाय वाता चहूवा चरीता है
काजा,गोढ,कुवारीया,कीकडा,कळंग,घोडा,
खुबडीया,खुसडीया,गांगडीया,गीता है
गोड,के गवाद,जाजु,चाटका,सपाकी,चूंवा,
साबा,सोमाणींया,नाया,छाछडा,समीता है
झणीया,त्रवाई,झूला,वरसदा,वीरडा,ने
कहे जोगीदान माम,मुंजडा,मळीता है, ||०२||

घरम रखंता ध्राटी,धानीया,बधीया,धाया,
सुमंग,सताल,राजा,सवर,सपीता है
राजवळा,महातंग,भायका,ने लांगडीया,
मादळ,मेळंग,वीर वाजैया, वजीता है
वागीया,विंझवा,एपु,मांणकव, संगे मळी
चडीया तिरारे चुंवा,उमैया,अजीता है
आलगा,अभय, अरडु, है अडीखम एका
कहे जोगीदान कोडे कवित कविता है, ||०३||

चूंवा चाळ बाटी
दोहो
"मैं भगवद सम भासीया, ,सोमल,सूधा समान
जो चत बाटी जोगडा,सवडा,सिरण,सुजान"
(भासीया,सोमल,सवडा,सिरण, चार साख दोहा मां)
कवित
चूडसोम वोहळीया, काळीया, खाखवा, जाजु,
चारण बाटी,यां कुळदेवी चंड मंडा है
गाडण,सिरन्न,डेर,सेलंगडा,धोमा,नाद,
धामैया,ने बुधराम, धरमा, धरंडा है
भुंड,बधा,भाट,भाटे,भेवलीया,भासा,सोज
मेंदल,मेदळ,मेघा,रतडा,रमंडा है
पांचाळीया,पीठडीया,वेलडा,वेवडा,आना,
कहे जोगीदान रणा, पीठड, प्रचंडा है

51 - साडा त्रण प्हाडा त्रीजो प्हाडो

छंद: मनहर कवित

|| चोराडा चाळ मारु ||

कृष्ण नाम शीव से ही कान हुवो कृष्ण नाम
पुत्त शीव सूत्त चहुराड की प्रजाती है
क्षण मे दीयंती वर वरेक्षण कूळ माता
हेमाळे प्रचंडी सती सगत्ती हयाती है
सांखडो चोराड चोवी गाम पडीयार सत्ता
पूर सांतला बनास कांठ मे बसाती है
कवीया, कवल्ल,कांटा,कापडी,कोलू,ने कास
कहे जोगीदान जांपा,जोगवीर, जाती है,,||०१||

खडीया,गोरीया,गोरा,खीमतेज,खैया,खेडा
गड़दीया,गीयर, ने गांगल, गीनाती है
चोराडा,सडीर,चिला,सांखडा,ने चेड,सडा
चाय,सोमातर,जासा,जागरा,जमाती है
सनपर,सादैया,ने सगपर,सरा,समा
सिंगहूर,डोड,तेजा,तामा,धोळी,ताती है
थेहड,वणसी,वडगामा,वजीया,वीकल्ल,
कहे जोगीदान देवसूर,दरसाती है,,||०२||

वरणसी,वानरा,वीरम,वजमल्ल,दादा,
देवंगडा,वाळीया,वीशळ,नांगु,वाती है
वासीया,वाघला,भोजा,देसीया,देवत,पाया,
भोजग,वागभा,भड़,भाकवीर,भाती है
धम्मळा,नासीया,मुंधा,ध्रोळीया,धींगडमल्ला
फसीया,धामळा,भाकवीर,रांणा, फाती है
अनुवा,अचळ,आंबा,अलूवा,रेराह,रंग
कहे जोगीदान हादा,हूतल्ल, हयाती है,,||०३||

पडीयार,पड़यार,मालकोश, मूळराज,
महूवा,मेमल्ल,आंख राजीया,की राती है
लांबा,लोधू,लुंणल,ने लालीया,लोयण,लूंणा,
लोपु,लभवा,ने वळी लूंणभा, लचाती है
चोराडा प्रसाख चरीताथ कीयो चडीया ने
फीरे देशो देस जाकी छप्पन की साती है
साख पर साख बाप गाम काम भयी गूंण
कहे जोगीदान त्रांणु चोराडा चराती है,,||०४||

चोराडा चाळ मारु

कवित

शीव गण सूत वाके मारुत हे ताको पर
परमारु वंश जग्ग मारू केहलातो है
आवड उपासी कूळदेवी कूळ परमारू
मारवाड मारु वाके लार ना लेखातो है
मारुत पहाडा को भी बासिंदो हुवो हे मारू
हिंगळा प्रसंता प्हाडो कोरे ही कळातो है
कामोधा,काकरा,पाला,कोचर,ने कायपल,
कहे जोगीदान मौज करे फीरे माता है,,||०१||
करना,कागोया,गो,ने कलोळीया, खोळससी,
गोलण,गांगरा,सोदा,घोघरा,घुमातो है
घुघरीया,चांचुडीया,चंदणभूवा,घरेट
चांचबडा,सुकरीया,सीलगा, समातो है
सोमटीया,सूमटीया,सतीया,शोभत,सोई,
सूधा, सुरतानीया, ने सीरायच, सातो है
सोहरीया,सवई, ने दांती, जोखमडा,देथा,
कहे जोगीदान मारू,मोकळ, मनातो है,,||०२||
बाघरा,बेहडीया,बोहळीया,भजंग,भाकू
भालग,भोजग,भडमाल,बी भळातो है
भेरटीया,मेंणमला,रसोया,लधू,ने रांटा,
वाघीया,लोयण,वीकसीया,नीय वातो है
वासीग,उकन्न,वडीयाळ,आला,उभमाळ,
उंटा,अणपडा,संग ओरायत, आता है
गतराड संग हथेवाळो करी भयो गेलो
कहे जोगीदान खोड पेख्यो मारु पातो है,,||०३||

52 - चोथो अडधो प्हाडो

छंद: मनहर कवित

|| तुंबेल ||

तुंबडे उछेर्यो तोउं तुंमी बडो तुंबेलाय
चडीये चितार्यो वामे खोटी ना को खोड है
काग,कारीया,ने गंढ,गुजरीया,गुंगडा ने
सेडा,सिंधीया,रू जाम,जीवीया,की जोड है
धानडा,धांधुकीया,ने बढा, और बुढडा ओ
भींडा,भागचून,भला,मवर ही मोड है
शंकर कुं पीता चंड मुंडा ने रवेची सेवे
कहे जोगीदान बातां जग मे बेजोड है,||०१||

मंधरीया, मुन,रूडा राग, अरु रूडायच,
छोगां है समाज कुंणा काळजां करोड है
व्रमल, ने भाकचन,भिंडायच,भिंडा भुवा
खोळतां जडेह एसी खोटी ना को खोड है,
आयुं जग आयूं जाकी खुमारी को देखो जोग
बंका म्रद तुंबालां तो अळा पे अजोड है
सारण वरण एक धारण धरम धरम होवे
कहे जोगीदान मात सोनल को कोड है.||०२||

53 - || रोतो भाळ्यो राम ||
ढाळ: जडेली जेदी जानकी रे

निरास थई ग्यो नाथजी, कारी न फावी काम
जातां सीता जोगडा,में, रोतो भाळ्यो राम
एवा अवध पती ने छलक्यां आंसु रे, जानकी देखी जाता रे..
आने भव मां हवे हुं क्यारे भाळुं, रे रोई ने नेंणा राता रे....टेक
ई बापडी न जांणे कांई ..रथ मां बीराजी रे(०२)
एने ऐवुं हतुं राधव मारी माथे राजी रे..
नेह ना बांध्या नाता रे....अवध पती..०१

सुंवाळे ओशीके जेणे, हेत थी सुवाड्या रे (०२)
एणे खूब करी तांण्युं हाथे खवाड्यां रे
भावे ते भर्यां भाता रे...अवध पती...०२

ऐक ऐक वातुं ऐनी आंख्युं सामे आवी रे (०२)
एतो रूदीया ने देती ती रोव डावी रे
रेडातां तेल ताता रे...अवघ पती...०३

फफडे काळजुं एनुं , निंदरायुं नावे रे (०२)
मानेती थी आंख्युं केम मीलावे रे
सोणले सीता साता रे..अवघ पती..०४
कीया अपराधे त्यागी, कहे तो शुं केवुं रे (०२)
एनी लाजे हवे मोढुं संताडीय लेवुं रे
मुंझावे त्रणे माता रे...अवध पती..०५
अयोध्या अमारे नथी, जोगीदान जावुं रे (०२)
एने सोपी बाळ धरती मां समावुं रे
विनवे सीता विधाता रे..अवध पती..०६

54 - सूर्य वंदना -25-07-16

कालाश्रय सूत कास्यपा, प्रांण तूं जगत पतंग
ज्योत पुंज च्रण जोगडो, रांण दीयूं लख रंग
हे भगवान सुर्य नारायण आप ना आधारेज तो समय गणना थाय छे माटे आप काल ना आश्रय दाता छो,समस्त जगत मा प्रांण भरनार पण आप छो, हे ज्योती पुंज आंम सुजन संहार ना अधिस्ठाता हुं आपने नित्य वंदन करुं छुं

सूर्य वंदना -24-07-16 जोगीदान गढवी

लाखेणीं रत लोबडी, एमां, राखेल टांकी रांण
ज्या सरकी सर जोगड, त्यां, भाळ्यो सूरज भांण
रात्री नो अंधकार जांणे भगवती नी काळी लोबडी जेवो लाग्यो जे सहेज सरकता तेमां टांकेल सुर्य देखायो अने वळी सहेज सरकता पाछी रात देखाय , आम महाशक्ति आयल ना ओढणे टंकायेल नारायण ने मारा नित्य वंदन

सूर्य वंदना -23-07-16 जोगीदान गढवी

कर्म धर्म सुध भाव कर, समरण करीये सूर
जपता भेंतर जोगडा, नवल प्रकटतुं नूर
पोताना कर्म ने धर्म साथे सुध भाव थी जोडी ने भगवान सुर्य नारायण नुं समरण करवाथी भीतर मां नुतन नूर प्रकटे छे, भगवान नारायण ने मारा नित्य वंदन छे

सूर्य वंदना -22-07-16 जोगीदान गढवी

डगे धर्म शीव धर डगे, पतंग ना निज पत्थ
जगमां को नई जोगडा, सुरज समो समरत्थ
धर्मराज डगी सके, शीव डगी सके पृथ्वी पण डगी सके, आ बधाय ना डग्या ना एक थी वधारे दाखला छे, पण जे पोताना नित्य पथ थी क्यारेय न डग्यो होय एवो कोई प्रकट देव होय तो ई समर्थ देव भगवान सुर्य नारायण छे जेने मारां नित्य वंदन छे,

सूर्य वंदना -21-07-16 जोगीदान गढवी

सूरज जेवो सायबो,तोय, रांदल चडवी रीस
जळतो एथी जोगडा, आंत दीयण आशीस
हे भगवती रांदल मां आपे सुर्य नारायण थी रीसाई ने त्यां छाया मुकेल ऐनुं साचु ज्ञान थता नारायण पस्चाताप मां जळी रह्या छे, तोय आंतर थी आशीस वरहावी रह्या छे, भगवान सुर्य नारायण ने मारा नित्य वंदन छे,

सूर्य वंदना -20-07-16 जोगीदान गढवी

प्रित रखे पोतां परे, रांण करे नई राख
जेनी पुरतुं जोगडा, सूरज देवळ साख
भगवान सुर्य नारायण हंमेसा पोताना पर प्रेम राखे छे, पोते तेजपुंज समान अने अग्नी ने पण बाळी नाखे एवा सामर्थ्यवान होवा छां जे पोताना छे तेनापर कायम तेमनी प्रिति छे, ते ज्यारे ज्यारे धरती पर पधार्या छे तेमणे बाळ्या नथी जेनी साक्षी सुरज देवळ पण पुरे छे, एवा नेहा भर्या नारायण ने मारा नित्य वंदन,

सूर्य वंदना -19-07-16 जोगीदान गढवी

बधी रीत भुलीया बधा,धरम हिमाळे धाय
जागी वंदे जोगडो, सुरज करो ने साय,
हे भगवान सुर्य नारायण जगत पोतानी बधी रीतो भुलवा मांड्युं छे, धर्म हवे हेमाळे हाड गाळवा जई रह्यो छे, हवे नारायण आप सहाय करो हुं नित्य जागी ने आप ने वंदन करुं छुं

सूर्य वंदना - 18-7-16 जोगीदान गढवी

नीत जागी भज नारणा,सजण बणो नई सोम
जोग तपोबळ जोगडा, भांण तपे ज्यों भोम,
जे नित्य जागी ने नारायण ने भजे छे तथा सोम (लोभ/ चंद्र मा एटले के काळा डाग वाळो, दुर्गुण ना दाग) प्रकृती वाळा नथी रेहता तेनुं तपोबळ एम तपे छे जेम सुर्य नारायण नुं तेज धरा पर आवे छे, भगवान सुर्य नारायण ने मारां नित्य वंदन छे,

सूर्य वंदना - 17-7-16 जोगीदान गढवी

अरघ धरुं जळ अंजळी, नारण दरशन नीत
जप कर वंदुं जोगडो, रांण रखी कुळ रीत
हे भगवान सुर्य नाराजण नित्य जागी ने अमे आपने दोहा शब्दो साथे स्नेह जळ नी अंजळी नुं अरघ धरी आपना दर्सन करवानी चारळ कुळ रीत ने अमुं जाळववा कालावाला करीये छीये आपने अमारा नीत्य वंदन छे.

सूर्य वंदना - 16-07-16 जोगीदान गढवी

दीधी हनुने दीकरी, मिहिर वधार्युं मान
जवा पुरव के जोगडा, वेवाई ने विदवान
हे भगवान सुर्य नारायण तमे तमारा सिस्य हनुमान ने सुवर्चला नामनी पुत्री परणावी ने मान वधार्युं छे, तथा जो आप आपना वेवाई एटले के हनुमान ना पिता पवन ने पुरव दीसा ना थवा कहो तो हे विदवान वरसाद आवी सके , मारां आपने नित्य वंदन छे ,

सूर्य वंदना -15-07-16 जोगीदान गढवी

करण कटी नीज काय को, अंश तमण अवतार
जळ देवा जग जोगडा, दीनकर बण दातार
हे भगवान सुर्य नारायण आपना अंश मात्र थी जन्मेल आपनो पुत्र कर्ण पोतानी पासे मागनार ने खुद नी काया कापी कवच कुंडळ अने दांत तोडी ने आपी देतो होय तो हे नारायण तमे तो एना बाप छो अने जगत तमारी पासे मात्र जळ नी मांग करे छे, माटे हे नारायण धरवासट धोध धरा पर वरहावो, अमारां आपने नित्य वंदन छे,

सूर्य वंदना -14-07-17 जोगीदान गढवी

नंदन कास्यप नेहसुं, वंदन सूरज वीर
जंदन भुले जोगडा, तंदन थीरता तीर
हे कास्यप ना नंदन भगवान सुर्य नारायण हुं नीत्य आपने वंदन करुं छुं जे दीवसे वंदन न थयां होय ते दीन हुं स्थीरता मां समाई गयो छुं ऐवुं मानज्यो, मारां आपने नीत्य वंदन छे,

सूर्य वंदना :- 13-07-16 रचना जोगीदान गढवी

लाजाळुंय लुंपी रीयो,मिहिर भलो महारांण
जमाई सामो जोगडा, भभको करे न भांण
आजे सुर्य मांथी छुटी पडेल होई पृथ्वी सुर्य नी दीकरी लेखाय अने अने ई धरती नो धणीं मेहुलो पधार्यो होय त्यारे सामर्थ्य होवा छतां ससरो जमाई सामे पोतानो भभको न देखाडे ऐम नारायण आजे निकळ्या छतां लाज मरजाद थी लुपाया छे, आवा मर्यादा रक्षक नारायणने मारां नित्य वंदन छे,

सूर्य वंदना :- 12-7-16 जोगीदान गढवी

वरहावी दो वादळा, कुंवर कसप रख कंण
जळ ना भारे जोगडा, निंद खुटे नई नेंण
हे कास्यप ना कुंवर भगवान सुर्य नारायण अमारे तमने वेहला जागी ने वंदन करवां होय छे पण वादळ ना जळ ना भारण थी निंदरायुं खुटती नथी तो आप ए बधुं जळ वरहावी दो अमारुं आटलुं कंण आप काने धरो , अमारा आपने नित्य वंदन छे,

सूर्य वंदना -11-07-16 रचना जोगीदान गढवी(चडीया)

दादा आ दुनिया कहे,ई, सगपण साचव सूर
जळ अहाडुं जोगडा, भांण दीयो भर पूर
हे भगवान आखी दुनीया तमने सुरज दादा कही ने वंदे छे, ऐ सगपण ने संभारो अने हे नारायण अहाड नुं जळ हवे व्रहावी द्यो अमे आपने नीत्य वंदन करीये छीये,

सूर्य वंदना - रचना जोगीदान गढवी (चडीया)

गगन मुकी गिरनारयो, पुरवा करो पवन्न
अरक उगे तउं अन्न, जळ वरहे जो जोगडा,

हे भगवान सुर्य नारायण आजे वादळां बउ चड्यां छे पण पवन गिरनारी वाय छे, जो आप कृपा करी एने पुरव दीशा नो ओतराखंडी करो अनहद जळ वरहे अने मबलख अनाज उगी सके, अमारां आपने नीत्य वंदन छे,

55 - || मोगल तारो आसरो मागुं ||
ढाळ: सोनल मां आभ कपाळी

लोबडीयाळी पाय हुं लागुं, पाळे मां उतारीये पागु,
जोगण नां जाप थी जागुं, मोगल तारो आशरो मागुं....टेक
लाख गुना तारा लाल ना माडी, लेखती नई लाजाळ
जाय तारा वींण जोगडो क्यां मां, बाई हुं नानो बाळ
भेळीया नी ओथ मां भागुं, मोगल तारो आसरो मागुं...०१

सामटा वेरी आवता छो ने, थडको ना उर थाय
भरोहे तारो भेळीयो भाळ्यो, कंपती वेरी नी काय
खेधाळीय खेलती खागुं, मोगल तारो आसरो मागुं...०२

रेम जाया पर राखजे रूडी, पाप मां दउं नई पाय
चुकींये नई मां धम चारण नो, जीव भले आ जाय
तुंने जोई देह आ त्यागुं,मोगल तारो आसरो मागुं...०३

गाम गोकळ ने गोंदरे माडी, कोक दी थाजे कान
महा रासो मारी मावडी मंडे, जोउं हुं जोगी दान
वांसलडी जेम हुं वागुं, मोगल तारो आसरो मागुं...०४

56 - || राज मारे रवराय ना ||

ढाळ : गरबी

मारे राज रुडां रव राय नां रे ..(०२)
खोटा सोगंध जेना कोई खाय ना रे..टेक

जेदी तांणी तरवार तरकांणीये रे..(०२)
कीधा कूडा मन सुबा एणें काय ना रे..01

अमे आव्या आवड केरे आशरे रे..(०२)
ज्यां वायु शियाळुय वाय ना रे...02

कोडे काळी पेहरावी मांये कामळी रे..(०२)
भण्यां मान धाबळीया रे भाई ना रे..03

जोगी दाने गोकुळ रव जांणीयुं रे..(०२)
घेर गुंजे वलोणां नीत गाय ना रे..04

दुध धी ना ते डेलीये दीवा बळे रे..(०२)
बधा आशीस ई चारण बाई ना रे ..05

जाजी खम्मा कई लाबसी जुवारीये रे..(०२)
अमे भुलीये उपकार केम आई ना रे..06

57 - || कालीका मोतीदाम ||

रणंकीय रास रणे रमखांण, हणंकीय हुकत राखह हांण
भणंकीय भोम पताळ भुवंड, खणंकीय खेलण नव्वेय खंड..०१

चखत्तीय रग्गत हड्डांय चांम, भजां नीत रुपांय शंकर भाम
कपालीय देखीय कालीय कान, जपां अभीयंकर जोगीय दान. ०२

भयंम् अहरांण भयें भय भीत, जयंम् गण गावत देवांय गीत
कटंकड कालीय दंत कडेड, फटंकत शेषांय फेंण फडेड..०३

बण्यो असमाण रुधीर बंबोळ, छण्यो ज्यम सोंणींत हंदीय छोळ
गणेंणीय गीद्धाय मांस गटक्क, कणेंणीय राखह देह कटक्क..०४

खणंकत खप्पर खांडाय खेल, डणंकत दांतडीयां डकरेल
असूरांय सुरांय लीधल्ल साथ, मसुराय माळाय मुंडण माथ..०५

कणंकीत कीयल कालीय क्रोध, घणंकीत घाराय अगन्न धोध
भयं कर रुप महा भय कार, जपं कर जोगीय दान जुहार..०६

गीये सुर शंकर मंगण साय, कीये त्रह मांम बचाय बचाय
डडंकत डम्मर बाजीय डाक,हडंकत मारीय शंकर हाक..०७

रणंगण रुप भयानक रुध, कणंगण कालीय देवल कुध,
पीभा दीत पतीय सत्तीय पग्ग, जीभां द्रस जोगीय दानाय जग्ग.८

58 - || लाजाळ लोबडीयाळ||

छंद : सारसी

दोहो

केतो धरीयें कमळजी, माथा हंदीय माळ
जाळव आयुं जोगडा, लाजुं लोबडीयाळ

छंद

अवतार लई ने आवतीती, आपतीती अमरता
जागी ने चारण जेह जपता, सुता वखते समरता
पुजवा न मारे पीर पत्थर, बाई तुं सउ थी बडी
लाजाळ लोबडीयाळ चंडी, चारणी आवो चडी. 01

हींगोळ वरणी हिंगळा, मादाय चारण ने मळी
भाळेल भोळग वाड भोळा, फुनडे व्रांणा फळी
आवड बणी ने अरक थंभे, खोडली रुपे खडी
लाजाळ लोबडीयाळ चंडी, चारणी आवो चडी. 02

बुंदीय कोटे बाबरो, बाटीय हरसूर नो बणी
मैलडी समज्या मालधारी, जोम मोगल जोगणी
पटकीन मार्यो पातकी ने, कोट सुब्बो जो कडी
लाजाळ लोबडीयाळ चंडी, चारणी आवो चडी.03

लैलां तणी लाजा कजुं, दिल्हीय गढमां डणकीयुं
खटकेय राखण रंग राजल खपर खांडे खणकीयुं
सगती धर्युं तन सौम्य सोनल परख भगतां ने पडी
लाजाळ लोबडीयाळ चंडी, चारणी आवो चडी.04

पाखाण हैया पापीयो, पीखंत भोळी पंखणी
सरधार बाकर सेख माथे, नजर अगनी नंखणी
तरहुर तांणी त्राटकी ने, घोर त्राडी तण घडी
लाजाळ लोबडीयाळ चंडी, चारणी आवो चडी.05

काटोय बंधण काळ केरां, त्रीवीध अंबा तेगथी
चडीयो पुकारे चंड मंडी, वार करतुं वेगथी
आवाहने अब आव्य मोगल, हुकळती काढी हडी
लाजाळ लोबडीयाळ चंडी, चारणी आवो चडी.06

राजा तळाजा जात वाजा, मुकी माजा मंडीयो
कागल भयंकर रुप कोपी, दुस्ट ने तें दंडीयो
नहडा नफट ने नीच माथे, झींक वरहावी झडी
लाजाळ लोबडीयाळ चंडी, चारणी आवो चडी.07

मावल पुकार्यो मात त्यां, बेबाकळी त्रंबो बणी
नव नाळीये तें नाद नाख्यो, भुप लाखा ने भणी
संतान जोगीदान सारण, ज्योत दरसन तुं जडी
लाजाळ लोबडीयाळ चंडी, चारणी आवी चडी.08



59 - || अलंकार नी ओळख...||

साहीत्यमां कुल नव रस छे...
दा.त. (दाखला तरीके)
बिभत्स अदभुत बातमे, भणों रुद्र भेंकार
जो करुंणा विर जोगडा, शांत हास्य सृंगार.
(१.बिभत्स, २.अदभुत, ३.रुद्र (रौद्र), ४.भेंकार (भयंकर)
५.करुण, ६.विर, ७.शांत, ८.हास्य, ९.श्रृंगार)
बधुय साहीत्य आ नव रसो ने गातुं आव्युं छे.पण
ऐने सुमधुर साहित्य और रुचिकर बनाववा माटे
अलंकार चंद्रोदय मां घणा बधा अलंकारो नुं विवरण है..
जोके सामवेद मां तो जगती गायत्री ईत्यादी हजारो छंदो नी
वात छे पण आपडे अहींया थोडा अलंकारो पर ऐक नजर
नाखीये जेथी नवा कवियो नेकाव्य रचना मां सरलता रहै ऐज
उदेस्य छे.....
अलंकार ना बे विभाजन छे, १. शब्दालंकार , २. अर्थालंकार
जेमां प्रथम छे जेने समजीये तो....शब्दालंकार मां त्रण अलंकार छे

१. वर्णानुप्रास
जेमां ऐकज वर्ण नी पुनरोक्ति थती होय...
दा.त.
जीवतर जोने जोगडा, जोया जेवुं जाय.
गुंण गणांवी गाममां, गुरुवर गांणा गाय.
प्रथम बे चरण मां "ज" अने त्रीजा चोथा मां "ग"
वर्ण नी वारंवार पुनरोक्ती थी वर्णानु प्रास अलंकार थाय
जेने घणां वर्ण सगाई ना नामे पण जांणे छे....

२.शब्दानु प्रास अलंकार

(यमक अलंकार)

जेमां ऐक सरखा उच्चार वाळा शब्दो आववाथी आ अलंकार बने छे जेने यमक अथवा शब्दानु प्रास कहे छे..

दा.त

त्रय लोचन तडीया. आग उघडीया. धोम धखडीया. तणघडीया
चारण गण चडीया. जोगीह जडीया. दानही दडीया. दडवडीया.
कर दुर दखडीया. सौप सुखडीयां. हिये ह्रखडीया. हणणाटी.
नम हर शिव शंकर. डाक डणंकर. धोम धणंकर. धणणाटी.

३. अत्यानु प्रास अलंकार

ज्यारे बे पंकती ना अंतमां समान उच्चार वाळा शब्दो आवे त्यारे अत्यानु प्रास अलंकार बने....

दा.त.

दाम हाम सुख दैवणी.कंचन करणी काय.
जग पर तारी जोगडा.रख वाळी रव राय.

,

ज्यारे अर्थालंकार मां अनेक अलंकारो छे.....
जेमां थी चाळीशेक नो उपयोग वधु थाय छे...
बिजानी अडधा ने खबर नथी तथा अमुक तो
भाषाओ मां लुप्त थता गया छे...
चालता अलंकारो मां......

१. उपमा अलंकार

जेमां जेवा, जेवुं, जेवी, समान, सरखी जेवा शब्दो आवे

फुल सरीखी फांकडी, कंचन जेवी काय
जोगी जेवा जोगडा, जग्ग हीते स्रग जाय

२. यमक अलंका

ज्यारे एकनो एक शब्द काव्य मां वारंवार आवे अने दरेक वखते तेनो अर्थ अलग थतो होय त्यारे यमक अलंकार बने,

मारग ने अब्ब मा रग, मा रग समजे मौन
जे वण हेते जोगडा ,कहसी दुसरो कौन

(१.मारग =रसतो, २.मा रग= करगरीस नही, ३.मा रग = माता नी जे रग छे ते मौन ने पण समजे)

३. आंतरप्रास अलंकार

जे अलंकार मां काव्य नी वच्चे प्रास आवतो होय जेने प्रास सांकळी पण केहवामां आवे छे जेमके

कडड दंत कडेडाट,नाट नटराज नचायो
धडड धरा धडेडाट, दाट दैतांण डचायो हडड धस्यो हनुमान,दान जोगड दरसायो
गणणण करंतो गान, जान की वर नभ गायो

उपर ना उदाहरण मां प्रथम पंक्ती नो अंत प्रास लई बीजी पंक्ती सरु थाय छे जेमके , कडेडाट - नाट
धडेडाट - दाट
हनुमान - दान
गान - जान

४. उत्प्रेक्षा अलंकार

आ अलंकार मां, जांणे , जेवा शब्दो थी कोई एक वस्तु ने बिजा साथे सरखावाती होय छे

दा,त,
प्रताप जांणे प्राहटे, तरकां पर तरवार
एवी
धरणी माथे धार, जो दे मेघो जोगडा

५, रुपक अलंका

आ अलंकार मां उपमेय ने उपमा तरीकेज बतावाय छे, जेमके

विंणाय कविनी वातडी, आंख्युं चारण आग

तेनो को दन ताग, जडे न कोने जोगडा

(चारण नी वात एटले सरस्वती नी विंणा, अने आंख एटले आग)

६, व्यतिरेक अलंकार

आ अलंकार मां उपमेय ने उपमा करतां पण चडीयातुं बतावाय छे

सबदां तारा सारणा, तरवारुं थीय तेज

अस्त्रो करतां ऐज, जोम भरंडी जोगडा

७. अनन्वय अलंकार

आ अलंकार मां उपमेय ने पोतानी ने पोतानीज उपमा आपी तेनुं अनन्य महत्व दर्सावाय छे दा,त,

शुं उपमा दउं शामळा, हरीवर तुज ने हूं

जगमां कशुं न जोगडा, तुं एटे बस तूं

८. व्याजस्तुती अलंकार

आ अलंकार मां वखांण ना मां निंदा थती होय छे, अने क्यारेक निंदा ना स्वर मां वखाण,

विरता खुब वखांणीये, खई ग्यो सावज खड

जुवो मरद ई जोगडा, भागी न आव्यो भड

९. श्लेष अलंकार

आ अलंकार मां काव्य के वाक्य मां कोई ऐक शब्द ना बे के तेथी वधु अर्थ थता होय छे,

गुजरी जई ने गोतवा तो, बहरी पाडे बूम
जोहरी सुणे न जोगडा, गोहरी थई गई गूम
गुजरी जवुं (बजार जवुं / मरी जवुं)बहरी(बमणा जोरे/ श्रवण सक्ति वगरनी बेरी) जोहरी (जवेरी / जो हरी ,हरी व्यक्ति नुं नाम) गोहरी (गोहार करनार/ गोहरी उर्फ गौरी नुं देसी नाम)

१०. सजीवारोपण अलंकार
आ अलंकार मां निर्जीव वस्तु सजीव जेवुं काम करती दर्सावाय छे, दा.त.
बोल्युं फुलडुं बाग मां, वात सुंणो विदवान
जोया मेंतो जोगडा, कैक दीवाले कान
फुल बोलवुं , अने दीवालो सांभळवी एटले के दीवालो ने कान होवा वगेरे सजीवा रोपण अलंकार ना उदाहरण छे,

60 - || वरह ने वरहाद ||

ढाळ: पग मने धोवा दो रघुराय

वरह ने वरहाद हवे तारा छोरुंय पाडे साद, माटे हवे वरह ने वरहाद जी
छोरुं पाडे साद एने बउ आवे तारी याद, माटे हवे वरह ने वरहाद....टेक
जो तुं नावे तोतो जीव जावे अने बधुं थाये बरबाद जी(०२)
मलक बधो जेने बाप माने (०२) ई खेडून बेहे खाद
माटे हवे वरह ने वरहाद जी
पाडे धरणी प्रेम थी ई नावलीया सूंण नाद जी(०२)
मारीय जाने मेघा घणी, (०२) हवे आंटो तुं ऐकाद
वाला हवे वरह ने वरहाद जी
पंखी झाड ने पांदडा एमां बपैयो नई बाद जी(०२)
ईंदर कां ते आदर्यो आ (०२) तारा वालां थी विखवाद
मानी जाने वरह तुं वरहाद जी
जाड काप्यां तोय जाळुं न लागी आ धरा ने धनवाद जी(०२)
जरी न सोभे जोगडा, (०२) आंम, वडां करतां वाद
माटे हवे वरह ने वरहाद जी

61 - ॥ समजण नुं सूळ ॥
छंद : सारसी

दोहा

कांटा वागे काळजे, समजण ने नई सूख
जोशी हैये जोगडा, दळ दळ भरीयां दूख.
हाथे करी ने होमशुं, कुर खेतर मां कूळ
जोने वागे जोगडा, समजण थई ने सूळ.

छंद

कळीयेल सघळा कोरवो ना करतूतो ने कारहा
सम समे भेतर साद वचमां वचन केरा वारहा
पांडीत्य आ बउं पीडतुं मुंझा वतुं मारी मती
जांणींन मुंगु जोई रेहवुं, गुंगळावे ऐ गती. ०१
हुं भाळतो भडथुं थता मुंज भाई पाछुं भोंयरुं
समजुं छतां सहदेव शुं कउं वेदना फाडे वरु
कोई पुछे तो कई दुं जट ज्ञान द्रस्टी गोतती
जांणींन मुंगु जोई रेहवुं, गुंगळावे ऐ गती.२
जुगटेय जोगीदान थ्युं अनुमान दन ऐ आवशे
चाले धरम जे चाल वातुं जूग जतां ना जावशे
देखाय सामे द्रोपदी त्यां थीर आंख्युं ना थती
जांणींन मुंगु जोई रेहवुं, गुंगळावे ऐ गती. ३
कुरखेत कच्चर घांण कटमी ओरवाना आगमां
मांडी हशे शुं साव माठी भुंड्य पांडव भागमां
पुजनीय जन ने पींखवा नी हाय हैये हबकती
जांणींन मुंगु जोई रेहवुं, गुंगळावे ऐ गती. ४
काळज पीछांणे कान जोगीदान पण कंईना कहे
समजण बनी ने सरप काळो डंख आतम ने डहे
करज्यो न आवुं कोई ने ऐ विनवज्यो मारा वती
जांणींन मुंगु जोई रेहवुं, गुंगळावे ऐ गती. ५

62 - || सराकडीया नी सोन ||
राग: भजां तुंने मात भालाळी

सराकड्य नेह मां सेवी, आई तुं गीयड नी ऐवी
स्वोसो स्वास समर्या जेवी, त्रणे लोक पुजता तेवी
महवाळी कज आवीया माडी, सामटा घोडे स्वार
आंख मां तेदी उतर्यो तारे, खलक जनेता जे खार
उंडण मां आभ ले एवी, त्रणे लोक पुजता तेवी..||01||
चडीयां पाडे रुप चंडीका, जुकवा लाग्यांय झाड
गढ जुनाणा ना प्हाड गणेंण्या, त्रेवडी दीधेल त्राड
जांणे जमरांण ना जेवी, त्रणें लोक पुजता तेवी..||02||
जोई पाडा पर जोगणीं त्यांतो, खभळ्यो रसूल्ल खान
पागडी नाखी नमीयो पाये, भूप ने थई ग्युं भांन
देखी आपा रांण नी देवी , त्रणे लोक पुजता तेवी..||03||
विर कही माये वारणां लीधा, अदका दई आशीस
गलढायुं लग कान मां गुंजी, चारणी केरी चीस
सोनल माने रात दी सेवी, त्रणे लोक पुजतो तेवी..||04||
जोगणीं तुं अन पुरणा जेवी, धिंगलां देती धान
सोन रांणा ना सगती साची, जांण तुं जोगी दान
लाखेंणीन समरी लेवी ,त्रणे लोक पुजतो तेवी..||05||



63 - || मोगल आवो मांडणे ||

माडी तुंतो भोम ने ढांके रे काळो भेळीयो
माडी वळी जबुके सूरज जयोतना जोरे रे
मोगल आवो मांडणे,,,,,
माडी तारु त्रिहूळ रे भाळी ने चमक्युं तालकुं
माडी एना तेज ना फूवारा व्रेमंड फोरे रे
मोगल आवो मांडणे,,,,,
माडी तुंतो उदो रे उदोये करती आवती
माडी त्यारे कंकंण खणंके चारे कोरे रे
मोगल आवो मांडणे,,,,,
माडी जेवी डाढाळी करणी रे देस णोंक मां रे
माडी ऐम मुंछाळी मोगल बेठीय मोरे रे
मोगल आवो मांडणे,,,,,
माडी तारां आखी रे विहोतर लेती वारणां
माडी तने चारणो उपासे चौटे ने चोरे रे
मोगल आवो मांडणे,,,,,
माडी तुने जाजी रे आराधी जोगी दानीये
माडी ऐने खेलव लई ने आयल खोळे रे
मोगल आवो मांडणे,,,,,

64 - जोगीदान गढवी रचित दुहो

सगती स्वारी सिंह नी, अदभूत देंणी आज
जो त्रण गामे जोगडा, सोंप्या रतन समाज

चारणो नी पुज्य सग्ती नी स्वारी ऐटले सिंह (सिंह रासी ऐटले 'म' अने 'ट') जेमां त्रणेय गामो सिंह रासी ना 'म' थी ..मढडा, मजादर , अने मांणेकवाडा, जेमां क्रमशः मढडा सोनबाई मां, मजादर पद्मश्री काग बापु , अने मांणेकवाडा पद्मश्री भीखुदानभाई, ऐम सग्ती कृपा तो छेज पण सग्तीना स्वार नी राशी वाळां गामो ये पण समाज ने अमुल्य रत्नो आप्यां

65 - || कोई पुछो हाल फकीरो ना ||

गझल

कोई पुछो हाल फकीरो ना(०२) नेंणे थी वरहता नीरो ना,....टेक
आ भवरण मां रझळी भटकी ने, पग मां छालां खुब पड्या(०२)
हैया मां हजारो होळी लई(०२) आ दील सळगे दील गीरो ना ,,कोई...
रंगो तो प्रभुये खुब रच्या, पण रंगाळो रूठेल रह्यो,(०२)
भीतर नी भींते लटकेली (०२)आ बिन रंगी तसवीरो ना,, कोई...
ऐ रीत जगत नी जूग जुनी, मन मान्या ने मळवा नही दे(०२)
चडीया रांझा नी चीखो जो,(०२)हजीये छे नीसासा हीरो ना,, कोई...
आखुंय जीवन प्रिती मां गयुं, पण कोई मळ्युं ना पोतानुं (०२)
ऐ जोगी अजब ना खेल हता (०२) हाथो नी चार लकीरो नां,, कोई....

66 - || देखो विजय दानेहरी ||

छंद : सारसी

करणे दीधेलां दान पण, ई कटम माथे कोपीयो
लाजाळ चोपन लाख रोकड, आपतां जे ओपीयो
जेणे उपासी जोगडा, चारण समाजा चाकरी
भडवीर भारत भोममां, देखो विजय दानेहरी,
नरसंग भांसळीया तणां,सिंह ढायसा मरदो सूरा
आखा अडीखम आ उभा, ई चारणो नई थ्या चूरा
शकती उपासक सत्य चाहक,करम उमदा केहरी
भडवीर भारत भोममां, देखो विजय दानेहरी,
मुखथी वदेली मात मढडे, भणावो दीकरी भला
दुस्कर न कोई राह देखो, पुन्य थी कापो पला
जांणे के रमती जोगडा मां आई सोनल ओहरी
भडवीर भारत भोममां, देखो विजय दानेहरी,
कोमळ रदय वांणी विवेकी, चाल उजळी चारणा
दुखीयांय देखी दोडता, ना बंध करता बारणा
अनहद लखी ईतीहास मां,ई खलक मां करीयुं खरी
भडवीर भारत भोममां, देखो विजय दानेहरी,
निंदा करी नई नातनी,पण गंग जळ समवड गणीं
जांण्या न अवगण जोगडा,बस भलायुं जगमां भणीं
वसवुं विदेसी वाट तो पण,धरम धूर कांधे धरी
भडवीर भारत भोममां,देखो विजय दानेहरी,

कर्ण दानेस्वरी तरीके प्रथम पंक्ति मां गणाय पण तेंणे तेना कुटुंब पर ने भायुं पर तो तीर ताक्यां हता, पण जय हो चारण समाज नी, समाज नुं ऐवुं जाजर मान व्यक्तित्व के जेमणे आई सोनल ना शब्दो अनो संदेस जीवन मां उतार्या छे, तथा समाज नी दीकरीयो भणे ते हेतु चारण छात्रालय ने चोत्रीस लाख रोकड तथा वीस लाख फिक्ष डीपोझीट करी तेना व्याज मां छात्रालय नुं मेंन्टेनन्स थई सके तेवी दिर्ध द्रस्टी थी पोतानी समजण समाज प्रेम अने दातारी नो बेनमुन दाखलो कायम कर्यो छे, तेवा सुद्ध चारण विजयदानजी सिंहढायच नी दातारी ने काव्य पुस्प थी वंदन

67 - || काळा सघळे काग ||

बउ बोले नई बाई तो, रहे कटम मां राग
जांण्युं चारण जोगडा, काळा सघळे काग
मात जण्या थी मागता, भोरिंग थई ने भाग
जगत बधी मां जोगडा, काळा सघळे काग
पारवडां कई पाळीये,ई, निकळे काळा नाग
जोय विचारो जोगडा,अहीं,काळा सघळे काग
मलकी आवे मोढडे,ऐणे, दल मां ढांकेल दाग
ई, जोता मोको जोगडा, काळा सघळे काग
माथा कापे मोर थी, अने, पछी घरे सीर पाग
जुठ्ठूं जुके बउ जोगडा, काळा सघळे काग
सिखवाडो समशीर ई, खेचें सनमुख खाग
जाय भुली गण जोगडा, काळा सघळे काग.
तरक बुधी थी तावियें, तोय मळे नई ताग
जुदान दीसता जोगडा, काळा सघळे काग
फूल न होये फांकडुं, तोय, बधे बतावे बाग
जांण थतां के जोगडो, काळा सघळे काग

68 - || श्री लक्ष्मी वंदना द्वादशी ||

छंद : भुजंग प्रयात

तुंही मात हो सात वा रत्न सांणी
तुंही को हरी वाम हाथां वखांणी
तुंही तुं मनो मंथने जग्ग मांणी
सुता सागरा तु प्रकत्तीय पांणी. ||01||

सुरी तुं सदा सत्त करमो करावे
प्रजा हीत्त पुन्याय धरमो धरावे
असुरीय तुं डाकणी सी डरावे
फगी मग्ग से जग्ग सारो फरावे.||02||

असुरां अधूरां तवां तेज तारे
छुपे पाप सारां धरा मांन धारे
मुसद्दी बणे तो मगां मध्ध मारे
अही कारणां पारणां सु पुकारे.||03||

सरन्नांय चाहे सदा जग्ग सारा
परी भीर तो मां प्रजा मे पसारा
तिनो लोक मे ताम धामा तिहारा
असां ओरडे मां दीयो पांव प्यारा.||04||

जती जोगडा तो खडा मा खलक्के
पडा आखडा तुं ऊठाया पलक्के
सदा नेह मातूं चखां मे छलक्के
जगे लक्षमी नाम तोळो जलक्के.||05||

लीयां चारणां वारणां मां उचारी
नमो नारणां धारणां वाम धारी
कई कारणां दारणां दक्ख दारी
बिठो बारणां तारणां री तियारी.||06||

जपे नित जो जाप तोळा जनेता
प्रथीपे दीये राज प्यारा प्रनेता
भली भात पुरीय सुरी समेता
लीखे लेखणींसुं कहे गुंण केता.||07||

अदी धान धैरी धरो बाल धन्ना
गजां लक्खमी मात विद्या वरन्ना
धनां विज्जया आठ माताय अन्ना
जणी जोगडा आश तुही तमन्ना.||08||

सदा चारणां धारणां रेम राखो
कबु कुळ ने ना जरा दक्ख दाखो
जता किन्न जुन्ना नवे नेंण नाखो
भवानी भलायुं भलायुं ज भाखो.||09||

अखंडाय आयल्ल आशिश आपो
नवे निद्ध सिद्धि विसोतीन व्यापो
जुवो जोगडो मां जपे तम्म जापो
कुळां चारणांरा कहट्टांय कापो.||10||
दधी सुत्त देविय केवी क्रपाळी
सदा शेस के देश भावेय भाळी
सजे नाथ के साथ वामा वडाळी
सीता मात तुं रुख मिन्नि रुपाळी.||11||

सुराळी सदा शारदा संग साता
विडाळी वदां चारणां री विधाता
दियाळी तुंही जोगी दांनाय दाता
पीयाळी प्रथी व्योम प्रामेे पुजाता.||12||
(जोगीदान गढवी (चडीया)कृत लक्ष्मी वंदना द्वादशी)

69 - ‖ असाढ ना ओवारणां ‖

आव्यो असाढ घोडा घुमतो रेलोल...(०२)
मेघो घर्णी..(०२) मुछडीये मलकाय रे....
आव्यो असाड घोडा घुमतो रेलोल.....
वरहावे हेत भर्यां वादळां रेलोल..(०२)
कामण गारी (०२) कोळे घरा काय रे...
आव्यो असाढ......
धधकावे नेह जळ धारीयुं रेलोल..(०२)
भोमका आखी (०२) लागणीये भींजाय रे...
आव्यो असाढ .....
हरखी ने थई हरीयाळीयुं रेलोल..(०२)
धरणीं लीली (०२) चुंदड्य मां लेहराय रे...
आव्यो असाढ घोडा .....
आघो ओढी ने लीलो अंचळो रेलोल..(०२)
सायबो देखी (०२) जांणे के सरमाय रे ....
आव्यो असाढ. .....
जरमर वरहावे जोगीदानीया रेलोल..(०२)
मोर कळा मां (०२) ढेलडीयुं ढंकाय रे....
आव्यो असाढ......
आवा असाढ ना ओवारणां रेलोल..(०२)
झाकम झोळे (०२) मेहुलीयो मंडाय रे....
आव्यो असाढ घोडा घुमतो रेलोल.....

70 - खेतर खेड्यां खंतथी

खेतर खेड्यां खंतथी. (हवे) वरह्या केरी वाट.
जळविण तरहे जोगडा. पाधर कोरां पाट
थाकी गई छे ठाकरा. उंचेय देखीन ओड
मेधल तुं सिर मोड. जीवतर माटे जोगडा
माझा मुकशे मोहुलो. बे तण दी मां बाप.
जळ थळ मळशे जोगडा, ठाकर दिये न थाप
वादळियां भर वरहवा. आभ झकुंबे आब
खेडुत केरां खाब. जळ नां कायम जोगडा
आम अहाडो उपड्यो. कोरो कां कड़डाट
धरती पर धडेडाट. जरी पड्या वण जोगडा
वाहन लईने वीरतुं. भेह मतंगेय भा
धरणीं माथे धा. जळ व्रहावा जोगडा
(जो वाहन मां भेंस नुं वाहन के हाथी नुं वाहन होय तो वरसाद सारो पडे ऐवुं वरसाद नुं ज्योतिस कहे छे..माटे भेह(भेस) मतंग (हाथी) ना वाहन थी आववा विनवणीं करेल छे)
खुट्यां खरां आ खलकमां. पुन्य नही पण पर्ण
वन वगडा ना वर्ण. जोतां जडे नई जोगडा
काहट खातर कापीयां. वनरा भुंडे वेह
जाड ववारो जोगडा. (तो) मदछक वरहे मेह
लाकड हंदा लोभमा. वन थी बांध्यां वेर
लीयो व्रसा वण लेर. जोम अहाडे जोगडा
गोकळ कानड गावतो. वनरा वन नी वात
पण,जंगल माथे जोगडा. घोर करे जग घात
वादळ वरहे वालथी. हरियां वन ज्यां होय.
जाप जप्या वण जोगडा. भूदर आवे भोंय
वादळ मां कउं वालथी. संताई जाने सुर.
तो
भोम परे भरपूर. जळधर वरहे जोगडा.

71 - || कहे न साचुं कोई ||

आतम आ अकळाय छे, जोगी चडीया जोई
सारी वातुं सौ करे पण, कहे न साचुं कोई
दुखीयारी कोई दीकरी, रह रह आंहू रोई
जळीन मरती जोगडा, कहे न साचुं कोई
नात्य अमारी नवलखी, हीये हरख शुं होय
जुठ पाखंडी जोगडा, कहे न साचु कोय
आयुं कही उपासवी,पाछी, दूभवे वातुं दोय
जरी न गोठे जोगडा,पण, कहे न साचुं कोय
कठण कलेजा कारमां, ई, नात अमांणी नोय
जाय बळी घट जोगडा,तोय, कहेन साचुं कोय
हुंज वडो ई होड मां, खुद धृम बेठा खोय
जाळव पाछो जोगडा, कहे न साचुं कोय.
सरग नरग संसार मां, देखल वातुं दोई
जगत पिता विण जोगडा, कहे न साचुं कोई.
पातक रोंगा पिरहता, धृमने नामे धोई
जग वेपारी जोगडा, कहे न साचुं कोई.
मात पिता बंधु मलक, फुवा कहो के फोई
जुठ्ठो सब जग जोगडा, कहे न साचु कोई.
मुवा लगण माया मळे, रहेता पाछळ रोई
जीवन सगां सउ जोगडा, कहे साचु कोई.
माटी वाहण मानवी, हेम हरी रट होई
जग आखा ने जोगडा, कहे न साचु कोई.
आघारीत अनुमान नी, जगमां वातुं जोई
जीव उद्धारक जोगडा, कहे न साचु कोई.

72 - || आई लीये अवतार ||

दरीया सोखण देवियुं, चारण मां चकचार
जग्ग जणेता जोगडा, अाई लीये अवतार
होय समंदर हाकडो, (के)बाकर होय बजार
जरी हटे नई जोगडा, (ऐवी) आई लीये अवतार
मोगल करती मावडी, उदो उदो उदगार
जग्ग घ्रुजावण जोगडा, आई लीये अवतार
सूरज बांधी छेडले, धाबळीयुं धरनार
जात्य अमाणी जोगडा, आई लीये अवतार
कटक जमाडे कुलडी , वाती जाहल वार
जेरण दांता जोगडा, आई लीये अवतार
चारण जो घट चिंतवे, (तो)हरदम हारो हार
जपट्युं देवण जोगडा, आई लीये अवतार
आज लगी अवनी परे, पाम सक्या नई पार
जननी चारण जोगडा, आई लीये अवतार
माघव जेने मानतो, सघळा जग नो सार
जो घर चारण जोगडा,ई, आई लीये अवतार
अनीत हारे आखडे, तांण उभी तरवार
जोम द्रसावण जोगडा, आई लीये अवतार
घाह सुंणे त्यां घ्रोडती, विपदे करती वार
जगती ज्योतुं जोगडा, आई लीये अवतार
कागई रुपे कोपतां, घ्रुज तळाजा घार
जोगण ऐवी जोगडा, आई लीये अवतार
पोगी झट पाताळ मां, खंते तु खोडियार
जीव बचावण जोगडा, आई लीये अवतार
करवो घटतो कायमी, सोनल नो सतकार
जीवन सुधारक जोगडा, आई लीये अवतार

73 - || भवाई वाळो भेख ||
गीत: सांणोर झुलणा

दोहो

"कांडे पेरे कंकणां,पण, रज नई मां नी रेख
जो लई फरता जोगडा, भवाई वाळो भेख"

, गीत

कठण कळजुग मा जुवो केवुं बने, बहू रुपी बनी फरे बायुं
समजदारो जरा सांन मा समजज्यो, आंम अवतार ना लीये आयु, ०१
हजारो वरह नी तपस्या होय ने, भवो भव तणी जो होय भगती
जोगणी तोज अवतार ले जोगडा, छुंदणा कर्ये नई थाय सगती, ०२
मांडीयुं आ बधुं मलक मा मालवा, गांडीयुं गदोडे कैक गांडा
भेख लई भटकती कैक आ भुवण मां, खेल करवा जुवो लीये खांडा, ०३
कैक कंकू हथेळीम थी काढता, धुंणी ने बांधता कैक धागा
करे फाळा बधे सरम पण ना करे, बह बहे लुगडां बाग बागा, ०४
मोकळा केस ई करी ने मालती, सेह के सरम नई ऐक छांटो
गमे त्यां धुंणवा बेहती गाममां, फद्दीयां तर्णी ई भरे फांटो, ०५
भवां नुं रुप लई भवाया भमे छे, नमे छे ऐमने कैक नेता
चारणो जुवे पण चुप बेसी रहे, कोई ना ऐमने कांई केता, ०६
कोई धुंणज्यो नही मात सोनल कहे, तमाहा करो छो केम तोये
बंध करजो हवे नाटको आ बधा, सूळी घा नई सरे सोये, ०७
ऐक बे नाम जो होय तो आपीये, घरा पर उमट्यां कैक घाडा,
सगतीयुं थवा जे करे सोखडा, वेवली तणां छे भर्या वाडा, ०८
भुवा ओ तमे के तमे तो भवाया, वेह करवा बधी केम वळगी
नाम ई सगतीयुं तणां तो नो लीयो, आई तो आ थकी साव अळगी, ०९
नागणी राफडा बार ना निकळे, ई बधी खेल ना करे आवा
जागती जोगण्युं जीवे छे जोगडा, दिखावा तणा नई ईने दावा, १०

74 - || वरखा रुतना वारणां ||
(राग: मोर बनी थन गाट करे नी चाल)

दोहो

धिंगाय धरती ना धर्णीं, भावे मोदक भोग
तारी
वरखा रूत ना वारणा, जो ले चारण जोग,

, गीत

मेघ अती मलकाट करे..मन(०२)
करी ऐलीयु आज असाड नी सांजेय..
घोर नभे घुर्रराट करे ..मन मेघ अती मलकाट करे..टेक
कडडंम कडडंम कडडाट करे
घनघोर ग्रजी घुघवाट करे
जांणे ईन्दर हाथीय फोज लई
समशेर नभे समराट फरे (०२)
ओली मेघ नी घाराय मोभ पडी...
दडी आजे नेवे दडेडाट करे. ..मन मेघ अती मलकाट करे..||01||
ऐवी विजळीयुं वळळाट करे
धरणीं धडडाट नी आश धरे
ओली ढेलडीयुं संग ढुंग रमी..
केहु केउ मोरा कलकाट करे (०२)
जांणे जोगडा चारण जाप जपे...
गगनेय पियु गरजाट करे..मन मेघ अती मलकाट करे... ||02||
ओढी आज धरा लीली चुंदडीयुं.
पियुं नेह तणां पथ मां पडीयुं
तरबोळ हीलोळ हीया करती
अमियुं भरीयुं ऐनी आंखडीयुं..(०२)
ऐना नेह नदीयुं ना नीर बनी,
आ‍ेल्या पादर मां पुर पाट करे, मन मेघ अती मलकाट करे... ||03||

फडडाटीन फोर पडे फळीया
एनुं नीर झीली न सके नळीयां
जोगीदान अती गुलतान करी
जुवो मेघ अने धरणीं मळीयां..(०२)
धरवा सट आज धपी धरणी,
पेलां दादुरीयां डहकाट करे, मन मेघ अती मलकाट करे... ||04||

75 - || ईरखा ने अंहकार ||

दोहा

कई कई ने थाक्या क्रशन , खुट्यो कदी ना खार
जगथी जशे न जोगडा, ईरखा ने अंहकार.०१
देवो पण थाता दखी, चडीया जो जुग चार
जवां सदा थी जोगडा, ईरखा ने अंहकार.०२
पोतानी आखी प्रथी, करे न होय करार
जुवो सिकंदर जोगडा, ईरखा ने अंहकार.०३
फकिर थया पण लई फरे, ममता तणो मदार
जो में त्याग्युं जोगडा, ईरखा ने अंहकार.०४
सबळ करो जब साधना, ईरखा परे अपार
जीती गयो हुं जोगडा, ऐ पण थ्यो अंहकार.०५
ममता ने माया मुकी ,सूंन्य थया मां सार
जगत पुरांणुं जोगडा, ईरखा ने अंहकार.०६
घाम सकळ फरशो घरा,पुज्ये न थाशो पार
ज्यां लग घट मां जोगडा, ईरखा ने अंहकार.०७
दबवी सके न दैत ने, ईश्वर ना अवतार
जीवे हजी पण जोगडा, ईरखा ने अंहकार.०८
अंगत पर ना आवसे, एज करे अणसार
जीतवुं कई रीत जोगडा, ईरखा ने अंहकार.०९
ब्रह्मा ने शिव बाघता, हुं पद कर हुंकार
जीव जीते शे जोगडा, ईरखा ने अंहकार,१०
जुठुं खरुं शूं जोगडा, समज पडे नई सार
ईश्वर ने पण आवता, ईरखा ने अंह कार,११

76 - || वर्षा ना वधामणां ||

सारसी

कडडाट कडडड ग्रजे गडडड हडड वादळ हालीयां
धडडाट धडडड प्रथी पल्ले नही झल्ले नालीयां
दडडाट दडडड नीर दोड्यां शेरीयुं भर साजीयां.
अण वखत अंबर मेघ डंबर गगन गंबर गाजीया ||01||

समशेर लई ईन्दर सुरातन उतर फौज्ये आवियो
काळा कटक घन केर करवा शकळ गगने सावियो
वरळाक छम धर व्योम विजळ वादळां दळ वाजीयां
अण वखत अंबर मेघ डंबर गगन गंबर गाजीया ||02||

रंगेल काळां रेट वादळ रच्या आभे राहडा
व्रेमंड ने भुं खंड भेळां मच्या खळखळ माहडा
असमान जोगीदान धारा धोध मुसळ धाजीया
अण वखत अंबर मेघ डंबर गगन गंबर गाजीया ||03||

घन घोर गगने घटा बंधी वाल धरणी वरहीयां
भालां बणीं भोकाय पांणी पंड्य परणी परहीयां
परण्यो वहे परदेह ऐवा देह विरहण दाजीया
अण वखत अंबर मेघ डंबर गगन गंबर गाजीया ||04||

जोगण जपे जळ जोगडा तप तपो बळ धर तांणीया
धरणीं धणीं जळ धोध धारे आभ वादळ आंणीयां
फडडाट फोरे घुमड़ घोरे झींक परहळ झाझीया
अण वखत अंबर मेघ डंबर गगन गंबर गाजीया ||05||

(रबारी नी 133 साखो ऐकज गीत मां)
. विसोतर =२०+१००+१३ =१३३
. दोहा
रंग तने बउ रायका, भोळो भाळ्यो भोम
जात धरम मां जोगडा, जबरुं तारुं जोम..01
अंतर नेह उचारता,राम रेडी नो राग
जेना माथे जोगडा, पेरंभ घर नी पाग..02
कहळ रबारी कुळआ,रखे जडे नई रग्ग
जांणे ओछा जोगडा, पोगे नई त्यां पग्ग..03
अंतर मां मने उमट्युं, हिरा वंशी पर हेत
जांण्या साचा जोगडा,राम तणीं पग रेत..04
. गीत : सांणोर झुलणा
हिरा वंशी कदी हिमत ना हारता, धारता हसो ते थसे धरणी,
चितारी जोगडा चारणे चाहथी, विहोतर नात नी वात वरणी..05
कैड कोला अने करमटा कोड ने, काछेला कळोत्रा होय करमी,
कोडीयातर अने भोळा कटारीया,धरण पर भाळीया खुब धरमी..06
खांभल्या खटाणा खेर खारोड ने, खडेर खाह्वांणीया खेल खेले,
गळचरा गंभीरा गोहीला गुर्जरा, गडर गरगट्टीया रमे गेले..07
घाटीया घेंघवा वळीे घांघोर ने, चावडा चरकटा जण्या चोरा,
चोपडा चरमटा जुथ चौहाण छे, जोमणा चेलाणा जीड जोरा..08
आल जादव उम्माट् टमालीया, झोटाणा अजाणा आग झरणा,
आमला ईलवा उमाई उलवा, धारभुट्टीया ईहोर धरणा..09
देव देसाई डाभी डीआा डोडीया , फुदे धल फीट ने ढगल धामा,
नार नागेश नोंगो अने नोरी ओ, सोलंकी पुंछल्या थाय सामा..10

पड़त पढीयार परमार ने पवारो, पाट्यवाळा अने पान कट्टा,
बार बाळश ने पस्यवाळा बल्या, बुचीतर बढ्य बारड बट्टा..11
भाटच्या भांगला भुखा ने भुंहला, भुंगलीया भद्व भुंगोर भोकू,
भराई भोण भाखर अने भोमरा, मरकटा मांगरा जुवे मोकू..12
मुछाळा मारसुंदा न मोरी वळी, भुंभल्या भाडका लुंणी भोपा,
मरद मकवांण राठोड ने मारु ओ, रोझीया रोझ राडा न रोपा..13
मैयरा मोयडव अने मोटण तथा, हुंण हुंचोल ने हरण हारे,
लवतुका ललुतरा लो अने लंघरो, वाघडा वच्छर ने वैश वारे..14
वैई लोढा वसा वात्यमा वेराणा, वाघेला वांगला अने वावा,
वंश वाढेर सांबोड सेखा वधु, चतुर चडीया जुवो जगत चावा..15
सिलोरा साव धरीया अने सिंघलो, संग सेवाळ सेलार सरखा,
सांगा वाडीया ने साव धोरो समा, पुनई मां जोगडा जाय परखा..16
रबारी रायका रई तणी रैयतुं, गोकळी गोप थई गगन गुजे.
सांढ काजे घड्यो गावता सारणो, प्रकट ई हीरा नो वंश पुजे..17
सधी ने सिकोतर दिपां गोगो सकत, विहत ने मेलडी वेंण वातुं,
जहु लींबोच सिमोज ने जोगणी, भवां चेहर बई भर्यु भातुं...18
रेगडी गावता रबारी राव थी, भाव थी मात नी करे भगती,
रगीजोगडा जगाडे रवेची, समरती साय मा करे सगती...19
(रबारी रायका नी उजवळ जीवन प्रणाली थी जीवती भोळी भगती वान जाती नी १३३ साखो ने समावतुं गीत सांणोर, केसेट आल्बम "रखवाळी रवराय" माटे

78 - || पारेवडी ||
राग ; आगमवांणी ने मळतो

पेहला खोळानी दीकरी होय त्यारे परिवार जनो तेने तेडी तेडी ने फरता होय छे..पण दीकरो जन्मे ऐटले ऐने ऐनुं मानपान दीकरा ने मळवा मांडे..भाई माटे नानी चानकी मा बनावती होय दीकरी ने पण ईच्छा होय पण कही न सकती होय ..त्यारनी दीकरी नी मनो वेदना..शुं हसे ?
पिता ना घरे पण एने पाराका घरनी वस्ती कहे अने सासरीया पण पारकी जणी कहे हवे मारे पोतानुं कोने केहवुं ? कंईक आवा सवालो ने काव्य रुपे आपनी सामे मुकु छुं ..कदाच आपने गमशे ....

पेला रे खोळा नी भोळी पारेवडी...
गाय अने करे छो गुल तान रे...
छांनी रे रुवे छे ..ऐने तमे सांभळो .
भाई त्यारे थासे साचु भान रे.....पेला रे...टेक
भेळो रे जमाडे बापु ..भाई ने ...
ताळीयुं दईने लीये तान रे...
विर रे आव्यो ने मने सउ विहर्या ..
कोने हवे खोळे बेहुं कान रे....पेला रे ...०१
चुले रे चडे छे विर नी चानकी...
एवा हसे ऐनां ये अर मान रे...
नाखे रे निहाको कूणुं ऐनुं काळजुं..
मागे ऐतो पेला जेवुं मान रे.....पेला रे...०२
पिता रे कहे ई वसती पारकी...
सासरीया करे ऐवीज सान रे...
आत्यमो कहे के हवे कोंण आपणु..
जरा मने क्योने जोगीदान रे...पेला रे..०३

79 - || श्री कष्ण अर्जुन ||

छंद : पद्धरी नी चाल

कटी बंध खेत्र कुरु क्रिष्ण चंद. वसू देव पुत्र धट रटत नंद
नटखट नटवर कीन संख नाद ड़ंणकंत डणणण दीय सिंघ साद.
अरजण रण दरसण करत काल.करसण धर धणणण धरत ढाल.
बणणण बरसत गांडीव बांण. तणणण अरजण दीय पणछ तांण.
सणणण रत सौंणीत उडत सोळ. गणणण नभ ग्रिध्धण घुमत गोळ
रणणण बज रथ चक रमत रंग. ठणणण कुद ठैकत कटत अंग.
जणणण कर झुल्लत खलक खाट.सणणण हथ चक्कर सणसणाट
दरसत रण वाळत दैत दाट. नभ धर नटराजन करत नाट
चारण गण चडीया ग्रहत चाळ. मधु कैटभ भरखण मूंड माळ
जळळळ उतरत घर जोगीदान. गणणण कर जगपर क्रिष्ण गान.

अवनवा समाचार, चारणी साहित्य, रचनाओ, ई-बुक, रोजगार समाचार वगेरे माटे अवश्य ऐकवार चारणी साहित्य (www.charanisahity.in) ब्लॉग नी मुलाक़ात ल्यो.

80 - || मातृ आयण ||

दोहा.

सुभ संपत आयु सगत.यस स्वास्थय अरु आन
जपत स्तोत्र यह जोगडा.प्रम पद करत प्रदान.||01||
सर्व परि सगती स्मरण.अखिलेस्वरि अखंड
जगन पुकारे जोगडो.प्रकटो मात प्रचंड.||02||

. छंद : शैल भुजंग

ॐ सती साधवी भव प्रीया तुं भवानी.जया जोगणी तुं परा शूल्ल पानी.
कवच नाम तारु कलीकाल कामा.सतक नाम जापे द्रसूं मात सामा
भवां खेचरी भूचरी बोल खम्मा. मया रक्ष तुं रक्ष तुं रक्ष रम्मा.
हवे दर्श दूर्गा दीयो मात दानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||03||
नमो आर्य पिन्नाक धारीय आध्या.नमो सुंदरी सांम्भवी सर्व साध्या.
नमो बुद्धी हुंकार ने चित्त रूपा. नमो चैतना सत्य आनंद् स्वरुपा.
अनेकाय वर्णा असीम विक्रमा तूं.नमो वन्न दुर्गा महाबल्य मा तुं.
अनन्ता नतूं मां अमुं थी अजानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||04||
नमो मोचनी भव त्रिनेत्रीय तन्ना.नमो चंद्र घंटा महा तप्प मन्ना.
नतो जांणतो मात त्यारे नीहाळी. प्रखीती तने साव पासे पासे प्रचाळी.
करुं पस्यतापो हवे दर्श आपो. प्रजाळोय पापो छुडावोय शापो.
बकुं बाळ तोळो मया ऐक बानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||05||
नमो चित्त चित्राय भावीनी भव्या.प्रियं रत्न भाव्या अपर्णा अभव्या.
मुनी याज्ञ वल्कल्ल मार्तंड मानी.जपी जोगीदाने वसीस्ठे वखानी
नमो सर्व शास्त्रो मयीं मात सत्या.परीधान पट्टांम्बरी मात प्रत्या
महा सर्व मंत्रो मयी जोग जानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||06||

नमो दक्ष कन्या सती तुं सुवर्णा.नमो दक्ष यज्ञम विनाशीनी वर्णा.
नमो अज्ञी ज्वाला क्रुरा काल रात्री.दयालीय नित्या क्रीया सिद्धी दात्री.
नमो भद्रकाली करालीय कात्या.नमो घोर रूपा असूरांण घात्या.
परा पाटला अस्त्र सस्त्राय पानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||07||
मधू कैटभां ध्वंस कारन कूमारी.महीस मर्दनी विश्व कल्याण कारी.
तुंही चंड मुंडन विनाशीनी चंडी.नमो शुंम्भ नैशुंम्भ हंन्ता हखंडी.
नमो राज लक्ष्मीय नारायणीं तूं.महोद्री जगत्त सर्व तत्वम जणी तूं.
नमो मुक्त केशी मूखी रौद्र मानी. प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||08||
नथी जांणतो मंत्र के तंत्र माता.विधी यंत्र नी हुं न जांणुं विधाता.
नथी जांणतो ध्यान के ग्यान धारा.नथी जांणतो अर्थ हुं वेद चारा.
प्रणायम न जांणुं हुं अज्ञान योगी. जपुं नाम तारुं जुंवो दान जोगी
न मुद्रा न यज्ञो न स्लोको सयानी.प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||09||
कलम सिद्ध ज्ञाना सवीत्रीय शेषी. परम ईश्वरी विष्णुं माया तपेशी.
पुरुषा कृती वैष्णवी ब्रह्म वाणी.त्रिपुर मालीनी शैव तुल्या त्रीसाणी.
दता धर्म अर्था अरू काम मुक्ती.अनेकास्त्र धारी जलोद्रीय जुक्ती.
महा मोक्ष दाता जूगो पार जानी.प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||10||
कर्यो आभमां मात ऐवो कडाको.धरा तल वितल मां थयो मा धडाको.
सुंन्यो निज्ज काने जुवो जोगीदाने.अहो आत्म तत्वं प्रकट्टी प्रमाने.
दीयां दर्शनो शीव तत्वं समाने.अहा मातृ आयन्न रखुं पद् रमाने.
द्रशी सर्व तत्वेय ऐको समानी.प्रगट्टो प्रकट्टो प्रगट्टो भवानी.||11||

. दोहा

तेज अलोकीक है तमा. समा सके ना सब्द
जिवन धन्य कीय जोगडा.प्रसियो मात प्ररब्द.||12||
अर्पण जग आदेश्वरी. उकल्युं रहस्य अजान
जे दरशन भये जोगडा. पाठत पुन्य प्रमान.||13||

81 - || रुडां रे रखोपां ||

प्रभाती

रुडां रे रखोपां जेने रव राय ना..काळ नीय फावे नही कारी
वागड धराळी तुं नो वंदीये, चडीयो गाये रे चीतारी.....टेक.
मारकंड गाई तुने मावडी..पांडवांये जुद्ध मां पोकारी..
संख रे फुंकी ने थई साबदी, हाकला मारी ने होंकारी....रुडां रे..०१
मावल बोलावे साबो मावडी, सोभी सिंह नी सवारी..
नाद रे करेला नव नाळीये, अरडूं साखे अव तारी...रुडां रे..०२
भेळी रे रमेली नोघा भोप नी, शंका कोय दी न सारी..
जगडु उगार्यो तेंतो जोगणी, खेड्यो दरियो खोंखारी...रुडां रे..०३
जुग थी पुरांणी तुं ने जांणीये, बावन अखरां थी बारी..
जाळव कळी थी जोगीदान ने, आयल लीयो रे उगारी...रुडा रे..०४

82 - || सत संग ||

अंतर रे आनंदमां. रदय गुलाली रंग
जिवन उजाळे जोगडा. साजणीया सतसंग.०१
घटमां जांणे घोळियुं. भगती केरी भंग
जबर नशीलो जोगडा. साजण आ सतसंग२
चाखे ई चकचुर हो. देखण हारा दंग.
जांणे अमरत जोगडा. साजण आ सतसंग.०३
सतगुंण रेशे संगमां. तमस न करशे तंग.
जबर दिखंतोे जोगडा. साजण ई सतसंग.०४
आवे जांणे अगमथी. गगन उछळती गंग
जाळे पातक जोगडा, साजण ई सतसंग.०५
क्रोध अहमने कापशे. जीतवे आतम जंग.
ज्योत करे घट जोगडा. साजण ई सतसंग.०६
करी सके ना कामजे, नवे ग्रहो ना नंग.
जुवो करंतो जोगडा. साजणीया सतसंग.०७
संत थता क्रम छोडता. मदमां छक्या मलंग
जीवन सुधारे जोगडा. साजण ई सतसंग.०८
अंतर ज्यारे ऊगशे. ढांक्या रहे न ढंग
जळके वांणीं जोगडा. साजण ई सतसंग.०९
अकळ रात अंधार ने. पटके जेम पतंग
जिवन तमिर पर जोगडा. सबळ तेज सतसंग.१०
भेतर ने भगवुं करे. चितडुं करशे चंग.
जोग सधावे जोगडा. साजण ई सतसंग.११
मुळ थी मेटे मन तणां. तुसणां राग तरंग.
जगवे आतम जोगडा. साजण ई सतसंग.१२

83 - || जरा ढळंता जोगडा ||

दोहा

डगमग काया डोलसे, स्वासा पडशे सोस
जरा ढळंता जोगडा, जाय जवानी जोस.०१
चरमई जासे चांमडा, रुप रहे नई रंग
जरा ढळंता जोगडा,अबखे पडसे अंग. ०२
आज तने अभीमान छे, भाय जवानी भाय
कंपी उठसे काय, जरा ढळंता जोगडा. ०३
कामण आ जे काय ना, त्रिसां दाह तलक्क
खोटा जांण खलक्क, जरा ढळंता जोगडा.०४
जुठ जवानी जांणीये, मोह मुकी ले माळ
कोतर खासे काळ, जरा ढळंता जोगडा.०५
खुब जवानी खोलती,ओसव अंगो अंग
पडसे देह पलंग, जरा ढळंता जोगडा.०६
पोताना नई पुछसे, भाव विनाना भाव
अंगत नई के आव, जरा ढळंता जोगडा.०७
आँख्यु सामे आवसे, करीयल भुंडा काम
रजू रहे नई राम, जरा ढळंता जोगडा.०८
श्रवण पछी नई सांभळे, देख सके नई द्रग्ग
स्वास धमांण्युं सग्ग, जरा ढळंता जोगडा.०९
लेसेय टेको लाकडी, मांणह दे नई मग्ग
पडसे आडा पग्ग, जरा ढळंता जोगडा.१०
जे भटकेल जवानीये, छोडे न कोदी स्याम
ऐनी, रसणे नावे राम, जरा ढळंता जोगडा.११
चितरे ठाकर चोपडा, समजो बात सुजान
तो, भेळो रे भगवान, जरा ढळंता जोगडा.१२

लींबु बे लटकावतो, खलके फरतो खांट
डोहा न पडती डांट, जरा ढळंता जोगडा.१३
हेमर जेवो हालतो, वदतो ठरडां वेंण
नेजां मांडे नेंण, जरा ढळंता जोगडा.१४
आज जवानी आडमां, कह्युं धरे नई कान
ऐने, तूरांय थासे तान, जरा ढळंता जोगडा.१५

84 - || रवराय पचिशी ||

दाम हाम सुख दैवणी.कंचन करणी काय.
जगपर थारी जोगडा.रखवाळी रवराय.|| 01||
आरत नादे आवणीं.घाबळ वाळी घाय.
जरी रुक्या वण जोगडा.रखवाळे रवराय.||02||
उठतां वत यादी करी.पडे नित्य जो पाय.
जीवन उजाळे जोगडा.रखवाळी रवराय.||03||
ताप हरे मन तन तणां.सितल रखे सिर साय.
जो भज भावे जोगडा.रखवाळी रवराय.||04||
जो रचना तुज जोगडा.गरवा सादे गाय.
हजी करे मां हाकला.रखवाळी रवराय.||05||

"छंद : नागणीं"

नवेलख लोबडी ओढती ओपती.थोपती घरम अघरम उथापे.
रुंड दळ चुंड चामुंड बण चोळती.घोळती अहर रत झपट घापे.||
जण्यों जप जोगडो जपंतो जणेता.प्रणेता पसारी आव्य पांखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणे.रखोपां आई रवराय राखे. ||06||
अगम तुं ईशरी असुर आरोगणी.जोगणीं अमों तोळा जणेंला.
रसण पर रटंता तोतरा जप तवां भवां नव वेद कोई भणेंला.||
भेळीया घारणीं भवो दुख भंजणी.व्यंजणी अखर अम जीभ भाखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें.रखोपां आई रवराय राखे.||07||
वावडो शियाळु वात ना व्रजाळी.प्रजाळी पाप रव दीयण पंडी.
घरा वागड महीं घरम री घारणी.चारणी वडेरी तुंह्ज चंडी.||
जगत उद्धारणी अहर संवहारणी भवां जप चार दस भुंवण भाखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||08||

झणंके झांझरा ठमंके ठाहरा रास कईलास लग रंग रेले.
समद ढंढोळवा राखहां रोळवा खडग लै खलक मां खेल खेले.
कचेरी भुज्जरी गांण से गुज्जरी नवे नव नाळीये नाद नाखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||09||
भुवा नोंघा तणें रमत भेळी रमे भुज्ज ईक तुज्ज दरीयांण दंडी.
शाह जगडु तणां वांण नी तारणी चारणी चतु जुग तुज चंडी.
हारणी कहट तुं मारणीं दहट तुं रहट कर रदय मह रेम राखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||10||
ठेह रा ठमंके धरा पड धमंके चमंके व्रमंडा चौद डोले.
नेवरां झणंके रणण बज रमंके खणंके चुड मह भाग खोले.
भ्रमांडे भमंती राहडा रमंती जमंती अहर ना रगत चाखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||11||
सांज ने सवारे गुगळ रा धुप दै उगमणे आसणे नैण मुंदे.
सकळ मन कामना पुर्ण करती सगत वांझीया खोळले बाळ खुंदे.
असा परचा दीयण आई तुं ईशरी नीशरी नवय धर नजर नाखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||12||
पाठ तव प्रेमसे नीत करे नेम से रेम से रदय री रीझ लावे.
चंडीका चारणी करम सत कारणी धारणी सकळ मन धीज धावे.
ठाम घर हाम भर दाम रुप दैवणी व्योम धर सुरज ने चांद साखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपा आई रवराय राखे.||13||
जीव ने शिव गण जाप तोळा जपे तपे तोळा बळे नखत तारा.
कंडारि भेळीये सुर कोटी भवां धवल जळ गंग नी धोध धारा.
सुरग पाताळ भु सकळ तुजने नमे दरद हरणी कही देव दाखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||14||

मात ममताळ तुं मळी भाग्ये मलक झलक तव फलक लग तेज फोरे.
मलकते वदन ईक पलक पापो जळे चळे नह वचन नव घेन घोरे.
धन्य वागड भले धोम हो धखंतो नीर स्रोवर हीयां हेम नाखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||15||
जाय छे धरम ई जाळवो जोगणीं भोगणी वात मां नात भागी
अहम ईरशा कटो मान भेरे मया दया री जोगणीं देख जागी.
खुंदवा खोळला पधारो खलक मां मलक मां वधारो लाज लाखे
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||16||
गगन गुंजावती आई तुं आवती धावती धाबळी शिस्श धारी.
सजह धा सुंणेतां जरी मां जणेतां पुगे तुं प्रणेता बार्य बारी.
आपीयां वचन तें याद अंबा अमुं हाथ वंदे पदे माथ नाखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||17||
अणुं ये अणुंमां वास विस्वे हरी केहरी बर्णीं तुं अंब ओढे.
कालीका ज्वालीका डमत हरडाक तुं पाकथळ हींगळा नाम पोढे
भोम तुं गगन तुं अगन तुं नीर तुं तेज तुं विचरती वायु वाखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||18||
हिया ना भाव पे करंती हाकला डाकला पडां सम दैत ध्रुजे.
थाकला पाकला सकल आ सारणां पारणां बंधणीं मात पुजे.
अनल हक आई तुं ईश आलेखणीं लेखणीं चारणां नमण लाखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||19||

रुचा ना रंग मां रुशी रुग वेदना वेदना काटणी मात वंदे.
यजु ने अथव मां ताम धामे तवां साम वेदे तुने गाई छंदे.
पुरांनो कुरानो हदीस के ईश मां भवां कीं जोगडो भेद भाखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||20||

चहु जग चारणी आप उद्धारणी कारणी करम नी मात कामा.
विकट विध्दारणी धरम नी धारणी तारणी रवेची नाम तामा.
जाप तोळा जपे नित्य जो नरणमां चरणमां अमी नां घुंट चाखे
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||21||
सारदा बर्णी तुं रचावे आरदा रदा ने रसण तुं मात राजे.
बर्णी बेबाकळी वार करती वटे रटे जो कुंख नां कहट काजे.
जण्यांने जखमजो जगतमां जडेतो जनेता सहजपण केम सांखे
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||22||
व्यसनी थी वेगळा रहे सउ वालथी धीडी बण जोगर्णी जनम धारो.
आई तुं अवतरी अवगता आतमा तेर पेढी तणां मात तारो.
कुंखना ने कबु कहट नावे कजु वेग थी श्राप ना बार वाखे
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||23||
अखील ब्रहमांड आ आई ना उदरमां भुदरमां चारणीं मात भाळी.
चंद्र भागा महं म्माय हींगोळ तुं कोप दुरगा बर्णी तुंज काळी.
द्वैत आद्वैत ना उकेली अंचळा भवां हर रुप मे ऐक भाखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||24||
वेद मां भेद ना छेद नी वातडी पातडी जीभरो केम पामुं.
ब्रहम तुं शिव तुं जीव तुं तत्व तुं सत्व तुं शबद मां केम सामुं.
तुंही तुं तुंही तुं सरव व्यापी रही देखतां अवनवां द्रश्य दाखे.
दान जोगी दता भाव चडीयो भणें रखोपां आई रवराय राखे.||25||
(जोगीदान गढवी रचीत रवराय पचीशी)

जोगीदान गढवी ,मो नं 9898360102 / 9898365826

. .....जय भगवती आई मां रवेची रवराय.....

85 - || गमती आ गरवी गुजरात ||
राग : कसुंबी नो रंग /वाया विरम गाम

हारे मने गमती आ गरवी गुजरात ..(०२)
हे जेनी भारत मां नोखी छे भात....टेक
हे..ज्यां विरो ने सहीदो ना उभा छे पाळीया...
घोडा नी खेली घमसांण...(०२)
हे,.ज्यां जाडेजा जेठवा ने खळके रत खाळीया..
खाचर वाळा ने खुमांण...(०२)
हे ..ज्यां बहादुरो बंका दे दुनिया मां डंका ने..
पंकाता हाले प्रखीयात......हारे मने गमती आ गरवी गुजरात..||01||
हे..ज्यां घुघवे घेघुर घोर सागर घुघवाट ने ..
नदीयुं ना खळ खळतां नीर...(०२)
हे..ज्यां साबर मही तापी ने भादर बनास भरी..
गजवे हीरण आखी गीर...(०२)
हे ऐवां ओझत ने आजी पण रेवा थी राजी जे..
तरबोळे खेडुत जगतात.....हारे मने गमती आ गरवी गुजरात..||02||
हे ज्यां पोरहा नुं पादर ने लोडण नां लोई थी...
खीमरा नी खांभी खरडाई...(०२)
हे..ज्यां रांणो ने कुंवर ना रढीयाळा राहडा ने..
मांणेक नी मुंछो मरडाई...(०२)
हे..रंग विहळ ना वट ने नरसी ना नट ने जे..
मांमेरां भरतो मलकात.......हारे मने गमती आ गरवी गुजरात..||03||

हे..ज्यां सोमनाथ द्वारिका ने ड़ंणकंता सावजो..
गीरनारी गरवो दातार...(०२)
हे ज्यां सोनल ने मोंगल सी सगती पण भगती थी
अंबा खुद लेती अवतार...(०२)
हे जेंणे जंगल ने जगव्यो ते सावज ने भगव्यो ई
चारण नी बाळा चरचात.....हारे मने गमती आ गरवी गुजरात..||04||
हे,.ज्यां नरमद ने दलपत ना गौरव लई गावता..
गांधी पण नरसी नां गीत...(०२)
हे..ज्यां हेमु परफुल काग नारण मेघांणी ने ..
मेरुभा मनडा ना मीत...(०२)
हे..रंग चारण जातो जे ईतिहासी वातो ने ..
जगवे छे रातो नी रात.....हारे मने गमती आ गरवी गुजरात..||05||
हे..ज्यां प्रिति मां प्रेत थतो मूग्ती विंण मांगडो ने..
होथल ने ओढा नुं हेत...(०२)
हे..ज्यां खांडणीये खांडी ने माथां खवरावतां..
देवायत दीकरा देत...(०२)
हेवा..चारण जोगीदाने गरजावी नीज गांने ..
व्हाली रा' नवघण नी वात.....हारे मने गमती आ गरवी गुजरात..||06||

86 - प्रभाती
राग: अखंड रोजी हरी ना हाथ मां

दोहो

कुळ उजाळ कास्यपा. लाला वंदन लाख
जाड उड्यां जण जोगडा. प्रोढ पसारी पाख

. प्रभाती

हेजी ऐवो
उग्यो रे सुरज वायां वांणलां..अवनीमां थीयां अजवाळां
आभले उडीने रुडा आवियां...मुकीया पंखीडांये माळा...
गोहर करे रे गोप गोपीयुं ने...गो धण छुटीयां रे गाळा...
वाहळी वगाडी रुडी वालथी .. वगडे पोग्या पग पाळा...
वाछीदा वाळे रे भला भाव थी..भोळी ब्रीज केरी बाळा..
गाई ने प्रभाती केरां गीतडां..कहेती ई कांनड काळा..
गोरह वलोणां मीठां गाजीया..वांहड घुघरी रे वाळा
मधुरा बोल्या रे झाडे मोरला..नाच्या नदीयुं ने नाळा
अजपा जपी ने चारण जोगडा..फेरवे मनडां नी माळा..
मोह ना बांधेल अमे माधवा...जीवण तोडजे रे जाळा..

87 - || शगती तुंने सवाल ||

छंद : सारसी

दोहो

समरी में हर स्वासमां, चुक्यो कदी नई चाल
जवाब दे कउं जोगडो , शगती तुंने सवाल

. छंद

मानेल साची मात तुजने धारीयें धींगो धर्णी
भुली भवांनी भाव भव ना बाई कां बेरी बर्णी
लाजाळ अमर्णी लागर्णी कां रात भर रोती रही
जोगण जनेता जोगडा नी जुलम कां जोती रही..01
भोळाय हैये भावथी जननी सतत जापो जप्या
ब्रम चारणी व्रत धारणी ताराय पथ देहो तप्या
देवी य तुंज ने दुर द्रस्टी गगन मां गोती रही
जोगण जनेता जोगडा नी जुलम कां जोती रही..02
मुजने नथी कंई मोह माया आ जगत नीअंबिका
तांणे सकळ जन तोय कां ई जणांवो जगदंबिका
धधकावती ना धोध तुं बस टोयली टोती रही
जोगण जनेता जोगडा नी जुलम कां जोती रही..03
भेळीय रेजे भेळीयाळी आई विनती ऐटली
जांणे बधुं तुं छतां जननी करुं अरदा केटली
करीयां कुडां ना कोई कलमुं धरम थी धोती रही
जोगण जनेता जोगडा नी जुलम कां जोती रही..04
आवो ने वारे मात आवड आई क्यां अटवाई तुं
काली कराली मात गई क्यां मोगलाणी माई तुं.
नाखे पुकारो बाळ नानुं सीद हजी सोती रही
जोगण जनेता जोगडा नी जुलम कां जोती रही..05

88 - || राव हमीर नो राहडो ||

सोमनाथ नी सखाते हमिरजी गोहील गयेल..पण वच्चे तेमनां लग्न भील रांणी साथे थयेलां...क्षत्रांणी तो पोताना पीयु ने हसते मुखे रण मां विदाय करे ऐनी नवाई नई पण आ भील रांणी ये पोताना चुडला ने मादेव माथे भांगवा मोकल्यो ऐ नुं हैयुं ऐ वखते सु केहतुं हसे...

|| राव हमीर नो राहडो ||

साखे सोमैया तणी,आव्यो, मारो, साजण आव्यो शीव
पण, जोने गोहील जोगडा, हामर मरदां हीव
सायबो रे हाल्यो सोमैया नी साखते..हेमरा गोहील हाथ लई हथीयार रे..
भर थार भीली नां..शेरीयुं रे बंबोळ राती सोमनाथ नी...१
पण ..हुं भोळुडी भीलडी... मुने वालम तुं थी वाल
हवे जोया जेवाय जोगडा... मारा हमिर वण ना हाल
तरको नी सामे खेले तरवारीयो..भींह करे त्यां भोम न झल्ले भार रे..
भर थार भीली नां..शेरीयुं रे बंबोळ राती सोमनाथ नी...२
पण ..जातो प्रितम जोवती, हुतो, डुंगर डे दई दोट
हवे.. खतरी तारीय खोट..मने.. जगमां रेसे जोगडा
म्रद हाल्यो मादेव ने दावाय माथडुं..हेमरो साचा ध्रम नो राखण हार रे..
भर थार भीली नां..शेरीयुं रे बंबोळ राती सोमनाथ नी...३
हुं...जौहर करु से जेठवी..मने ..भीलनी माथे भात
हवे ..रोस्युं दीने रात...तुं तो ...जातांय हमिर जोगडा
जुजवा रे मांड्यो तो हमीर जोगडा.. शिस नो कीधो शिवजी ने सणगार रे..
भर थार भीली नां..शेरीयुं रे बंबोळ राती सोमनाथ नी...४

89 - || नमियें तुंने हींद नी नारी ||

दरिया भर हेत दुलारी, खिजवे त्यारे काळ थी खारी
हिंम्मत ना कोय दी हारी, नमियें तुंने हिंद नी नारी..टेक
आवीयो मोल उमेदसिं तेदी, हाडी दीधेलाय हाथ
धर्म त्रीया नो धारीयो साचो, माळ पेरावेल माथ
विरो नी लाज वधारी..नमियें तुंने हिंद नी नारी...०१

जणीयो जोधो जिवतीं बाई, परख्यो रांण प्रताप
रंग राख्यो ऐंणे राजपुताई, जपता क्षत्रीय जाप
सोनगरी मात सन्नारी, नमियें तुंने हिंद नी नारी...०२

जणींयो बाळक बाई जीजांये, सिंह साचो सिवराज
देस आखे तारा दुध ना डंका, यवन संभारे आज
भडवीर थ्यो तर्क पे भारी, नमियें तुंने हिंद नी नारी...०३

आंण वरती अंगरेज नी तेदी, पाडीयो तें पड़कार
गगन आखुं गुंजावतो थ्योतो ,लक्षमी नो ललकार
आझादीय नाम उचारी, नमियें तुंने हिंद नी नारी...०४

कैक जनेता नी कुंख ना जाया, सहिद थीयां संतान
विध्या वती ना लाल ने वंदीं, ज्वारीयें जोगीय दान
आखो जेनो देश आभारी, नमियें तुंने हिंद नी नारी...०५

90 - || गोपीनाथ नी गरबी ||

ज्यारे गोकुळ नो रास जोवा हेमजा पार्वती निकळ्या अने शिवे पण साथे जवा जीद करी माताजीये शिव ने कह्युं के त्यां मात्र कृष्ण नर अने बाकी बधी नारीयो होय...तो भोळोनाथ रास नो ल्हाव लेवा नापी रुप धरी रमवा पधारेल...तेनुं आछुं वर्णन करती आ गरबी...

|| गोपीनाथ नी गरबी ||

रमे छे कान रंग ताळी गोकुळ मां..रमे छे कान रंग ताळी..
भोळा गोवाळीयाने भाळी.. गोकुळ मां.. रमे छे कान रंग ताळी..टेक
हरखे रमवा ने हेमजा रे हाल्यां, माधेव मन मां मीठडुं रे माल्या..
कहे, हेते लीयो ने मुने हाळी.. गोकुळ मां..रमे छे कान रंग ताळी...
थोडुं हसी ने पारवती थोभ्या, लेवाने ल्हाव रास शिवजी रे लोभ्या
पछी, सज्या सणगार ओढी साळी.. गोकुळ मां..रमे छे कान रंग ताळी...
अलख जटा नो वाळीयो अंबोडो, गळानो नाग राज थथर्यो रे थोडो
मुकी गंगा ने डुंगरा नी गाळी... गोकुळ मां..रमे छे कान रंग ताळी.
जोगण ने जोगडा नो राहडो रे जाम्यो..पितांबर धारी एनो भेद बधो पाम्यो.
ऍंणे भभुती उडतीरे भाळी.. गोकुळ मां..रमे छे कान रंग ताळी.
प्रभु नी वांसळी लागती रे प्यारी...नाथ कैलास ना बनीया छे नारी
हस्या नभ मां देव जो नियाळी रे गोकुळ मां..रमे छे कान रंग ताळी...

91 - || काल हस्युं के केम ||

दीन दुखी ने देखतां, जरा, रुदीये लावो रेम
जगमां आपण जोगडा, काल हस्युं के केम.१
माफी दईयें मानवा, खुट्टल ने कई खेम
जांणे जगमां जोगडा, काल हस्युं के केम.२
रसणां कायम राम रख, निती मता नुं नेम
जीवन अमुलख जोगडा, काल हस्युं के केम.३
साजण आजे सामटो, प्रितम ले कर प्रेम
जोडे हरदम जोगडा, काल हस्युं के केम.४
हळवुं मळवुं हेतसुं, जीववुं सजजन जेम
जांणे ना कोई जोगडा, काल हस्युुं के केम.५
काढ हवे तुं कायमी, तारा, टाबर काजे टेम
जीवतर हाल्यु जोगडा, काल हस्युं के केम.६
मितरु हारे मस्त रई , तम मन रंगे तेम
जिवो प्रफुल्लीत जोगडा, काल हस्युं के केम.७
काट रखो नई काळजे, हैये करवुं हेम
जोबन धन तो जोगडा, काल हसे के केम.८
हसे न त्यारे हाथमां, फोटा चडशे फ्रेम
जीवन ल्हाव आ जोगडा, काल हसे के केम.९
करवुं निस चीत कायमी, आतम बोले ऐम
जीवतर सपनुं जोगडा, काल हस्युं के केम. १०
रंज कपट नव राखीयें, व्हालां जन सुं व्हेम
जो हर स्वासे जोगडा, काल हस्युं के केम. ११
जोगीदान गढवी मो.नं. 9898360102

92 - || हाला गाउं हिंद ना लाला ||

राग: बेटी बहुं बाप ने व्हाली

. सहीदो लाख सलाम....हिंद जाया नुं हालरडुं....
पिता किसन सिंह अने मां विध्यावती ने ज्यारे पोताना खोळाना खुंदनार ने फांसी नी पेहला छेल्ली वखत मळवा जवानुं हशे..ई चोविस मी मार्च ना लाहोर जेल ने दरवाजे मां पोताना दीकरा ने छेल्ली वार मळवाना अबरखे उभी हसे अने खबर मळे के फांसी तो काल रात्रेज अपाई गई..अने मृत देह सोंपाणो होय..ई आंखो बंद करी ने सुतेला त्रण सावजो ..मां भारती ना भुलकां...सुखदेव राजगुर अने भगतसिंह...ऐनी बंध आखो जोई मां ने काळजे केवा घा वाग्या हशे...आ हिंद ने बिजा तो शुं ठबका देवा ?

लोट्यो तुंतो हिंद ना लाला, हैडा फाट गाउं हुं हाला
काळजडाने बोल ई काला, भोकें मारी छातीये भाला...टेक
निकळ्यो तो तुं निहाळ जावा ने, जलीया वाला जेल
दील दीधुं तुं देस ने तारा, मन मां नोंहतोय मेल
आग्युं घट सळगे आला..हाला गाउं हिंद ना लाला..||01||
खेतरे जई ने खेलतो तो तुं, हळ वावी हथीयार
जोई रहे केम सिखणीं जायो, मातृ भुमी ने मार
मंड्यो लईन हाथ मिशाला, हाला गाउं हिंद ना लाला..||02||
आटक्यो तुं अंगरेज ने माथे, बाटक्यो तुं बळवान
साटक्यो तें सारडील ने सेरी, जाटक्यो लीधेल जान
दागी त्रण गोळीयुं डाला..लीधूं तेंतो वेर ई लाला...||03||
दोसतारुं संग दीधीयुं तेतो, घारा सभा मां धिंह..
बोम फेंकी ने तुं बंकडा बोल्यो, हुं सिखणीं जायो सिंह
अंगरेजांय भर्य उचाला, हरखी तारा गाउं हुं हाला..||04||

थथरी गोरा ना काळजां कंप्या, पाडतां तुं पड़कार
जुलतो लाहोर मांचडे जोया, अमे हिंद माता नो हार
विरा त्रण लागीया वाला, हाला गाउ हिंद ना लाला..||05||
हिंद हैये तुं हीबकी हाल्यो, सहीद आजम नो सूर
जननीने जोगीदान जळेळ्या, पांपणे आंहुना पूर
ठबका शुं आ देस ने ठाला, हाला गाउं हिंद ना लाला..||06||

93 - || मोगल आवड तुं महाकाळी ||

छंद : अडल्ल

जोगण पद वंदन हथ जोडी, त्रिय वीध ताप कटण दे त्रोडी
प्रोढ समय नामां तव पठणां, कळी काळ नाठत दख कठणा
परगट कळजुग मे परचाळी, थळवट चाळकणां धट थाळी
नमन लखो लख नीत लेहजाळी, मोगल आवड तुं महाकाळी..||01||
अजर अमर जग तुं अवतारी, व्रण चारण दीण लाज वधारी
जुग जूग लीयण अजनमा जनमा,गरजण खंड भुखंड गगनमा
पत रखणी लखणी लख परचा, चत सत जुग करत तव चरचा
धरम धारणी मात धजाळी, मोगल आवड तुं महाकाळी..||02||
अजब रुप घर आई अखंडी, पातल सत असमांण प्रचंडी
रौद्र भयंकर रूप रचावण, बांय ग्रहत नीज बाळ बचावण
जडधर ब्रंह्म हरी जप जपता,करत हाक दैतां कप कपता
तरहूर खपर खडग दै ताळी, मोगल आवड तुं महाकाळी..||03||
जय मोंगल आवड कई जागु, महा काली आशिस पद मागु,
साद करुं तहीं आवो सगती, भवां दीयो अढळक तव भगती
समरण हो तव सास उसासा, आयल करीयल ऐकज आसा
मळे प्रकट तुं मां ममताळी, मोगल आवड तुं महाकाळी..||04||
जण्यां गर्णी मधरात जगावे, अहर नीशी अजपा घट आवे
दैवल रुप अनुपम दरसी, व्हाल अलौकीक मां अब वरसी
चडीया गण चारण गुण चावो, दरसण जोगीय दान द्रसावो
भय हरणी सूख करणीं भाळी, मोगल आवड तुं महाकाळी..||05||

94 - || गझल ||

ना कहे भिष्म पीता, के ना ई द्रोंण कहे..
चारणो बिन्न कहो, बिजुं ते कोंण कहे....
जांण कारो तो बधी, वातडी ने समजे छे
मानवुंज जेने नथी, ऐ वात मोंण कहे....
कृष्ण जेवाय अहीं, करे छे कोठा नी..
सात मां व्युह ने तो, छतां ई छोंण कहे..
सर्व सक्ती हती जे, सूरज ने थंभावे
अडधुं जे समज्या छे, ई एने ओंण कहे..
दान जोगी शुं कहुं, तूं साव भोळो पडे.
बात गेहरी ने बधा, हवा मां बोंण कहे...
ना कहे भिष्म पीता, के ना ई द्रोंण कहे..
चारणो बिन्न कहो, बिजुं ते कोंण कहे....

95 - || मोगल नी महेर ||

राग: जानकी नाथ सहाय करे

मोगल जो तुं महेर करे तो,(०२) कोंण बगाडे काम रे..
शरधा थी जे सरणें आवे, (०२) दुध पुत पावे दाम रे...टेक
मंगल कारी मात अमारी,(०२)समरण तारुं छे सुख कारी (०२)
आध्या शक्ती तुं अवतारी(०२) धींगुं तमारुं धाम रे....मोगल जो...||01||

ओखा धर मां थ्यां अजवाळां (०२) ज्योत सरुपा जनमी ज्वाळा (०२)
गरजे गाळा गोरवी याळा (०२) नवखंड जांणे नाम रे...मोगल जो...||02||

आवे जो को ई अणधारी (०२) अमने लेज्यो मात उगारी (०२)
तरहूर धारी सरजुं तमारी (०२) गायें गामो गाम रे...मोगल जो...||03||

जोगी चारण आज जुहारुं (०२) चडीया वंदन केम चितारुं (०२)
अंतर तारे चरण ओवारुं (०२) जोगण आठौं जाम रे...मोगल जो...||04||

96 - || मोगल आराध ||

गीत : सांणोर

उगमणा बार ना ओरडा ओपता, धुंवाडा गुगळ ना धुप धमळे.
धार तरवार सा नियम तुज धारीयें,सटोसट बाजीयुं तुंज समळे
वस्तुंआं काज तुं वस्तीयां भुले नई, करेनई जण्यां पर रुप काली
जीभ हैया कजुं जपे ज्यां जोगडो,हुकळतां मोगली आव्य हाली.||01||

आद अंबा कही याद करीये अमुं, नाम तमणुं लीयें मात नरणे
कलम कवियुं तणी केम मा कही सके,वैखरी वांणीयुं केम वरणे
रसण पर राहडो रमे तुं रंग मां, त्रि भुवण गुंजणी पडत ताली
जीभ हैया कजुं जपे ज्यां जोगडो,हुकळतां मोगली आव्य हाली.||02||

उदर ना बाळ पर अमीभर आंखडी, जेंम जननी की यें मात जाती
ऐम अम आशरो जोत जोगण तवां, सारणां फुल्लती गज्ज छाती
अकळ कळि काळ नी आवतां आंटीयुं,झपट कर बावडुं लीयो झाली
जीभ हैया कजुं जपे ज्यां जोगडो,हुकळतां मोगली आव्य हाली.||03||

जाप जपीये बीजुं कांई ना जाणींये, जांणती तुं बधुं मात जगती
ऐक तुज नाम नो कीयो आराध मां ,भाव राखी करां मात भगती
गणेंणी आभ गरजावणीं गाळीया,पीयण रगतां अहर भरण पाली
जीभ हैया कजुं जपे ज्यां जोगडो,हुकळतां मोगली आव्य हाली.||04||

चरण मां वंदतो दान जोगी चवां, चित्त चडीयो रटे मात चंडी
सांभळे साद ज्यां मात छोरुं तणो, छेटीयुं रहे नई बाळ छंडी
दीयण आशिस तुं आई देवा तनय, फोरती वाडीयुं फूल फाली
जीभ हैया कजुं जपे ज्यां जोगडो,हुकळतां मोगली आव्य हाली.||05||

97 - || आवड वंदना ||

छंद : भुजंग प्रयात

रटुं नाम नित्ये रहो मात राजी
महा आशिसां दैवणी ऐक माजी
अमुं अंतरे मां मीटे तुं उदासी
अखिलेस्वरी आवडाई उपासी..||01||
जीवन तुं कवन तुं स्तवन तुंज शक्ति
भजुं भाव भोळे भवां राख भक्ति
करुं वंदना त्यां चहौं दीश काशी
अखिलेस्वरी आवडाई उपासी..||02||
जरा बांय झाली कदी तुं जगाडे
अने संग चाले अगाडे अगाडे
हीये मंद ही मंद तुं कर्त हासी
अखिलेस्वरी आवडाई उपासी..||03||
भरोंसे तिंहारे भरुं डग्ग भावे
बयां शुं करु हुं मया तुं बचावे
फिरे हाथ माथे मीटे काळ फासी
अखिलेस्वरी आवडाई उपासी..||04||
लीयां तुज्ज दरसन्न लावोय लोभे
सतक सुर्य ना तेजसी मात सोभे
पुरण चंद्र शितल्ल आभे प्रकासी
अखिलेस्वरी आवडाई उपासी..||05||

नथी मांगवुं कांई माथुंय नामी
सदा आध्य शक्ति रहो आंख सामी
थडे थी कहो मां थयुं थाय थासी
अखिलेस्वरी आवडाई उपासी..||06||

करो मां क्षमा जो हुई भुल्ल हाथे
लई खोळले ने रखो हाथ माथे
हवे राख हारे हुलासी हुलासी
अखिलेस्वरी आवडाई उपासी..||07||

करी हाकलो मात सामे कळाणी
भयानक् कळी काळ मां तु भळाणी
भली जोगडा जीभ जोगन्न भासी
अखिलेस्वरी आवडाई उपासी..||08||

वरणन नई बस वंदना, शब्द रचे शुं संत ||
जाय लख्युं ना जोगडा, आवड रुप अनंत. ||09||

98 - || मोगल पचिशी ||

छंद : भुजंग प्रयात

सदमतीयुं सगती समप,चुकुं नही सत चाल
जाळव तुं ब्रिद जोगडा, है मौंगल हर हाल..||01||
नमौ चारणी तारणी पाय तोळे, कहो मां खमां तो कळोयांय कोळे
हजी हाजरा तुं हजूरीय हामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||02||
हरे चित्त चिंता विघन्नो विनासे, अखिलेशरी आवियो ऐज आसे
डणंकी रीपु ने दीयो मात डामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||03||
नहीं तर्क थी जाय तुं मात जांणी, प्रगट्टे घटो घट्ट मां ज्यें‍म पांणी
नतो मात जन्मी नतो मृत्य पामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||04||
नतो यौवना मात नां बाल व्रिद्धा, अजर तुं अमर तुं तुंहीं ब्रह्म सिद्धा
तवां हत्थ मे सर्प त्रिसूल्ल तामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||05||
तुंही दुग्ध रां देगडां मात देंणी, तुंही काळ ना काळ नी मात केंणी
गमे तम्म जाया ने केमे गुलामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||06||
जगत्त पालणी जोगणीं मात जाणी, विभिन्नाय रुपाय वेदे वखांणी
अहरनीस तुं स्वास ही स्वास सामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||07||
तुंही ॐ कारम् तुंही रिंग धारम्, जीभां जोगीदानाय पुन्यं पुकारम्
भणीं जोगणी तुं घणीं विश्व घामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||08||
तुंही काल सर्पां तणां दोष कापे, तुंही धर्म थापी अधरमां उथापे
तुंही सर्व सग्ती तणो स्रोत तामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||09||
भग्यो खुब तोये जग्यो नाय जोयुं, खरा अर्थ मां तो घणुं मात खोयुं
अबे आथडूं ना थडो घट्ट थामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||10||
तुंही जंबु प्लक्षं तुंही साल्म कुशं, तुंही पुस्करा कौंच के शाक शुशं
दवीपो सात मे भेळीयाळी भजामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||11||
अतल तुं वितल तुं नितल तु सुतल तुं, गभस्तिय मानं महातल पतल तुं
तुंही सात पाताल तुं ही सुनामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||12||
तुंही सायरां निर वादल्ल सारे, धरापे पडे मां तुंही मेघ धारे
निराकार आकार तुं ऐक नामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||13||

सुखे मात सोई जदेय प्रोढ जागु, मळे दर्स तोळां नमीं ऐज मागुं
खलक्के रहे ना मया कोउ खामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||14||
तुंही अन्न तृप्ती परा तुं पवन्ना, तुंही भोम वारी अगन्ना गगन्ना
तुंही सर्व तत्वो महीं मात सामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||15||
दीयो संतती संपती सुक्ख कारी, रीयो भावना जन्न की हीत्त कारी
प्रचंडी अखंडी प्रचा जाउं पामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||16||
भवां बाळ भाखे तुंही लाज राखे, कोई नेंण नाखे दढी दाज दाखे
सगत्ती न साखे कपट्टीय कामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||17||
तवां चर्ण नो आशरो ऐक चंडी, प्रसो हत्थ माथे प्रलंबा प्रचंडी
अजांण्युं न कांईं तुं अंत्तर जामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||18||
भयी भुल्ल हो कोई जांणे अजांणे, प्रखो रेम द्रस्टीय पुत्रां प्रमांणे.
रखी खोळले तुं करे दुर खामी नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||19||
सगत्तीय छोरुं तणो सिल सिल्लो, उचारु हुं सत्यं चुकु नाय चिल्लो
कबुं ना बणुं लंपटी दुष्ट कामी , नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||20||
हिये सुं लग्यो बाळकां मात हेडो, तमुं चाहणी जोगणी तर्र वेडो
उदोहु उदो उच्चरे जंग जामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||21||
महा मोक्ष मानम् थडां चर्ण थानम् ,जपे जोगीदानम्, धरी मात ध्यानम्
रमी रोम रोमे पले पल्ल पामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||22||
चल्या विन्न चित्ते करे पाठ नित्ते, वलक्खे न वित्ते जगे जंग जीत्ते
हजो काज हीत्ते प्रवित्ते प्रणांमीं, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||23||
नमो नाम नारायणां ब्रह्म रुपा, सदा शिव दाताय सग्ती सरुपा
जयो हं जयो हं जयो धुन्न जामी, नमो मौंगलंम्मा नमामी नमामी..||24||
. घांघणीया तनया घटम् ,समरण प्रकटण सूर
. जय मोगल जप जोगडा, नमन वधारण नूर..||25||
. ईति: श्री मोगल पचिशी संपुर्णम्

99 - || खोड़ल तारा खेल ||

पोगेय तुं पताळमां, गगने करती गेल.
जोया चारण जोगडे, खोडल तारा खेल.||01||
(हे मा खोडल..तुं पलक मां पाताळे पोगे तो बीजी क्षणे गगन मां गेल करती होय..तारा खेल ने अमे जोई शकीये पण एनो पार न पामी सकीये)

मामडीया मादा तणी, आठेक सदीये आई
जो वढीयारे जोगडा, राज थळां नी राई.||02||
(हे मामडीया मादा चारण नी दीकरी मां खोडल.. राजस्थान नी धरती परथी तुं वढीयार नी धरा पर आशरे आठमी सदी मां दरसाई)

आवड खोडल आवियुं, सातेय बेनड साथ
जननी जायो जोगडा, हाड मेरखियो हाथ.||03||
(मां खोडल ने आवड वगेरे सातेय बेनुं अने साथे हाड वालो भाई मेरखीयो पण हारे हतो..)

डसीयो वीर ने डोकरी, नफ्फट काळो नाग
जानल हाली जोगडा, ताण लियां घर ताग.||04||
(ज्यारे ते धरती पर वीर मेरखिया ने सर्प दंश थयो त्यारे हे मां खोडल त्यारे तारुं नाम जानल हतुं तुं घरणी नो ताग लेवा पाताळे पोगी..)

आवड वीर अहांगळे, (थोडु) मांठुंय बोली मां
जानल पग मां जोगडा,(के)कर खोडी थई कां.||05||
(वीर मेरखीया नो घरती पर ढळेलो देह जोई ने विर नो अहांगळो करती मां आवड जानबाई ने आवतां वार लागेल जोई ने थोडुं मांठुं बोल्यां..के जानल खोडी थई के शुं??)

आँयां सूरज उगशे, (ऐवी) जो थई आवड जांण
(त्यारे)जटक्यो छेडो जोगडा, भोंय गरीग्यो भांण. ||06||
(हमणां सूरज उगशे अने भाई ने भारे पडशे ई जोगमाया आवडने जांण थतां भेळीया नो छेडो झटक्यो अने सुरज पाछो भुमी मां गर्त थयो..)

अमियल कुंपो आंणीयो , व्रांणा धर वढीयार
जानल त्यांथी जोगडा, खोड थतां खोडीयार.||07||
(अमिनो कुंप लई ने मां जानल आव्यां पण मां आवड ना वेंण हतां के क्यांय खोडी थई के शुं?? माटे मां जानल ने खोड थई अने त्यारथी ते खोडीयार तरीके (हालना वरांणां वढीयार थी) प्रसिद्ध थयां..)

आवड खोडल उरथी, वड़ दियुं वरदान
मोटी खोडल मावडी, जग पर जोगीदान.||08||
(त्यारे मां खोडीयार ने भगवती आवडे वरदान आप्युं के भले जन्मे हुं मोटी छुं..पण जगत तने मोटी मानशे..)

नई दउं आवड नाम हुं, धीडीयुं मामड धार
जानल खोडल जोगडा, वर आंणा वढीयार.||09||
(मां आवडे खोडल ने वरदान आप्युं के हुं ज्यां पण रहीश मारुं नाम आवड तरीके नही आपुं..जेथी जगत मां मारी बेन खोडीयार नुं नाम मोटुं थाय...जेना द्रस्टांत रुप आप जोई शको छो के राजस्थान मां जेटलां पण आवड ना मंदीर छे..तेनां नाम आवड नही पण..भादरीयाजी..तनोट राय..तेमडाराय..बेडाराय...चाळकनेसी ..वगेरे थी पुजाय छे..आ वर(वरदान)आंणा (मेळव्युं) ते धरती ऐटले वरांणा(वरआंणा)..)

अमरत खातां उठीयो, मेरखीयो दई मट्ट

जेर उतरतां जोगडा, तोगड दे तलवट्ट.||10||

(अमि कुंपा थी उठी ने वीर मेरखीयाये.आंख खोली..त्यारे नानी बेन तोगडे तलवट्ट लावी ने भाई ने खवराव्या...आ प्रसंग नी यादी मां आजे पण माताजी ने (भाई मेरखीया माटे) तलवट धराववा मां आवे छे जेने ते लोको घांणी कहे छे..जेमां तल अने गोळ खांडेला होय छे...आ स्थळ सिवाय बिजे कोई मंदीरे खोडीयार ने तलवट नथी देवाता..)

फरती भाळी फुनडे, भोळ गोवाळे भोर

जोगण खोडल जोगडा, दुधड नेहे दोर.||11||

(नजीक ना दुधड नेह ना भोळ गवाळ फुनडा ने पोते त्यां होवानी खात्री आपी अने भोळ गवाळ फुनडाये माताजी खोडल ने अहीयां भाळी ..पछी माताजी नुं तथा माताजी ना भाई मेरखिया क्षेत्रपाळ नुं त्यां स्थापन करायुं ईस.1365 ने आसो सुद अस्टमी ने रविवारे...)

आंम मॉ जानल नुं नाम खोडीयार थवुं, मॉ आवड नुं वरदान, तथा उगता सुरज ने रोकवा नी घटना ना साक्षी ऐवा वरांणा नी धरती ने मारां वंदन छे..

100 - || हनुमंत थापा ने श्रद्धा सुमन ||

दीधो विरोये देस पर , आतम खुल्ले आम
जुक जुक करियें जोगडा, सहिदो लाख सलाम
देह दब्यो खट दिन्न लग, आयो तबे न अंत
जीव्यो पवन से जोगडा, हद नामा हनुमंत

हाक हजी हनुमंत नी, अवनी फरती आंण
जीव्यो बर्फ मे जोगडा, पवन गोद दिय प्रांण

पांचेक रातु पोढीयो, बरफां ढंक बखोल
खखडी सांकळ खोल, जो घर हाल्यो जोगडा
मातृ भोम काजे मर्यो, सहिद कहुं के संत
जुग जुग करसे जोगडा, हिंद याद हनुमंत

101 - || मैयर नी माया ||

गीत..राग..: : सासु पुछे तने वहु रांणी

गौरी पुत्र गणेश ने गावुं..बीजे रेडीयें ते कोने रावु
कन्या कोडिली छोने कळावुं..मारुं भेंतर कोने भळावुं..01

जेना खोळा मां हुं बहु खेली. मांमे तेडी ने मायरे मेली,
कन्या दान पिताये ज्यां दीधू..मारुं बचपण लुंटी लीधु..02

कोई केहतुं नतु एमां कांई..भाळे भांवंड ने रे भोजाई
आखी जान उभेली रे जोती, हुंतो रही गई तोये रे रोती..03

पेला फेरे ते कीघी पराई.. मारा मांडवडे रोती ती माई
बीजे मंगळ ते पग मांडू..सीद मैयर नी माया ने छांडु..04

त्रीजा फेरे ते बंधन तोड्या .साथ सैयरु ये पण छोड्या
चोथो मंगळ हीबकी ने चाली..पिता सीदने मुने तें पाली..05

भाई नही रे पडुं तुने भारे.. मारे हेते रेवूं तारी हारे. .
माडी जाया ने केहवा जो आवी..विरे रोतीरे मुजने वळावी..06

जांन उघली ज्यां जोगी दान..हुंतो भुली ती सान ने भान
मारे कोने ते जई ने केहवु.. रोता रोतांज छांना रेहवु..07

मारुं मैयर तो अती व्हालुं..हुंतो कई रीत मेली ने हालु
मारी काया ना घडतल काचा, मारे सासरीयां हवे साचा..08

102 - || भजां तुने देव भालाळी ||
राग: सोनल मा आभ कपाळी

जोगण देने पाप तुं जाळी, आवड नी बेंन आंटाळी
खोडल नई मात खेधाळी, भजां तुने देव भालाळी...टेक
चारणी पाडा चुहर्णी चंडी,.. नफट भुंडा निव डेल
खपर वरांणे खुबडी खोडल,..खेलती खांडा खेल
गरजावण डुंगरा गाळी,...भजां तुंने देव भालाळी...||01||

भ्रात हिंगोळने आभड्यो भोरंग, जग आखाने जांण
मिहिर थंभावेल उगतो मां ई, आवडे दीधेल आंण
पोगेली तुं मात पाताळी..भजां तुंने देव भालाळी...||02||

मात आवड के मोवडी था तुं, सात बेनुं सथीयार
गढ जुनो भाव नगरी गुंजे, खुब नामो खोडीयार
नवघण नीय संग नेजाळी..भजां तुंने देव भालाळी...||03||

मेंणुं भाग्युं तें बाप मामडनुं, रोहीसाळे घण रंग
भुप भावेणांने आपीयुं भोमी, जबरो खेली जंग
भेना घट रमती भाळी..भजां तुंने देव भालाळी...||04||

चडती कायम राखने चंडी, ..चडीया नी चरीताळ
जग आखामां जोगडो गावे,..वातडी आ विगताळ
भोळा ग्वाळ फुंनडे भाळी..भजां तुंने देव भालाळी...||05||

103 - || गेली गतराड ||
राग: .वरांणा रे वाळी खेलती तुं वैराट मा.(विलंबित)

ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी, हाक थी कंपे हाथी हजारो ना हाड रे
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...टेक
खोड्य मां रे आवेलुं पेड़ुंय खेलवा , मांगीयो ऐणे बाप मारु नो बाळ रे..
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||01||

ऐकरंगा मारु ये बेटो आपीयो, रंग छे चारण कुंळ उजाळ्युं राय रे...
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||02||

नटडा रे बाळक ने लई ने निकळ्या, पुजता पोग्या दीलीयांणे दरबार रे..
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||03||

पादश्या नी पेलो बाळुडा न पुजीयो, बादसा ने तो जोवतां लागी जाळ रे..
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||04||

बादसाये बान्यो रो पाता बाळ ने, जोत जोता मां जोध थीयेलो जुवान रे..
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||05||

पाता रे मारु धोडाय पलांणीया, बळीयो सारण आवियो विंधी बजार रे..
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||06||

शेरीयुं मां भाळी रे नागण सुंदरी, वदीयुं वेवि साळ नी मोटी वात रे ..
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||07||

आदु थी दीकरीयुं नागोय आपता, घडीयां तोरण घडीयो विधी घाट रे..
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||08||

परणीं ने गेली पाता ने पुछती, जोगणी हारे सीद थासे संसार रे...
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||09||

मुकीयां रे हेठां पानेतर मोडीयो, हाक करी ने आपीयुं खांडु हाथ रे...
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||10||

सगती नो साचो पाता तुं सायबो, समरे तारे साथ दीयुं भव सात रे..
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||11||

परण्ये जो बिजे के नारी ने पेखसे, गांडो करुं हुं गेली तने गतराड रे..
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||12||

खंचकातो आव्यो ज्यां मारु खोडमा, जोगणीं एनी याद मां जोडाजोडरे.
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||13||

मेंणलां रे पाता ने कुडां मारीयां, हठ थी बीजे करीया पीळा हाथ रे...
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||14||

फरीयो रे फेरा त्यां माथु फेरीयुं, बांधीयो सांकळ बारणा दीधां बंध रे..
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||15||

बावळी ना बाटी न मारुं ज्यारे बाखड्या, भ्रखीतांमारु भड़ बाटी थ्या भुंड रे.
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||16||

सांभळी रे पोकुं सुरो थियो साबदो, जोगणी पाता जोड्य मां जोगी दान रे.
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||17||

खेलवा रे मांड्यो खांडा नाय खेलने, चुड चंडी नो जांणे उठ्यो जमरांण रे..
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||18||

वळीयो रे ज्यारे वेरी नेय वाढतो, कंथ गेली नो कंपवा मांड्यो काय रे..
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||19||

मुकीयुं रे खांडु ने देयुं मेलीयुं, खांडीया धरे खोड्य नो पुरो खेल रे..
जोगण जोगानी.. ग्रजना रे केवी गेली गतराड नी,...||20||

(मॉ भगवती आई श्री गेली गात्राड ने मारां हजारो वंदन.सह.पाता मारु अने मां गेली गतराड ना जीवन प्रसंग ने संक्षिप्त मां वणीलई जांणवानी ईच्छा वाळा साहीत्य चाहको नी सेवामां..........)

104 - || गीत नवां नुं गीत ||
छंद : त्रोटक नी चाल

बहु सोर बकोर करे अबके गीत चीत हीलोळ न ऐक चले
धीब धीब अवाज धींबांग धमा बीन बांध समा झीक झाक झले
बिन राग, उडे ज्यम काग, ने ढोलक वाग रीयुं बस ताल वीना
बस ताक धीनाधीन, ताक धीनाधीन, ताक धीनाधीन, ताक धीना.||01||
नर नारीयुं उंधेय कांध नचे नव सेह सरम्म ने सोहतां हे.
ध्रीज बांग ध्रीजांग ध्रीजांग ने तालेय मांन मुकी पथ मोहता हे
मन मीत न प्रित के सीत बजे सूर गीत खळे खर खोल कीना
बस ताक धीनाधीन, ताक धीनाधीन, ताक धीनाधीन, ताक धीना.||02||
दीये नांम डीजे रमी आम रीजे खोटा बोल सुणे कोय नाई खीजे
मुकी लाज अने मरजाद धमाचक लटक्क मट्टक खुब लीजे
समजाय नही ईक बोल भलो ज्यम चांग उचांग मे गाय चीना
बस ताक धीनाधीन, ताक धीनाधीन, ताक धीनाधीन, ताक धीना.||03||
नवी शेल छकेल ने खेल सुजे जुनी रीत रीवाजुं ने रोळता हे
भुलीया भुतकाळ ने भाव भलो अब बाप नी ईज्जत बोळता हे,
हलकी हलवे नीज केड्य कहे गीत टोकर मंदीर टीन्न टीना
बस ताक धीनाधीन, ताक धीनाधीन, ताक धीनाधीन, ताक धीना.||04||
जोगीदान ने आवांय गांन सुंणी अपमांन भळातुंय भारत नुं
नव शारदा के नव आरदा के नव अंतर ना कोई आरत नुं
बहु बोल भर्या वण तोल ने अक्खर भाव टटोल न ऐक भीना
बस ताक धीनाधीन, ताक धीनाधीन, ताक धीनाधीन, ताक धीना.||05||
(रोड पर जोयेल एक द्रस्य पर थी...आज ना युगना गीतो ये करेल
संस्कृति नी दुर्गती नो चितार करवानो प्रयास..).

105 - || शक्ति पीठ स्तोत्र ||

छंद: भुजंग प्रयात

नमो हिंगळा ब्रह्म रंध्रम भवानी, नमो शर्करा नैना देवी सवानी.|
अमरनाथ श्रिशैल मे कंठ साजे, रदय अंबिका गब्बरी मात गाजे.|
त्रिपुर मालीनी वक्ष जालंध्र जानो, दुजा रामगीरी शिवानी वखानो.|
सुगंधम् सुनंदा नसीकाय नस्तु, नमामी जपम् जोगीदानम् नमस्तु ||01||

महीष मर्दनी वक्र ईश्वर भुमध्या, यशोर् इश्वरी हस्त कौंणी कमध्या.|
सती मात छत्राल भुजा भवानी, नमो बाहुला मात बंगाल बानी.|
गुजैयेश्वरी म्हाशीरा घुट्टनाई, त्रिपुर सुंदरी पाय दाया पुनाई.|
जीभा कांगडा मात ज्वाला जमस्तु, नमामी जपम् जोगीदानम् नमस्तु ||02||

श्री पर्वत्त्त पायल्ल श्री सुंदरी तुं, करत्तोय तत् अर्पणा उत्तरी तुं.|
कुरुक्षेत्र सावित्री ऐंडी समाई, कपालीनी भीमुप विभाष वाई.|
बिराजे बिमल्लाय नांभीं नमोहम्, श्रवन्नी पीठा कन्या आश्रम सोहम.|
नमो गंडकी पोखरा मस्तकस्तु, नमामी जपम् जोगीदानम् नमस्तु ||03||

दयो कान कन्नार्ट दुरगा द्रसन्नी,अटम्म हास ओस्टे फुलररा प्रसन्नी.|
मया पांनीयुं लंक ईन्द्रक्षी आपा, विरातंबीका वाम अंगुल्ल थापा.|
जुगाड्या मया जम्मणा पाव जानी, हथां री प्रयागे ललीता लुबानी.|
नमो नदिनी नंदिपुर हार पस्तु, नमामी जपम् जोगीदानम् नमस्तु ||04||

मर्णीबंध पौंचाय गायत्री गानम् ,जयंती महा वाम जंघा जहांनम् .|
मर्णी कर्णीका घाट काशीय कर्णा, दढां पंच सागर वराहीय वर्णां.|
दया पाव अंगुस्ट काली कराली, उमा वृंन्द वन्ना चुडा केश चाली.|
दया मानसं दाक्षयानी दयस्तु, नमामी जपम् जोगीदानम् नमस्तु ||05||

असौं दैव गर्भाय कांन्चीय अस्ती, उमा स्कंध वामे मिथील्लाय मस्ती.|
दयो स्कंध रत्नावली मां कुमारी, खटुं चंद्र भागा प्रभासे खुमारी.|
उपल ओठ भैरव्व पर्वत्त अवंती, डढी भ्रामरी मां जनस्थान जंती.|
नमो भ्रामरी वाम त्रिस्तोत्र वस्तु, नमामी जपम् जोगीदानम् नमस्तु ||06||

उजैनी कलायुंय चंद्रीका चंडी, कमाख्या कुखे काम गीरी कमंडी.|
नितंबे मया नर्मदा शौन देशम, कमल्ला धवम कालीका विज वेशम् |
सरव शैल विश्वेस्वरी मात गालम् ,तिनो लोक चाले मया स्वास तालम् |
नळो नल्लहाटी महाकाली मस्तु, नमामी जपम् जोगीदानम् नमस्तु ||07||

पढौ नित्य प्रेमे मया पीठ्ठ मार्नीं, जुगौ जुग मां को विधाता वखानी.|
चहु दीश मैं ईश है ऐक धारा, पुकारो मया को पुगारेय पारा. |
ईही मां सती की मती शंकराया, सृजन ध्वंस पोसन्न माने कराया.|
किरिटम विमल्ला मुकट्टांय मस्तु, नमामी जपम् जोगीदानम् नमस्तु ||08||
. (ईतीः श्री शक्ति पीठ स्तोत्रम् संपुर्णम्)

106 - || सोनल मां नो भाव ||

राग : माताजी कहे छे बिये मारो मावो

चारण कुळ चंडी विश्वेश्वरी भगवती आई सोनबाई नो जन्म दीन ऐटले चारणो नो सगती परंपरा नो सुरज मढडे उग्यो ऐ दीवस नी हारदीक वधायुं माटे भगवती सोनल ना भाव साथे हैया ना भाव ....जय मा जगदंबीके सोनल ...वंदे सोनल मातरम्...

दोहो

आयल तें अजवाळीयुं, जगमां अमणी जात
जोगण सोनल जोगडा, मढडे जनमी मात.

भाव

ऐवी मढडे पधारी तुं ममताळी रे..
जगदंबा सोनल जागती रे..
माडी भव दख भागे तमने भाळी रे..
लाखेंणी अंबा लागती रे...टेक
हरख्या हमीर जेदी पारणे तुं पोढी रे..
ओल्या नवे ग्रहो ओढणला मां ओढी रे..
त्रीलोकी माया तागती रे.....ऐवी मढडे पधारी.....||01||

छोरुं रे गर्णी ने कीधा समाजे सुधारा रे...
एवा भुंडा करम केरा बधा भारा रे......
माताजी पाछा मागती रे.....ऐवी मढडे पधारी.....||02||
दारु रे ग्रही ने जेंणे दलडां दुभाव्यां रे..
एने तेने तेल नी कडा मां जमडांये ताव्या रे
लायुं रे ऐने लागती रे......ऐवी मढडे पधारी .....||03||

देख्युं ना दर्णी मां कोये ऐवुं जोयुं आजे रे...
तारा गळा मां हजारो सावज गाजे रे ...
व्योमे रे पेंजण वागती रे..ऐवी मढडे पधारी ......||04||
खारा रे खेतर मां तें फुलडां खीलाव्या रे...
जेने जोगीदाने हैया मां रे जगाव्यां रे.....
बाई तूं मोटी बागती रे.......ऐवी मढडे पधारी ...||05||

107 - || सोनल स्वासो स्वास ||

आखी नात्य उगारवा, उरमां उजळी आस.
जोगण बीजे न जोगडा, सोनल स्वासो स्वास.१

वेन करुं तो व्हालथी, खोळे लेती खास.
जननी जेवी जोगडा, सोनल स्वासो स्वास.२

हियुं करे ज्यां हाकलो,त्यां, पोगे आयल पास.
जगदंबा ई जोगडा,आई, सोनल स्वासो स्वास.३

पोष बीजाळी पोषती,अमने, माता बारो मास.
जीवन चारण जोगडा, सोनल स्वासो स्वास.४

छोरुं थी छेटी हवे , मां, जननी तुं क्यां जास.
जनम अरज के जोगडो, सोनल स्वासो स्वास.५

नरणें भुलीयें नाम तो, आतम रहे उदास.
जीभे जोगण जोगडा, सोनल स्वासो स्वास.६

रमती रोमे रोम मां,वळी, ब्रेमंड धर पर वास.
जे द्रस अदरस जोगडा, सोनल स्वासो स्वास.७

मढडे मंदीर मां मळे, मने, भवां तमांणो भास.
जे घट घट मां जोगडा, सोनल स्वासो स्वास.८

खलक ब्रमंडां खेलती, रज रज रमती रास.
जोगण चंडी जोगडा, सोनल स्वासो स्वास.९

108 - || नरसी केरा नाथ ||

बंधन कां थ्युं बापजी, तने, केदारा नुं कान.
नरसी नाथ निधान, जंखे चारण जोगडो.१

साधु थीये समाधमां, हरीवर नावे हाथ.
जुने पधारे जोगडा, नरसी केरो नाथ.२

साच बताव्यो स्यामजी, पारथ ने पण पाथ.
ज्वाळे सितळ जोगडा, नरसी केरो नाथ.३

स्नेहे गायी स्यामळा, गीता सरखी गाथ.
जे नत वांचे जोगडो, नरसी केरा नाथ.४

देतो मारा देव तुं, शंकर ने पण साथ.
जंखु दरशन जोगडो, नरसी केरा नाथ.५

भरीये साचा भावथी, भगती केरां भाथ.
जनम छेल्ले जोगडो, नरशी केरा नाथ.६

सामो आवीन शामळा, बाप भरीले बाथ.
जांणी बाळक जोगडा, नरसी केरा नाथ.७

नीर वहावे नेंणला, मुकीयें पगमां माथ.
जादव वंदु जोगडो ,नरसी केरा नाथ.८
(देवकी ना आठमा संतान..जन्म माटे पण आठम
आंम आठ ना चाहक कान ने आठ दोहा थी वंदन)

109 - || काम द्वादसी ||

दोहा

कळा अकळ आपे कई, शुक्कर लाख सलाम
जरी बुरो वह जोगडा, कुट भर्यो जींह काम.१
(कळा ओ आपनार शुक्र ने लाख सलाम छे
पण तेनुं बुरु लक्षण ऐ छे ते काम ने पनाह आपे छे)

साथ कदी ना सोहता, रती पती अर राम
जुवो सीयामां जोगडा, कदीन जडशे काम.२
(रती नो पती ऐटले के काम ने क्यारेय राम होय
त्यां नथी जोयो ऐनुं जीवंत उदाहरण मां जानकी)

शिव अटल्ल समाधीये, धर्णी हता निज धाम.
जळ्यो लखण से जोगडा, कसो बुरो यह काम.३
(शिव पोताने धाम समाधी मां लीन हता त्यां पोते
जीवना जोखमे घुस्यो अनो जळी मर्यो आ केवो
दुस्साहसी छे काम ऐनुं प्रतीक छे)

भुल्या जुवो ब्रह्मा भला, गणो न मंदीर गाम.
जर्णी गर्णी नई जोगडा, कुडो भयंकर काम.४
(ब्रह्मा ऐटले विद्वता नो दाता केहवाय पण
तेने पण काम भुलवे छे माटे तो गामो गाम
ब्रह्मा ना मंदीर नथी आ पण काम ना भयानक
परिणाम नुं प्रतिक छे)

अकळ करे अंधार आ, पळ ई लैवण पाम.
जान भगावो जोगडा, कंस भयानक काम.५
(ऐक क्षण ना विलास माटे आतम तेज ने अधार
मय करी नाखे कंईं सुजवा न दे..तो तमारी भींतर
रहेला कृष्ण ने जगाडो अने भयानक कंस जेवा काम ने
जांणी ने भगाडो)

चंद्र भयो दागी चको, ईंन्द भटकतो आम.
जे हलकां ने जोगडा, कबे न छंडे काम.६
(चंद्र खुद दागी बन्यो ,ईंन्द्र आम तेम भटकतो थयो
माटे काम नी असर भारी भरखम व्यक्तित्वने हलका
कर्या विना छोडती नथी माटे तेने जांणो)

अमरत खातर आटक्या, विष्णु भये तद वाम.
जगन भुलावे जोगडा, कहो कसो यह काम.७
(जे देवो अने दानवो समुद्र मंथन थी अमरत लाव्या
तेनी वहेंचणी माटे विष्णु वाम(सुंदरी) बने छे अनो जे
मोहासक्त थया ते अमरत थी वंचीत रह्या आंम काम ऐ
जीवन नुं ध्योय भुलावे छे)

मोहीनी रुप मोहियो ,भसमासुर दीख भाम.
जाणे सब जग जोगडा,कंदुक नरतक काम.८
(भस्मासुर भगवान शिवने रीजवी वरदान लई सक्यो
पण कंदुक नृत्य करती मोहिनी रुप मां मोह्यो अने
जीवन नो अंत आंण्यो)

पांडु तजीयो प्रांणने, चखतां माद्री चाम.
जीवन हरीले जोगडा, कहो भलो शुं काम.९
(पांडु राजा ने पोताना मोत ना कारण नी खबर
होवा छतां माद्री ना चामडा पर मोहया अने मोत ने भेट्या)

हर पळ परखो हेतने, जिव घट आठो जाम
जाग्रत रहवुं जोगडा,कबे दीखे जो काम.१०
(कोई पण विजातीय पात्र नो सथवार सांपडे ऐटले
तेना स्नेह ने परखो अने हरक्षण जाग्रत रहो)

निल कुबेरां न्याय कज, रावण हर्णीयो राम.
जगत विदित यह जोगडा, कढे लंक वह काम.११
(कारण के निल कुबेर नी पत्नी नाे कामांध रावणे
मात्र हाथ पकडेल अने राम ना हाथे तेने मरवुं पडेल
नहीतर तेने लंका मांथी कोंण काढी सकत ?)

शुकर गुरु साधो सकल. नकर भुलावे नाम.
जडे निकट मे जोगडा, कला जगत अर काम.१२
(शुक्र ऐ कला नो दाता परंतु शुक्र पोते काम ने पनांह
आपनार छे..माटे कला जगत नी साथे काम संकळायेल
जोवा मळे छे पण जो तमे शुक्र ने गुरु साथे मेळवशो तो
कला ना स्वामी तो रेहशोज अने गुरु नुं बेसणुं होय त्यां
काम कोई काळे नही पोहची शके...)

110 - || रीत रिवाज ||

मलक बधोये मेलशे, तेना शिर पर ताज.
जगमां जेणे जोगडा, राख्या रीत रिवाज.१
सूर समाजे साचव्या, असुर भुल्या ते आज.
जाय हिमाळे जोगडा, रखडी रीत रिवाज. २
नांभी थी ना निकळतो, ऐकय जुनो अवाज.
जुवो खमिर ने जोगडा,हवे, रोळे रीत रिवाज.३
मानवता मरवा मुकी, करे न कटम ना काज.
जुना बधाये जोगडा,हवे, रझळ्या रीत रिवाज.४
बाप भलु ज्यां बोलतो, दीकरा करता दाज.
जण्या तणां आ जोगडा, रडवे रीत रिवाज.५
रोड वचाळे रखडता , नफट करे बउ नाज.
जात भुली निज जोगडा, रमणी रीत रिवाज.६
करतां उलटां काम जे, लगीर न लावे लाज.
जळक्या आंखे जोगडा, रह रह रीत रिवाज.७
ससरा ने सामे पडे, अने, मुकती नेव मलाज.
जोतां लागे जोगडा, हवे, रांड्या रीत रिवाज.८
नव नव खंडे न्याळता, अखियां थाकी आज.
जडे हवे क्यां जोगडा,ई, रजवट रीत रिवाज.९

111 - || भाळ्यो में भगवान ||

उंलटो मां ना उदरमां, नव नव मास निधान.
जनम्या पेहला जोगडा, भाळ्यो में भगवान.१

राघव थईने रदय मां, क्यारेक गोकळ कान.
जाजाय रुपे जोगडा,तने,भाळ्यो में भगवान.२

वसतो कण कण विठला, रण वगडो के रान.
जळ थळ सघळे जोगडा, भाळ्यो में भगवान.३

कूंपळ थईने कोळतो, परगट पांनो पान.
जड चेतन मां जोगडा, भाळ्यो में भगवान.४

गायो अमरत गीततुं , माधव रण मेदान.
जुद्ध वचाळे जोगडा, भाळ्यो में भगवान.५

बंम बंम बोली बेहतो, शंकर थई समशान.
जोगी वेहे जोगडा,तने, भाळ्यो में भगवांन.६

अंतर गोखे आपीयें, तने, शांमळीया सनमान.
जादव रुपे जोगडा, तने, भाळ्यो में भगवान.७

करियां उजळां कांम ते, विट्ठल काळे वांन.
जीवण दोरी जोगडा, भाळ्यो में भगवान.८

सरसत दाता शांमळा, गातो चारण गांन.
जागी प्रोढे जोगडा, भाळ्यो में भगवान.९

112 - || वाली राम विवाद ||

गीत : सांणोर

. रुजु रदय राखी रट्ये, असुर थता आबाद.
. जो ईक नोखो जोगडा, वाली राम विवाद.

कहे वाली सूंणो वात राघव तमे, अमे तो वांनरा जात वनका.
तमेतो त्रिलोकी नाथ तारक छता,मेल मानव धर्या देह मनका.
कियो अपराध ना कोय मैं आपनो, तोय कां दगो ते देव करीयो.
बिना पडकार तें मारीयो बांदरो, हरी कां हरी नो प्रांण हरीयो.||01||

मारवुं पीठ पर ऐ न मरदानगी, भड थई रघु कुळ रीत भुल्यो.
आ नतुं युद्ध को अजोधा उपरे, तोय कां मारवा राय तुल्यो.
अकारण पहुडां आंम जो मारशो,पछी तो रहातळ जाय परथी
अडे ना तमारा कुळ ने दाग आ, देव हुं पुछतो रह्यो ऐज डरथी.||02||

सीता ने छेडतल जयंत नो मा जण्यो, भाळतां रदय मां थाय भडको.
नाम वाली छतां रीत्य वाली नही,ईन्द्र नो पुत्र तुं अहम अडको.
अनूज सूग्रीव नी अबळ अरधांगनी, रैयत नी बेटीयूं बान राखे
अधीक अन्याय तूज वध्या अंगद पितु, सगो साढु कहे केम साखे.||03||

अस्तना सुरज ने अरघ तुं आपतो, अहूरी रीत नी अबख अमने.
जेह कारण दीठुं मुक्ख ना जोगडे, जाड नी ओथ थी कह्युं जमने.
पालव्यो तने ने झुलाव्यो पारणे, ई अहल्या मात थी अलग आव्यो.
जनम भोमी अरु तजी तें जणेता, लाज ना हजी तुं केम लाव्यो.||04||

भाई ने भलेतें वनो वन भाटक्यो, भले दाराय तुं भाम भणीयो.
जात वानर गणी ऐब ई जोवुं ना, बळुको भले तुं खुब बणीयो.
जे घडी अहल्या जोई में जोगडा, राम के रदय मां वात रणकी.
मारवो ऐह ने मूकेय जे मात ने, तेज आ धनुष नी तणस टणकी.||05||

(जे रामने लक्ष्मणे कह्युं के आ सोनानी लंका आंम आपी देवाय ? त्यारे राम कहे के ..अपी स्वर्णमयी लंका नमे रोचते लक्ष्मणः जननी च जन्मभुमी स्वर्गादपी गरीयसी...

ऐ रामे वाली ने मारवा कदाच ऐ कारण बतावेल के हे वाली तें जे पण कर्मो कर्यां ते तारा वानर जाती ना जंगली संसर्ग मां होई अने शक्ति ना घमंडे करीने होय तेम गणीं माफ कराय..पण ऐकतो जे जयंते सीता ने कागडो बनी दुभवी तेनो तुं सगो भाई..वळी तुं असुरी रीत थी अस्त थता सुर्य ने वंदना करे छे (वाली संध्या वंदना करतो) तथा तें तने पाळी पोषी ने मोटो करनार माता अहल्या ने ज्यारे सल्या बनीने समय व्यतित करवो पड्यो त्यारे तुं जोवाय नथी गयो अने अहीं रंगमोल मां राचतो हतो..ऐटले तुं अहंकार ना अवतार रुप तुं जीवीत होय त्यारे तारुं मोढुं जोवुं ऐय पाप हतुं माटे हुं तारी सामे न आव्यो..अने तें भले भाई ने वनोवन भटकाव्यो के भले तें बीजा अनाचार आचर्या पण ज्यारे तें मॉ ने विकट समय मां ऐकली मुकेली जोई त्यारथीज तारा मृत्यु माटे मारा धनुष्य नी तणस रणकी रही हती...माटे हण्यो ..

(जोके पछी ताराये श्राप आप्यो के जेम तमारे हाथे मर्यो तेम तेना हाथे तमे मरशो...जे श्राप कृष्ण अवतार मां पीछो करतो पोहचेल अने सत्य ठर्यो) ...आंम राघवे वाली ना प्रसंग थी जे मातृ ऋण थी भागे छे ऐ ईश्वर नो दोषीत छे ऐवुं जणाव्युं)

113 - उलट सुलट दोहानो
..दुमेळी प्रबंध .(चाकण प्रबंध)...

दोहो..

वशी यही वधरा तन्न, यज नवरा किनजा नरा
वजी यद हखरा वन्न, डागजो यहिय जोगडा.१

आ दोहाने नीचेथी उल्टो (ईती थी अथः सुधी/ छेल्लेथी सरु करी शरुवात सुधी उलटा अक्षरे) वांचो ऐटले...आंम थशे...
दोहो...

डाग जो यहीय जोगडा, न्नव राखह दय जीव
रान जानकी रावन जय,न्नत राघव हिय शीव. २

पेहला नो अर्थ..आंम लघर वघर देहे हुं वशी के ज्यां केवां नर छे ऐय खबर नोहती पडती..वजुज ने हखरी (संकोरवु) ने वन्न मां पडी ते डाग मारा हैये जेमनो तेम रह्यो.....
बीजा नो अर्थ..डा (डामवुं) गजो (कलेवर..गजु) ऐ थयुं के जे राखह ना जीव मां दया नोहती, त्यां रान मां जानकी नो रावन पर जय थयो ..कारण न्नत (नित्य..कायम) राघव ना हैया मां शीव नो वास हतो...

114 - || राम ना रुदानी ||
राग: अंधो अंधी बे तपसी नो ढाळ

रांम ना रुदीया केरी रे....वातडीयुं..
आखाये जग थी अजाणीं.....
वातुं राघव नां दल नी वांची .त्यांतो ..
पड्यां आखडीये थी पांणी....राम ना रुदीया केरी रे...टेक.
जोईती जेदी ऐने जनक पुरी त्यारे ..काळजे मारे कोरांणी..
भोळीया नाथ ना धनुं ने भागी मेतो..प्रेमे ग्रह्यां जेनां पांणी..
राम ना रुदीया केरी रे वातडीयुं...आखाये जग थी अजांणी..||01||

मारे खातर जेंणे मेली म्हेलातु..जंगले फरती जांणी..
जाडवे जाडवे रोयो हुं जोगी ज्यारे..असुर लई ग्यो आंणी..
राम ना रुदीया केरी रे वातडीयुं...आखाये जग थी अजांणी..||02||

राम ने कायम राख्यो रदय मां..लंका मां ना ललचांणी
ई विदेही केरा व्हाल ने मारे,...वदवुं ते कई वांणी...
राम ना रुदीया केरी रे वातडीयुं...आखाये जग थी अजांणी..||03||

फाट्युं काळजुं ने आतमो फफड्यो..सीता ज्यां धर मां समांणी
पाड्या पोकार मे सरयुं पांणी..हवे..तुं लईजा मने तांणी..
राम ना रुदीया केरी रे वातडीयुं...आखाये जग थी अजांणी..||04||

जानकी केरी तो जगते जांणी पण...अवध पति नी अजांणी
जोगीदांन के जडे नही ऐनी..,वेदना लखवा वांणी..... राम ना रुदीया केरी रे वातडीयुं...आखाये जग थी अजांणी..||05||

115 - || ममता नो मेहरामण ||

बेटा तारां मांडवडा नां मंगळ गीत..काळज ककळावे रे..
बेटा हवे घडी रे बघडी मां मारा पेट..विदाय वेळा वाशे रे..
बेटा ज्यारे थाक्यो रे पाक्यो आवुं घेर..पांणीडां हेते पावे रे
हवे उंबरो निहाळुं मारा आंत्य..पांपण्य पांणी पाशे रे..
बेटा ज्यारे वाळुं रे करी ने म्हारा व्हाल, थोडोक आडो थावुं रे
त्यारे आंखडीयुं भींजावे तारी याद..भणकारा तारा भाशे रे
बेटा तुंतो हउकली करी ने मारा हेत..बापु ने बीवडावे रे
ऐनो पड्यो रे फड़को मारा पेट्य..जनमारो केम जाशे रे..
बेटा तने जरीक ना विहारे जोगीदान..छांनो छांनो रोशे रे..
बेटा पछी गगळा गळे थी तारां गीत..हालरडां हुलाशे..रे..

116 - || फोरम्युं देतुं फुल ||

फोरम्युं देतुं फुलडुं मारुं..आंगणे उगेल आ..
काली घेली ऐनी काकलुदी मा..बोलतुं बापु ने बा...
फोरम्युं देतुं फुलडुं मारुं..आंगणे उगेल आ.....टेक...
कॉडीयुं कुके ढिंगले कायम..हसतुं रमतुं हेत..
जाळवुं शी रीत जांणतो तोये..राखी मुठी मां रेत...
ओछीयाळी मारी ओसरी थाशे.(ज्यां ई) पगली देतुं पा..
फोरम्युं देतुं फुलडुं मारुं..आंगणे उगेल आ.......(01)
माड्युं करे ई रमकडां मांडी.ई.छोडती जाणें छाप
पेट जणीं मारी पारकी थाशे.. बाळ तो हैयुं बाप
वीर भले ऐनी मांड्य विंखे तोय..जीभ थी ना के जा..
फोरम्युं देतुं फुलडुं मारुं..आंगणे उगेल आ......(02)
आंख खुली त्यांतो आंगणे ऐणे..जोयी उभेली जान
सरणायुं ये तो सेरडो पाड्यो..दिधुं ज्यां कन्या दान
पारकी कीधी आज पिताये .(हवे)रेडवी क्यां जई रा...
फोरम्युं देतुं फुलडुं मारुं..आंगणे उगेल आ.....(03)
फरतुं फेराय हीबका लेतुं..नीचलां ढाळीन नेंण
मौंन थियां नित्य लागतां मिठा .(जे)..विरडा जेवां वेंण
लमणो वाळीन आंखडी लुछे..(मारा) धट मां वागे घा...
फोरम्युं देतुं फुलडुं मारुं..आंगणे उगेल आ......(04)
ध्रुहक्यो ढोल ने काळजां ध्रुज्यां..गुंज्या विदायुं गांन
निकळ्यो जांणो नांभीये थी मारो ..जीवडो जोगीदांन..
आंख सामे मारो आतमो हाल्यो..(मारे)भणवुं कोने भा..
फोरम्युं देतुं फुलडुं मारुं..आंगणे उगेल आ.....(05)

117 - || वैदेही नी वेदना ||

राग : माढ

हवे हैयुं रहे ना हाथ रे..कांव नगणो थीयो तुं नाथ
अग्नी परीक्षा में आपीती तोये.. छोड्यो कां मारो साथ रे..
हवे हैयुं रहे ना हाथ रे..कांव नगणो थीयो तुं नाथ.....टेक
अळगुं पितानुं आंगण किधुं..पडीयां तमारे पंथ
उरमां अमारे उछळ्या तेदी... कोड घणेरा कंथ
हुंकाजे जग आखाय हारे..भडविर करशे भाराथ रे
हवे हैयुं रहे ना हाथ रे..कांव नगणो थीयो तुं नाथ.....०१
काळुं टीलुं मुने चोड्युं कपाळे..मेंणलीयां नो मार्य
चौद वरह हुं पाछळ चाली..ओळखी ना ते आर्य
मैयर सैयर म्हेल मुकीने ..मे पकडी वन नी पाथ रे..
हवे हैयुं रहे ना हाथ रे..कांव नगणो थीयो तुं नाथ.....०२
मांन थकी ऐ राजमां म्हालो .धोबी भर्या जे धाम
राघव शोक न राख रुदामां, नईरे लजावुं नाम
वेदना मारी आ वैदेही केरी..गाशे चारण गाथ
हवे हैयुं रहे ना हाथ रे..कांव नगणो थीयो तुं नाथ.....०३
केंम ठगी मुंने भेजी कपीने..भोळी ने रे भगवान
लाय लगाडी लंकामां त्यारे ..जाळी न जोगीदान
आज पछाडुं वनमां विदेही..मरवा माटेय माथ रे
हवे हैयुं रहे ना हाथ रे..कांव नगणो थीयो तुं नाथ.....०४

118 - || कृपा ही मात केवलम् ||
छंद : चतुस्पदी नाराच अष्टक

उदो उदो उचारणी तुं चारणी महाचला
अनेक रुप आवणी अनाद मात अर् गला
रयां रवेची रोंणबा, दयालु मात देवलम्
जगे अनंत जोगडा, कृपा ही मात केवलम् || 01||

हीये करंत हाकला हजूर मात हिंगळा
जीभे वसंत जोगणीं प्रगट्ट काव्य पिंगळा
घमंक पांव घुंघरी नुपुर नाद नेवलम्
जगे अनंत जोगडा, कृपा ही मात केवलम् || 02||

अदेख देख दोय मे डणंक दैत डांमणी
अटल्ल थीर आतमा परा सगत्त पांमणी
कटंत फंद काळ काय मात नाम है मलम्
जगे अनंत जोगडा, कृपा ही मात केवलम् || 03||

हमंक आय हुकळे धमंक धूप धारणी
दमंक दीग्ध पाळ री चमंक मात चारणी
सुंणंत नाद बाळ पाळ पोगती मया पलम्
जगे अनंत जोगडा, कृपा ही मात केवलम् || 04||

प्रसन्न तुं पळे पळे अनादी मात आवडा
जपी जगत्त जोगणीय नांगरेल नावडा
बलाळ बुट बैचरीय बुड्ढीयुं महा बलम्
जगे अनंत जोगडा, कृपा ही मात केवलम् || 05||

सुरा त्यजो सुरां भजो सूरा बणंत सारणा
अतुल्लनीय आप हो अकल्प कल्प कारणा
पुजंत जात पेढीयां फळां शुभां दीये फलम्
जगे अनंत जोगडा, कृपा ही मात केवलम् || 06||

गणा शिवा शिवंगणीय पांव लोक पुजतां
धराय देह धारणा सुरग्ग लोक सुजता
करे धरंत कांकणाय कोळती मया कलम्
जगे अनंत जोगडा, कृपा ही मात केवलम् || 07||

धरंत जोगी दांन ध्यान ऐक नाम ईशरी
तुही त्तिमिर तेजतुं निहारीकाय निसरी
तुं व्योम तु वसुंधराय ज्वाळ ज्योत तुं जलम्
जगे अनंत जोगडा, कृपा ही मात केवलम् || 08||
(जोगीदान गढवी कृत चतुस्पदी नाराच अस्टक).

119 - || राघव ने ठबको ||

राग: तारी केटला जनम नी रे कमांणी रे.

तमे देवी रे सीताने खुब दुभावी रे.,.रुदा ना काठा रामजी...
तने सेजे रे सरम कां ना आवी...रे कर्युं रे कुडुं कामजी रे.
मैयर सैयर मेली अजोधा.मां आली...वेभव मेली ने हारे वन हाली रे..सथवारे तारे..सामजी..रे...तोय देवि रे सीताने खुब दुभावी रे रुदा ना काठा रामजी रे....०१

लखन लला ने ज्यारे कीधुं तमे कांने..भुल्युं रे करी छे मोटी भगवांने रे..भटकावी वने भामजी..तमे देवि रे सीताने खुब दुभावी रे रुदा ना काठा रामजी रे....०२

कहे वालमीकी मारा तप सब त्यागुं रे..मारी वात मांनो बिजुं ना हुं मागुं रे...चडावुं पगे चामजी रे..तोय ..देवि रे सीताने खुब दुभावी रे रुदा ना काठा रामजी रे....०३

ताप सती तपीयो त्यां..अगनी ओलांर्णी रे..माडी सीता पछी सीद ने समांर्णी रे..धरर्णी रे केरे धामजी रे..तमे देवि रे सीताने खुब दुभावी रे रुदा ना काठा रामजी रे....०४

प्रभु सो लेखांणां तमे चोपडा ना पांने..पण..दीधो रे ठबको जोगी दाने..रे..गजावी आखुं गाम जी...तमे देवि रे सीताने खुब दुभावी रे रुदा ना काठा रामजी रे....०५

120 - || कंठ मयूरी काग ||

धन धन माता धानबा,भाया ना बड़ भाग
जगमां पाछो जोगडा, क्यारे जनमे काग.१

मळे न आखा मलकमा, तव कविता नो ताग
जायें वाटु जोगडा, (हवे) क्यारे जनमे काग.२

खाइ खुखा ारो खेहता, खतरी हथमा खाग
जोम भरंडो जोगडा,(हवे) क्यारे जनमे काग.३

देव समो ई दीपतो, पेरी सिर पर पाग
जोगी रुप सो जोगडा, क्यारे जनमे काग.४

काग वांणी ये कोळव्यां, बावन फुलडां बाग
जबर कवि ई जोगडा,(हवे) क्यारे जनमे काग.५

कलम थकी कंडारियो, राज पुतांणी राग
जगवे ऐवो जोगडा, (हवे) क्यारे जनमे काग.६

छटा अटंक छपाखरे, रुषी समोवड राग
जपट करंदो जोगडा, क्यारे जनमे काग.७

जळक्यो चारण जातमां ,आतम रखी अदाग
जपतो राघव जोगडा,(हवे) क्यारे जनमे काग.८

छँद दुहा नोखी छटा, रसभर मिठडो राग
जीवने अरघे जोगडा, कंठ मयूरी काग.९

121 - || सोनल गई सिघार ||

गमियो खुब गमारने, दारु तणों दीदार
जे दुख हारे जोगडा, सोनल गई सिधार.१

कर्यो न नाते कोयदी, ऐक वखत ईकरार
जगसे अबतो जोगडा, सोनल गई सिधार.२

कर्या हता बउ कोडथी ,ऐक थवा उपचार
जरी न समज्या जोगडा, सोनल गई सिधार.३

कान धरे ई केमनी , परमेहरी पुकार
जिवे न जांणीं जोगडा,सोनल गई सिघार.४
नफट बनेली नात नो, विगते करी विचार
जीव बाळी ने जोगडा, सोनल गई सिघार.५
अति हरख थी आईती, चारण सुंणी चीतार
जुवो ई रोती जोगडा, सोनल गई सिधार.६
अंगत हित सुं आखडे, भरी अहम घट भार.
जोई दुभाती जोगडा, सोनल गई सिधार.७
खुद जाण्यु नाही खलक, ऊंघल रिया अपार
जगवे ऐवी जोगडा, सोनल गई सिधार.८
अती विचारी आखरे, बा ई पडी बिमार
जिवन तजी ने जोगडा,सोनल गई सिधार.९
आप्यो जे आदेशथी, सीस्या दौलत सार
जिवे रदय मां जोगडा, सोनल गई सिधार.१०
आंखडीये आंसु तणी, धधकी रहेल धार
जणवुं कोने जोगडा, सोनल गई सिधार. ११

122 - || असो बुढापो ऐक ||

केस सकळ कालप तजे, टीके न अणनम टेक
जुकवे तनडुं जोगडा, असो बुढापो ऐक
जो आवण से जोगडा, डरता रहत दरेक
भडवीर नो भुक्को करे, असो बुढापो ऐक
यौवन जातां अंगसे, हररी जात हरेक
जतो न केदी जोगडा, असो बुढापो ऐक
उमंग जावत ओहरी, विहरी जता विवेक
जीगर हरी ले जोगडा, असो बुढापो ऐक
करचलियुं जे काळनी ,अंगे पडी अनेक
जोबन भ्रखतो जोगडा, असो बुढापो ऐक
नेंणे निंद नहाडतां, ठुमकां उघरह ठेक
जर्यो न जातो जोगडा, असो बुढापो ऐक
भाम सकळ भाभा भणें , डोहो गणत दरेक
जरी गमे नई जोगडा, असो बुढापो ऐक
काया थर थर कंपती, अंगे करच अनेक
जीव जलावे जोगडा , असो बुढापो ऐक
काम सकळ घरनां करे, दादा कही दरेक
जीवन उजाळे जोगडा, असो बुढापो ऐक
मोह सकळ मनरा मीटे, सुसमण आतम सेक
जोग समय दे जोगडा, असो बुढापो ऐक

123 - || रही नई केम खुद्दारी ||
गीत : रसावली

कळाता कैक भीखारी हजी भारत महीं भमता
छतां ईस्वर सरम कर नाथ कई ने ऐ तने नमता
विंणे छे साव नांना बाळ कचरा मांय कोथळीयो
जगत नो नाथ जोगीदान केवो बाप तुं बळीयो??
हजी बुड्ढी जनेताओ विंणीं ने लाकडां लावे
न सळगे तोय चुल्ला फुंक धुंवे आंख धुंधावे.
धर्या अवतार जे धर पर छतां तुं ना रह्यो साथे
हवे ना आवतो हेठो मर्यो रहेजे सरग माथे.
दीधाता खुब वचनो देव ई चारण कहां चाल्या?
मळ्युं योवन्न, सत्ता धन्न माया मोह मां माल्या ?
नथी चडीया थवातुं आंम लुक्खी वात लखवा थी
सधातो जोग साचो रांक हंदी राज रखवा थी..
सवालो छे धणां जडता नथी उत्तर जगत दाता
वळी क्यारेक चडती रींह तो आ गीतडां गाता
जुवो ना मानता खोटुं अमे साचुं सुणाव्युं छे.
धर्युं छे ध्यान तारुं कांय ना ढांक्युं धुणाव्युं छे.
हजारो लोक भुखे पेट कां फुटपाथ पर सोवे??
सहीदो नी जनेताओ रझळती राह पर रोवे??
जनम सा काज जोगी दान तमने आपीयो जगमा??
रही नई केम खुद्दारी तमरा रक्त के रगमां??

124 - || जगत तात (खेडुत) ||

दोहा

अथरो था मत आदमी, धर ने थोडिक धीर
जोड्य बडद नी जोगडा, विनवे खेडुत वीर
उगसे सुरज ऐकदी,(नीत) रहे न खेडुत रात
जोतर धारी जोगडा,(तने) विनवी करता वात
क्यांथी नांणा काढवा, बिजवारा ना बाप
ज्यारे पाके जोगडा, भाव थता त्यां भाप.
गीरो पड्यां घर गाममां, खुदनी रही न खेर
तोय
जगत तात कई जोगडा, करता नेता केर
खोप कर्यो छे खेतरे,(ई) कोई धरे नई कान
जगत तात नो जोगडा, मरो पुरो तुं मान
गणता जेने गरीबनी, (अहीं) कस्तुरी कइ केक
ई, सो ये पोहची सेक, (हवे)जमवुं सेमां जोगडा
दुघ माटे सउ दोडता, छांटो मळे न छास
जुवोन केवी जोगडा, अच्छे दन की आस
खरा मघाने खेतरे, (जई)खेडुत करतो खंत
जरी न जाणें जोगडा,आणे भावो अंत
पांणत करतो प्रेमथी, बळद्या ने के बाप
ऐनी
मोटप केरुं माप, जडे न गोत्युं जोगडा
कंण पड्याता कोठीये, खेतर नाख्या खोई
हवे
रहीयें बेठा रोई, (आ) जोतां भावो जोगडा

125 - || धुड धोबे धुतकार ||

गायुं उठवी गांमनी, बांधल उंचा बार
जग मां ऐने जोगडा, धुड धोबे धुतकार. ०१
रसण कथायुं रामनी, उर भर्यो अंहकार
जारो वा मुख जोगडा, धुड धोबे धुतकार. ०२
कहळा आखा कटम थी, खोटो राखे खार
जाय परो ई जोगडा, धुड धोबे धुतकार. ०३
सगां मळे ज्यां सामटां, त्यांय करे तकरार
जड मतीया ने जोगडा, धुड धोबे धुतकार. ०३
पिये मदीरा पालीयुं, अखज करे आहार.
जांण पतित सुं जोगडा, धुड धोबे धुतकार. ०४
अवगण गण पर आचरे, उपकारे अपकार
जाय भुली गण जोगडा, धुड घोबे धुतकार. ०५
विनय भुली ने वावरे, अधम भर्या उदगार
जण कपटी गण जोगडा, धुड धोबे धुतकार.६
लीधुं दीये नई लालची, नफट बने नादार
जाय परो कर जोगडा, धुड धोबे धुतकार. ०७
सगा घर्णी ने छेतरे, वपू करत व्यापार
जहर समी ऐ जोगडा, धुड धोबे धुतकार. ०८
रीत भुली निज राखतो, नींच कुलिन घर नार
जात हींणो गण जोगडा, धुड धोबे धुतकार. ०९
नजर न नोंधे नजर सुं, भणे वात दई भार
जे लंपट गण जोगडा, धुड धोबे धुतकार. १०
वात पुरी समज्या विना, हसे तोय तम हार
जुठ कपट गण जोगडा,धुड धोबे धुतकार. ११

126 - || हिंगळाज वंदना अष्टक ||
छंद : चर्चरी

". कहळ करो कांपालनी, खोट खरुं सब खेर
जणीयल हंदी जोगडा, भवां करो अब भेर "
सतपत शिवबा सवंग, तुरकां तरवार तंग,जीत हीत हिंदांण जंग,गण किताक गावो.
करघर किरपांण कंग, अधको धरती उमंग, सरपर मुगटां सलंग, साज ने सजावो.
मारण दैयतां मलंग, चारण जोगा चलंग, भारण हरणीं भलंग, लाख रंग लावो.
करवा उद्धार काज, रखवा भगतां री राज, जय जय जय हिंगळाज, आज भेर आवो. |01|

परशु परहांण पांण, होवत खत हिंदवांण, पटकत जटकंन्त प्राण, बांण तांण ब्हावो.
चारण चरीतार चांण, विध विध करता वखांण,भळके तव तेज भांण, दांण को न दावो.
परगट घट कर पिछांण, जोगा जट करत जांण, हौवत नह कबु हांण, गांण मात गावो.
करवा उद्धार काज, रखवा भगतां री राज, जय जय जय हिंगळाज, आज भेर आवो. ||02||

भखणीं अहरांण भोग, लखणीं पद नमत लोग, फगणीं नही वचन फोग, जोगणीं जमावो.
दांणत नह कबु दोग, जांणत जगमया जोग,आंणत नत अष्ट योग, धरम काज धावो.
छबीयत चरचरी छंद, आतम हंदो अकंद, विगताळी करत वंद, फंद कौ न फावो.
करवा उद्धार काज, रखवा भगतां री राज, जय जय जय हिंगळाज, आज भेर आवो. ||03||

सांमत सोळां सधीर, दिल्ली गढ हक दधीर, वरदाई प्रकट विर, शिस कट्ट सावो.
चक जीह बहारटां चंद, छत जोगी लीखत छंद, वरदाळी करत वंद, चारण गण चावो.
दैवां सब तमण दास, अभिया गत करत आस, खटके ले खबर खास, पास भाव पावो.
करवा उद्धार काज, रखवा भगतां री राज, जय जय जय हिंगळाज, आज भेर आवो. ||04||

ठुमरां की है ठणंक, झांझर बिछीया झणंक, खडगां करती खणंक, ढंक नाद ढावो.
बारट तरकां बलोच, चारण रजपुतां चोच, सघळां री तुंही सोच, लोचनां लुभावो.
रखणीं नव बाळ रीस, अदका दियणी असिस, सिमटे हथ झुके शिस, दीस जोग दावो.
करवा उद्धार काज, रखवा भगतां री राज, जय जय जय हिंगळाज, आज भेर आवो. ||05||

डीम डीम डीम बजत डाक, हुक हुक हुक गण करत हाक, त्रुक तुक टुक रहत ताक, फैंण सेस फावो.
भैरव गण लीयण भूत, हुकळे हर देव दूत, यग दखसां कर अधूत, सूत मात सावो.
सतीयन सळळाट सेह, दख यगना जलन देह, वहरो शिव धरत वेह, तांडवान तावो
करवा उद्धार काज, रखवा भगतां री राज, जय जय जय हिंगळाज, आज भेर आवो. ||06||

शंकर गण भूत संग, रणहूर चख घगत रंग, आग जलत अंग अंग, बांध गंग बावो
भभक्यो तद फैंक भंग, कंकण खणेणाट कंग, जळळ द्रग ज्वाळ जंग, दंग देख दावो
तमसां नह करत तंग,चडीया चरीतार चंग, अंतर भरतो उमंग,प्रेम मात पावो
करवा उद्धार काज, रखवा भगतां री राज, जय जय जय हिंगळाज, आज भेर आवो. ||07||

सीत चीत अमरत समान,जित हित लिख जोगीदान, प्रित नित मातुल प्रमांन, गळक नाद गावो
वित दीत वरदे विधान, गीत रीत पद करत गांन, थीत तीत हिंगोळ थान, भांन सान भावो.
गौरख भजीयो गजान, ठुंमरा लीत घुमत ठान, पद नैपुर कर पिछान, बान नाथ बावो
करवा उद्धार काज, रखवा भगतां री राज, जय जय जय हिंगळाज, आज भेर आवो. ||08||
ईतीः श्री हिंगळाज वंदना अष्टक

127 - || कागडा कदीये कारहे नावे ||
(राग: केदी हवे राम राज आवे ने मळतो..)

कागडा कदीये कारहे नावे.(०२).ऐतो अवळा गाळीया भरावे.....ई कागडा कदीये कारहे नावे.......टेक.

त्रण आंना नी लीये तमाकुं ने..चुनो सोपारीयुंय चावे..
मोटा मोटा नी हारे ई मालता.(०२) गीतडां ऐमनांज गावे..
ई कागडा....||01||

वळे नई कांय ऐवी खोटडी वातमां..खी खी खी दांत खखडावे
पतावी काम ने थाय ई पारका.(०२) अवसर मांय ना आवे...
ई कागडा...||02||

व्याज वाटा नी वातुं करी ने..मुडीयुं कैक नी मुकावे..
डायरे जाय ने करे ई दाखडो.(०२)उसीना लई ने उडावे..
ई कागडा.....||03||

मिठडी मीठडी वातडी मांडीने ..तमने खुब ई तावे...
घडता घाट ने घोचु बनावता..(०२) फांहलो दई ने फसावे..
ई कागडा..||04||

किरतन करवा जाय कथामां..भले भजनीयां न भावे..
जोगीदान के बकता जाय एे..(०२) बउ करी जो ने बावे..
ई कागडा..||05||

128 - || भजन ||

(राग: ओल्या कृष्ण जी सुदामा ने के छे रे..)

तेदी..
हीयामां जनक बउ हरखांणा...जडी ती जेदी जानकी..
ऐणे रैयतुं छोरुं घोडे राखी ..रे..चडेली ऐवी चांनकी रे
हळ लई हाथ मांनो..खेतरो ने खेड्यां...रे..
त्यारे धरती थी धीडी रे पधारी..निकळी ती बाळा नानकी..
तेदी जनक हैया मां खुब हरखांणा..रे जडी ती जेदी जानकी रे..
प्रिति रे करी ने ऐने ..विदेही ये पाळी..
ऐणे..फुलडा विनानी भोय नती भाळी..जणेता जोगी दानकी
तेदी जनक हैया मां खुब हरखांणा..रे जडी ती जेदी जानकी रे..
जरी ना मुझाणी देखो..जनक दुलारी...
ऐतो नेणले पियु ने रईती नीहारी...राघव वाट्युं रानकी
तेदी जनक हैया मां खुब हरखांणा..रे जडी ती जेदी जानकी रे..
रावणे हरी ने ऐने ..राखहुं मां राखी...
अने वालीया ये झुपडीयुं ना वाखी....सीता ने राखी सानकी.
तेदी जनक हैया मां खुब हरखांणा..रे जडी ती जेदी जानकी रे..
आळ रे ओढाड्यां तोये ..सगती ना श्राप्या..
अंगडा पोताना धरती ने आप्या रे...मुकी नई माझा मानकी
तेदी जनक हैया मां खुब हरखांणा..रे जडी ती जेदी जानकी रे..

.

129 - || सेंण कजे सणगार सजे ||
छंद: गीरधारी त्रोटक
(गीरधारी= स,न,य,स./ त्रोटक= स,स,स,स)

पग घुंघर फोलरी बिछीया नेवरी, आवल ने पगपान कडा
चिप चौपलि झांझर तोडोय पायल, टणका फुलडी छेड छडा.
पद पातळी पाजेब मोरपखो, ओली हीरण नैंण न ताल तजे
जोगीदान अती गुंणवान त्रीया नीज सेंण कजे सणगार सजे.||01||
(गुंणीयल त्रीयाये जे पगमां सणगार सज्या छे ते..
घुंघर,फोलरी,बिछीया,नेवरा,आवला,पगपान,कडा,चिप,चौपली,झांझर,तोडा,
पायल,टणका,फुलडी, छेड, छडा,पद पातळी (सेर) पाजेब, मारपखो
(सवेंटीया)अने हीरण नैंण,..आटलुं पगमां पेहर्युं छे..)

हथ मुंदडी विटीयुं पांचियां कंगन,चुडीय बंगडी हाथ चुडा.
हथ फुल अंगुठीय अरसी गोखरु,राखडी बोर थी खुब रुडा
बाजुबंध अणात फुदां टहडां, हथ पांन ने डोरणी धोप हजे.
जोगीदान अती गुंणवान त्रीया नीज सेंण कजे सणगार सजे.||02||
(सेंण काजे त्रीयाये हाथमां..मुंदडी, विंटियु,पांचीया,(पंजो) कंगन,चुडीयु,बंगडी,हाथ
चुडा,हथ फुल,अंगुठी, अरसी, गोखरु,राखडी बोर,बाजुबंध,अणात,फुदां, टहडा,
हथपान,डोरणी,अने धोप..आटला सणगार हाथमां सज्या छे)

अती नाजुक केड्य पे कंणधनी,वळी पंचतडी रटकां परती
जुडो हेम कंदोरो ने जंजीरीयुं, कंणकंती न चंपकली करती
ऐनी नांभीये मोती ने वाळो झुलो,वळी त्रागडी मंडली केम तजे.
जोगीदान अती गुंणवान त्रीया नीज सेंण कजे सणगार सजे.||03||
(सोहागण सुंदरीये तेनी तेनी अती नाजुक कमर पर..कंणधनी,पंचतडी,राटका, जुडो,
कंदोरो,जंजीरीयां,कंणकती,चंपकली,तथा नांभी मां वाळो(सोनानो) परोवेल जेमां मोती
लटके छे..तथा त्रागडी (तगडी) अने मंडली ने पण कमर पर सज्यां छे..)

हिये कंठीय हार ने हांहडीयुं,माळा मंगळ सुत्तर मादळीयां
बोर हुरसी डोकीयां हैहलीया, वळी हालरो झालर हादळीया
तुलसी तिमडी बिजमाळ मगां,गळे खेंगळ मट्टर माळ गजे
जोगीदान अती गुंणवान त्रीया नीज सेंण कजे सणगार सजे.||04||
(ई गुंणीयल रंभा ये..पोताना हैया पर..कंठी,हार, हांसडी, माळा, मंगळ सुत्र,मादळीया,बोर माळा,हुरसी ,डोकीयां, हैहली, हालरो, झालर, तुलसी, तिमडी, बिजमाळ (बिजना चंद्र जेवो हार) मगमाळा, खेंगाळी, अने मटर माळा..वगेरे सणगारो हैया पर गळा मां धारण कर्या छे...)

सजी कांन सुरेलीय ओगणीया वळी ऐरींग टोप ने वालरीया
झेला झुमखा झुम्मर ने झुमणा,टोटी टोप अकोटा ने टालरीया
कर्ण फुल ने कुंडळ ने कडीयुं, लळता लटकाणीया जाय लजे.
जोगीदान अती गुंणवान त्रीया नीज सेंण कजे सणगार सजे.||05||
(सोहागण सुंदरी ये कानमां जे सणगार सज्या ते..सुरेलीया,ओगणीया,ऐरींग,टोप, वाली,झेला,झुमखा, झुम्मर,झुमणा, टोटी, टोप, अकोटा, टालरीयुं, कर्णफुल, कुंडळ, कडीयुं, लटकणीया, ..वगेरे सणगार कांने सज्या छे..)

चुंप रस्सण रवोय दांत चढ्या, वळी नथ्थणी डांमणी नाक नथा.
लुंग वल्लनी फींणीय चुंक धरी,तापे कांटोय दांणोय नेह कथा.
टीको चांदलो मांग ने शिसफुलां,बिंदी भाल मे टीलडी नाथ भजे.
जोगीदान अती गुंणवान त्रीया नीज सेंण कजे सणगार सजे.||06||
(सौदर्य मुरती रमणीये ..पोताना दांत पर सोनाना चुंप,रसण,अने रवो मढ्यो छे..नाके..लुंग, वलनी,फिर्णी, चुंक,कांटो, अने नंगवाळो दांणो..धारण कर्युं..अने कपाळ मां..टीको,चांदलो,मांग, शिसफुल, बिंदी, अने टीलडी लगावी छे जे नेह थी ऐना नाथ ने ऐना प्रियतम ने भजी रही छे..)

माथे राखडी बोर ने सांकळीयुं, सणगार सज्यो ईती सुंदरीये.
ऐनो वाल्यम आज विदेस वळ्यो, दील देह झुले मधरा दरीये.
धणुं हेत करी धुमती झुमती ज्यारे बारणे प्रित टकोर बजे
जोगीदान अती गुंणवान त्रीया नीज सेंण कजे सणगार सजे.||07||

(वाल्यम नी वाट जोती वनीता..माथा मां राखडी बोर, अने सांकळी नो सणगार सजी ने विदेस थी परत फरी रहेल पियु नी राहमां बेठी छे..तेनो प्रियतम अने पोताना हैया ना भाव बंन्ने मधरा मधरा दरीया ना हीलोळे चड्या छे..पण ज्यां पोताने बारणे प्रितना टकोरा थया त्यांतो बाई..अती हेत थी जांणे धुंमवा मांडी छे...)

रचना: जोगीदान गढवी (चडीया) कृत " सृंगार सप्तक"

मो.नं. 9898 360 102

मारा मोबाईल नंबर नी पाछळ आवता त्रण आंकडा" 102 " आवे छे..माटे उपरोक्त रचना मां में स्रीयो ना गरेणा ना नाम पण 102 लीधां छे..वधु आभुषणो नां नाम आपने ध्यान मां होय तो जणावशो...जेथी अमुक आभुषणो नो भुतकाळ नो भव्य वारसो काव्य मां जीवीत रहे...

130 - || खोड़ल तार खेल ||

पोगेय तुं पताळमां, गगने करती गेल.
जोया चारण जोगडे, खोडल तारा खेल.||01||
(हे मा खोडल..तुं पलक मां पाताळे पोगे तो बीजी क्षणे गगन मां गेल करती होय..तारा खेल ने अमे जोई शकीये पण एनो पार न पामी सकीये)

मामडीया मादा तणी, आठेक सदीये आई
जो वढीयारे जोगडा, राज थळां नी राई.||02||
(हे मामडीया मादा चारण नी दीकरी मां खोडल.. राजस्थान नी धरती परथी तुं वढीयार नी धरा पर आशरे आठमी सदी मां दरसाई)

आवड खोडल आवियुं, सातेय बेनड साथ
जननी जायो जोगडा, हाड मेरखियो हाथ.||03||
(मां खोडल ने आवड वगेरे सातेय बेनुं अने साथे हाड वालो भाई मेरखीयो पण हारे हतो..)

डसीयो वीर ने डोकरी, नफ्फट काळो नाग
जानल हाली जोगडा, ताण लियां घर ताग.||04||
(ज्यारे ते धरती पर वीर मेरखिया ने सर्प दंश थयो त्यारे हे मां खोडल त्यारे तारुं नाम जानल हतुं तुं घरणी नो ताग लेवा पाताळे पोगी..)

आवड वीर अहांगळे, (थोडु) मांठुंय बोली मां
जानल पग मां जोगडा,(के)कर खोडी थई कां.||05||
(वीर मेरखीया नो घरती पर ढळेलो देह जोई ने विर नो अहांगळो करती मां आवड जानबाई ने आवतां वार लागेल जोई ने थोडुं मांठुं बोल्यां..के जानल खोडी थई के शुं??)

आँयां सूरज उगशे, (ऐवी) जो थई आवड जांण
(त्यारे)जटक्यो छेडो जोगडा, भोंय गरीग्यो भांण. ||06||
(हमणां सूरज उगशे अने भाई ने भारे पडशे ई जोगमाया आवडने जांण थतां भेळीया नो छेडो झटक्यो अने सुरज पाछो भुमी मां गर्त थयो..)

अमियल कुंपो आंणीयो , व्रांणा धर वढीयार
जानल त्यांथी जोगडा, खोड थतां खोडीयार.||07||
(अमिनो कुंप लई ने मां जानल आव्यां पण मां आवड ना वेंण हतां के क्यांय खोडी थई के शुं?? माटे मां जानल ने खोड थई अने त्यारथी ते खोडीयार तरीके (हालना वरांणां वढीयार थी) प्रसिद्ध थयां..)

आवड खोडल उरथी, वड़ दियुं वरदान
मोटी खोडल मावडी, जग पर जोगीदान.||08||
(त्यारे मां खोडीयार ने भगवती आवडे वरदान आप्युं के भले जन्मे हुं मोटी छुं..पण जगत तने मोटी मानशे..)

नई दउं आवड नाम हुं, धीडीयुं मामड धार
जानल खोडल जोगडा, वर आंणा वढीयार.||09||
(मां आवडे खोडल ने वरदान आप्युं के हुं ज्यां पण रहीश मारुं नाम आवड तरीके नही आपुं..जेथी जगत मां मारी बेन खोडीयार नुं नाम मोटुं थाय...जेना द्रस्टांत रुप आप जोई शको छो के राजस्थान मां जेटलां पण आवड ना मंदीर छे..तेनां नाम आवड नही पण..भादरीयाजी..तनोट राय..तेमडाराय..बेडाराय...चाळकनेसी ..वगेरे थी पुजाय छे..आ वर(वरदान)आंणा (मेळव्युं) ते धरती ऐटले वरांणा(वरआंणा)..)

अमरत खातां उठीयो, मेरखीयो दई मट्ट
जेर उतरतां जोगडा, तोगड दे तलवट्ट.||10||
(अमि कुंपा थी उठी ने वीर मेरखीयाये.आंख खोली..त्यारे नानी बेन तोगडे तलवट्ट लावी ने भाई ने खवराव्या...आ प्रसंग नी यादी मां आजे पण माताजी ने (भाई मेरखीया माटे) तलवट धरावता मां आवे छे जेने ते लोको घांणी कहे छे..जेमां तल अने गोळ खांडेला होय छे...आ स्थळ सिवाय बिजे कोई मंदीरे खोडीयार ने तलवट नथी देवाता..)

फरती भाळी फुनडे, भोळ गोवाळे भोर
जोगण खोडल जोगडा, दुधड नेहे दोर.||11||
(नजीक ना दुधड नेह ना भोळ गवाळ फुनडा ने पोते त्यां होवानी खात्री आपी अने भोळ गवाळ फुनडाये माताजी खोडल ने अहीयां भाळी ..पछी माताजी नुं तथा माताजी ना भाई मेरखिया क्षेत्रपाळ नुं त्यां स्थापन करायुं ईस.1365 ने आसो सुद अस्टमी ने रविवारे...)
आंम मॉ जानल नुं नाम खोडीयार थवुं, मॉ आवड नुं वरदान, तथा उगता सुरज ने रोकवा नी घटना ना साक्षी ऐवा वरांणा नी धरती ने मारां वंदन छे..

131 - || मोगल भैरवी ||
राग: कसुंबीनो रंग/वाया विरम गाम

हारे मात जय जय जय मोगल मछराळ...टेक.
हे ऐवा घांघणीया देवसूर चारण घर चंडीका..जनमी तुं सगती जोराळ...
हे ऐवा भव भव ना भरियेला भावो लई भेळा मां..छोरुं नी लेजे संभाळ..
हे ऐवी चारण गण चरताळी..माता तुं ममताळी..हैया नी भाळी हेताळ....
हारे मात जय जय जय मोगल मछराळ....(०२)....||01||

हे ऐवा कांकण ने भेळीयो ने.. सोयरो रे सोहतो..नव खंडे तारो नेजाळ..
हे ऐवी खुल्ली लट काळीयुं ने तरवारा ताळीयुं..कर मां ते दुशमन नो काळ...
हे ऐवा दैत्यो ने डमवा ने..रण घेली रमवा ने..परगट छे तुंरे परचाळ..
हारे मात जय जय जय मोगल मछराळ....(०२)....||02||

हे ऐवी डणकंती डुंगरे ने..गजवे तुं गाळीया..घड़कावे घरणीं घ्रुजाळ..
हे ऐवा खांडा तरहूर लई खेले तुं खल्लक मां..मल्लक मां माडी मुछाळ...
हे ऐवी अहूरो पर अट हांसे..वेरी ना दळ वासे..व्रेमंडी खेले विकराळ...
हारे मात जय जय जय मोगल मछराळ....(०२)....||03||

हे एवा झणणणणण झांझर ने.,नैपुर रणकार मात..खणकंतो कांबी खणकार..
हे ऐवा धणणणणण धरणी ने ..अंबर पण ध्रुजता..थातां तुज पग नो थड़कार..
हे ऐवी जगदंबा जयकारी..अंबा तुं अवतारी..वारी हुं चारण विगताळ..
हारे मात जय जय जय मोगल मछराळ....(०२)....||04||

हे ऐवुं ओखाधर ओपतुंय थानक थड़ थाहरुं..रांणेहर रुडुं रढीयाळ..
हे ऐवा चारण जोगीदानो हैया थी चिंतवी..ढुकडुं मा तारे ढेढाळ..
हे ऐवी ब्हृमांडे भमनारी.. संचालन करनारी..अंबर धरणी ने पाताळ..
हारे मात जय जय जय मोगल मछराळ....(०२)....||05||

132 - || सुरविर नी समसेर ||

बघडाटी रण बोलती, वट भर लेती वेर
जुवो रडे छे जोगडा, सुरविर नी समसेर
दशमन माथे दपटती, काळ व्रते जो केर
जो मुंगी थई जोगडा, सुरविर नी समसेर
धरम हीणा ने घरबती, ढुंढ तणो कर ढेर
जंपी गई कां जोगडा, सुरविर नी समसेर
अधरम जे नर आचरे, खलक न ऐनी खेर
जोवा मळे न जोगडा, सुरविर नी समसेर
मान हणें मा भोम नुं, एने, ठेकी करती ठेर
जंग लगी ई जोगडा,(हवे)सुरविर नी समसेर
हमची खुंदण हालती,(जई) घुसती दुशमन घेर
जडे हवे ना जोगडा, (ई) सुरविर नी समसेर
मरद कटावे माथडां, (अने)पडे कदी ना पेर
जुकवा मांडी जोगडा, सुरविर नी समसेर

133 - || राहडो सुरज रांण रमे ||
राग: मोर बनी थनगाट करे नो लय..

" रुडोय मजानो राहडो, रचीयो सुरज रांण
जग जोतो र्यो जोगडा, भव भव तुंने भांण."
राहडो सुरज रांण रमे..जीय राहडो सुरज रांण रमे..(०२)
ऐनी आगळ पाछळ आरतीयुं..ऐने गीत नगारा ने घाव गमे..
जीय राहडो सुरज रांण रमे...........(०२) ....टेक.
किलकाट जुवो रजनी करती..धरती सरती फरती फरती
चोडी भाल मां पुनम चांदलीयो, ऐनी आंखडीये अमियुं झरती.(०२)
ओढ्युं ओढण टांकल तारलीये, तिंणा साद थी तम्मर तम्म तमे.
जोगीदांन तणां गुंण गांन सुंणी.. नीत राहडो सुरज रांण रमे. ||01||
जळेळाट नभे जळकाट करे, प्रित सांज परोढ नी थाट पडे..
ऐनी ठेक वचे घन घोर मचे, बर्णी नीर घरा प्रसवेद पडे..(०२)
दीये ताल हेताळीय ताळीय थी, ऐने न्याळीय नारीय नेह नमे.
जोगीदांन तणां गुंण गांन सुंणी.. नीत राहडो सुरज रांण रमे. ||02||
दखणांयन ने उतरांयण मां, दीस देह हींडोळीय ताल दीये..
निरखे नवढा नीज नेंणलीये, प्रितमाळ अयो ज्यम पालखीये..(०२)
लई लाल हींगोळीय देह लजा.,सरमाई उभो होय सांज समे..
जोगीदांन तणां गुंण गांन सुंणी.. नीत राहडो सुरज रांण रमे. ||03||
सनमांन सगत्तीय उर सदा, लीये रास ने सुरज जाय लच्यो
नीशी सांज परोढ ने किरण सुं, मन मानीय रांदल नेह मच्यो..(०२)
रच्यो रास महा नभ मंडळ मां..नव ग्रह निहाळीन पाय नमे
जोगीदांन तणां गुंण गांन सुंणी.. नीत राहडो सुरज रांण रमे. ||04||
|| प्रजा पालक भगवान भास्कर ने हजारो वंदन ||

134 - || ગઝલ ||

करुं बस हुं करुं आ में कर्युं, केवो अहम करता.
जपे नई नाम जागीने, मुरख माया महीं मोया..||01||

समजता जे सिकंदर जातने, जुकवीश हुं दुनिया.
अरे अहींया महांणे ऐय, छांणां सेज पर सोया...||02||

कर्यां ना कोई सत कर्मो, फर्या बस फांकडा थईने..
धरम पर प्रित ना घारी, बुरई नां बीजडां बोया...||03||

मर्या ऐ स्वान ने मोते, रझळते देह रस्ता मां.
सगी आंखे सगा व्हाले, खलक मां ऐमने खोया..||04||

कठण करणी बुरी करनार ने, ईश्वर नही छोडे.
परावर ऐय पछतासे, रदय थी जे नथी रोया...||05||

हजी नर चेत नहीतर भागवा, रस्तो य नई भाळे.
धरम ना खेत रक्षक ज्यां, टपी ने आवशे टोया...||06||

करे कीरतार सामैयां, सरग नी शेरीयुं माथे..
चतुर चडीया जीवी जाशे, धरम ना दुधडे धोया..||07||

करीले काम नेकी ना , जगत पर दान जोगी तुं..
भटकता कैक भोगी ना, अमेतो आत्यमा जोया..||08||

135 - || भवानी पुकार अष्टक ||

छंद : शैल भुजंग

(भुजंग=य य य य/ शैल= य य य ज)

हशे पुर्व ना जे करम मात काळा, वध्यां पाप वाळा बुढां यौन बाळा
हटे ना कटे आखटे जो उताळा, जप्ये नाम तोळां जले जेम ज्वाळा
अनादी तर्णी आई आवी उगारो, धर्यु अंतरे ध्यांन मां ऐक धारुं
जणेता जपुं दान जोगी जुबानी, पुकारुं भवानी तुने हुं पुकारुं ||01||
पड्यो आकरो कां करो काळ परदो, दळोने खळो दोयलां देह दरदो
हवे हीबके ना चडे मात हरदो, भवां द्वार हुं बाळ जोलीय भरदो
थक्यो हुं तक्यो वाट तोळी नीहारी सगत्ती करो भेर तो मात सारु
जणेता जपुं दान जोगी जुबानी, पुकारुं भवानी तुने हुं पुकारुं ||02||

नथी राह कोई चिते आद चंडी, घणों घट्ट मां मां हतो हुं घमंडी
भवां दक्ख भारी पड्यांछे भ्रकंडी, द्रगे मात देखु दीयो धर्म दंडी,
त्रहीमाम बोली पडुं पाय तोळे, हवे मात क्योतो हिमत्त हुंय हारुं
जणेता जपुं दान जोगी जुबानी, पुकारुं भवानी तुने हुं पुकारुं ||03||

तुंही तुं तुंही तुं बज्यो ऐक तारो, पड्या आर्त नादे भवां ना पुकारो
भमर ने चडावे दधी जग्ग भारो, बचावो ग्रही बांय ने काढ्य बारो
जगी खुब्ब जोयुं रुदु चिक्ख रोयुं, बच्या नुं नथी मात ऐकेय बारुं
जणेता जपुं दान जोगी जुबानी, पुकारुं भवानी तुने हुं पुकारुं ||04||
करी ने क्रीपा दोयलां दक्ख कापो, थडो मां तिहारो असां घट्ट थापो
जुवो भाव भोळे जपु मात जापो, धरम मात धारो मति थी न मापो
पड्यो ऐकलो आतमो देह पिंडे ,रखे कोण रेमे मया ध्यांन मारु
जणेता जपुं दान जोगी जुबानी, पुकारुं भवानी तुने हुं पुकारुं ||05||

नमुं नाम नारायणी नित्य नामी, सुंणी साद छोरु तणां आव्य सामी
डणंकी दीयो बाळ ना दक्ख डामी, थरेर्या अमे मात ले हाथ थामी
शिवो ब्रह्म विष्णुं जपे जुग्ग जाता, धरे ध्यांन माता त्रणें लोक तारुं
जणेता जपुं दान जोगी जुबानी, पुकारुं भवानी तुने हुं पुकारुं ||06||

करे ना क्रीपाळी मया आंम मोडुं, दयाळी सदा आपनी पास दोडुं
करी बंध आंखो अने हाथ जोडुं, सदा संसयी शंक रा बंध छोडुं
विचारो विकारो तणी सब्ब घारो जगत्मात तोळा चरण मां जुहारु
जणेता जपुं दान जोगी जुबानी, पुकारुं भवानी तुने हुं पुकारुं ||07||

पड्या पंड विधीं घटे कैक घावो , रदे रेम राखी अरे अंब आवो
तजी योग निंद्रा धरम जांण धावो, बीये बाळ तोळो औ माता बचावो
नथी शब्द कोई नयन बस नीहारुं. उगारो उगारो उगारो उचारुं
जणेता जपुं दान जोगी जुबानी, पुकारुं भवानी तुने हुं पुकारुं ||08||
. ईतीः श्री भवानी पुकार अष्टक
(नोंध: नविन प्रयोग होई ने काव्य द्रष्टी मां..दरेक अंतरा नी प्रथम बे हरोळ मां यती प्रमांणे चार प्रास तथा बाकी नी बे हरोळ मां अंत्यानुप्रास)
(भगवती भवानी आध्य शक्ती पराम्बा ने कोटी कोटी वंदन)

136 - || आल्हा गान रास ||

ढाळ: चारणी रास

आल्हखण्ड ए मध्य प्रदेस बुंदेल खंड ना बनफल क्षत्रिय वीर आल्हा अने उदल नुं यसोगान छे,जेमणे पृथ्वीराज चौहाण ने हरावेल, माहोबा नी लडाई मां ज्यारे आल्हा ना हाथ मा सांग हती सामे पृथ्वीराज अने चंद वरदाई बेज जीवीत बचेल,त्यारे चंदे पृथ्वी राज ने हथीयार नीचा राखवा कहेल कारण के ते जाणता हता के आल्हा सस्त्र विहिन पर घा नही करे,उदल ना मोत थी ते घायल सिंह जेवो भुरांटो थयेल,अने निसस्त्र पृथ्वीराज ने जीवीत छोडी सांग नो घा कर्यो जे सांग आजे पण महीयर सारदा मंदीर ना आंगणा मा खुतेल छे, अने त्यारे बाद आल्हा तेना गुरु गोरख साथे संन्यास लई निकळी गयेल, ते नित्य क्रम प्रमांणे हजी आटली सदीयों पछी पण महीयर मां शारदा पुजा करवा आवे छे, ज्यारे मंदीर खुले त्यारे आल्हाये चडावेल ताजा फुलों मा ना चरणो मां मळे छे,माहोबा परमार राजा साथे रुसणां लई रडते रदये तेमणे वतन छोडेल,तथा कनौज जयचंद ना संनादी नायक थयेल, ज्यारे पृथ्वीराज नी फौज माहोबा पर आवी त्यारे राजा ने पोताना आ सामंतो सांभर्या जे आल्हाये पोतानी बार वरह नी उमरे पिता जसराज ना मारतल नुं माथु वघेरेल माटे तेमने मनावी लाववा कविराज ने मोकल्या, कवि जगनीके आवी ने आल्हा गान संभळाव्युं, अने बंन्ने युद्ध माटे आवेलां,

चडीया रे दळ आज जोने चहूवांण ना,
धिंगाणा ना कांई धूबकी उठ्या ढोल रे, उदल ने आला,
वतन जोवे वीरवर तमारीय वाटडी.01

खंड बुंदेल ना वीर मरे नही खाटले
मरवुं जुद्धे मान एने अण मोल रे,
उदल ने आला,
वतन जोवे वीरवर तमारीय वाटडी.02

बार व्रहे मारेल वेरी तेंतो बापनो
मोत नो तांडव मचीयो तो माहोल रे
उदल ने आला,
वतन जोवे वीरवर तमारीय वाटडी.03

पेट वडा कर वात जाती परमार नी
केम भूले मां भोम ने कीधा कोल रे
उदल ने आला,
वतन जोवे वीरवर तमारीय वाटडी.04

फेर बनाफर होय ना बुंदेल बंकडा
तरवारु मां कोय ना तारी तोल रे
उदल ने आला,
वतन जोवे वीरवर तमारीय वाटडी.05

खपर खांडा खखडावती जोगण खेलती
जमाडो एने बूकडा लाल बंबोळ रे
उदल ने आला,
वतन जोवे वीरवर तमारीय वाटडी.06

जूग जातां पण जह रे जोगीदानीया
बोलसे चारण गीत मा तारा बोल रे
उदल ने आला,
वतन जोवे वीरवर तमारीय वाटडी.07

137- || धाम खोडल धम धमे ||
छंद: हरिगीत सारसी
. (हरिगीत=16,12 $| / सारसी=16,11 |)

मन वंछीत खोडलमया,अंख दियण जण अंध
जग प्रसिद्ध यह जोगडा, धाम कीयो धज बंध
चडीया कलम घन घोर चंडी शब्द मंडी सांतरी.
खर जोळ खंडी दैत दंडी परज्य पंडी पांतरी
सत ज्योत भाळी सारणी नी काळ उभो कमकमे
धन कागवड धिंगी धरा ज्यां धाम खोड़ल धम धमे.||01||

जोगण जपाया जोग माया करण काया कंचणी.
ध्रम काज धाया सकळ साया वेद चारण वंचणी.
भगवंत भोळो करत भगती भुतडां छेटां भमे.
धन कागवड धिंगी धरा ज्यां धाम खोड़ल धम धमे.||02||
ध्रिजबांग धणणण पड़त ध्रोंसा हणत हौंसा हणहणे
धणणाट बाजत ढोल त्रांसा खणण तरहूळ खणखणे
उतर्युं सूरग धर आज सडीया पार ना देवो पमे.
धन कागवड धिंगी धरा ज्यां धाम खोड़ल धम धमे.||03||
प्रगटी जुवो आयल प्रचंडी कान जेवी कणकणे.
डणकुं सूणी दिग पाळ डगमग धरण अंबर धणधणे.
रमझोळ झांझर पाय रुमझुम रंग रासडीया रमे.
धन कागवड धिंगी धरा ज्यां धाम खोड़ल धम धमे.||04||
लख लूट लेहरूं पटल लेवा संत सेवा संचरे.
मन मान जोगी दान जाई आई खोडल अंचरे.
आवी उभीती आत नादे साद पाड्यो जे समे.
धन कागवड धिंगी धरा ज्यां धाम खोड़ल धम धमे.||05||

138 - || केम न आवे कान ||

राग: माढ

मारी भीड सुंणी भगवान रे तुं, केम न आवे कान.
सामळीया वर सुं समजावुं,,वेधू तुं विदवान रे..
मारी भीड सुंणी भगवान रे तुं, केम न आवे कान......टेक
नावलीयो कही वाट निहाळुं..भूली हुं जग भान..
रांणे घोळी ने त्राहळ रेड्युं..जोने लेवाय जान रे..
मारी भीड सुंणी भगवान रे तुं, केम न आवे कान...||01||
छोड नही रण छोड फरीथी, मोहन आ मेदान
मारी मने परवा नई माधा, होशे तारीज हाण रे
मारी भीड सुंणी भगवान रे तुं, केम न आवे कान...||02||
त्रिकम जमुना तट पर हुतो.. नटखट तुं नादान
गोकळ नी हुं एज छुं गोपी, पारख ने पेहचान..
मारी भीड सुंणी भगवान रे तुं, केम न आवे कान...||03||
रावुं अमांणी सांभळ रावु..कान धरो ने कान..
माढ मीरां अने माळवोे माधा, जहर ने जोगीदान रे..
मारी भीड सुंणी भगवान रे तुं, केम न आवे कान...||04||

139 - || शिव अष्टपदी ||

छंद : अष्ट पदी नाराच

डिमडिमाक डिमडिमाक डिमडिमाक डम डमा
बजंत डाक शिव का धरा पडांय धम धमा
तणंत घोम तिरहूरा त्वरीत्त वेग लै तमा
उठंत नाद घोर त्राड प्हाड देत पड़ घमा
धगंत लाल लोचनाय तेज सूर टमटमा
अनाधी देव ईश तुं निकुल्ल नाथ निरगमा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||01||
चडे चबांन चारणांय छंद शी करी छटा
कीया प्रकट्ट काळशाय जड्धरा खुली जटा
धडं धडा धडक धडक धरा धमंक घुर्जटा
कडड थडड फडड फटाक फेण शेष का फटा
किलक्क किलक्क भेरूकाळ बोलतोल बंम्बमा
नटाट रंग नाच शुं सकंभरी करे समा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||02||
धरा पडंत गंग धार धोध शीश पे धर्यो
खुली जटा लटा कटाय भद्र विर सुं भर्यो
फरर फरर फरर फड़ाक फेर फूरदडी फर्यो
हर्यो है दक्ष हाम धाम ठाम ध्वंस के ठर्यो
डडम् डडम् डडम् डडम्ब डाक बोल डमडमा
ततत्त् ताक थाक थैय नाट राज ना थमा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||03||

बबंम्ब बबंम्ब बंम्ब बंम्ब बंम्ब नाद बज्जीया
शिवंम प्रकट्ट संग विर सैन्य प्रेत सज्जीया
हडड हडड हडड हुकंत भूत नाथ भज्जीया
कीये भ्रकुंड नैंण काळ रुप क्रोध कज्जीया
अघोर घोर नाद मे चले फुकंत चिल्लमां
कपोल कांघ शिश कट्ट भूत प्रेत सा भमा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||04||

घुमी उमड घुमड जटा घने घुमंड घोरीयां
गड़ड हड़ड कड़ड कड़ेड फट्ट आभ फोरीयां
सुट्यो सड़ाफ डांफ नंदी हांफ राव होरीया
धमा धमाक देत धींह धाक दक्ष धोरीयां
जली सती अती कलीक् काळ हाड कमकमा
बजंत पाय पयजणां छनन छनन छमा छमा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||05||

दीयंत त्राड प्हाड फाड़ पांण भौम जा पडा
करंत शिव काल कोप जोप धोप जोगडा
दीखंत्त रौद्र रुप दक्ष तांडवम तडम तडा
भगे कहां भवां पिताय जग्ग राह नव जडा
थरर थरर थरर थयल्ल काय ध्रुज कमकमा
मनस्वी पुत्र ब्रहम मान नाथ पाव मे नमा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||06||

खडड भडड खड्यो खलक्क खंड द्विप खंडीया
जली कहंत जोगडो चिता विहीन्न चंडीया
रुके न रौद्र रुप शीश मुंड काट मंडीया
भ्रकुंडी नाथ भोळीयाये दक्ष राज दंडीया
हरी गये हरर तदे तमस्वी देख कर तमा
चल्यो हे चक्र वक्र हस्त देह टुक्क कर दमा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||07||

विसो खटा खटा विसोय पिंड देह परगमा
सति हती हती नती य झीक नेंण से झमा
हयात हिम जोड्य हाथ शिस झुक्क के क्षमा
सती पति जपे जती अरप्पीयुं सूता उमा
करत्त सेव देव हेव रंज मन्न नई रमा
पवित्त चित्त हीत्त मात पार वत्तीयां पमा
प्रचंड जोम जड़ घराय जोगीदांन को जमा
जीभे करंत हे रमा खमा खमा खमा खमा..||08||

(अथः श्री शिव किर्तन अष्टपदी नाराच अष्टक संपुर्णम्)
(विसो खटा = 26 + खटा विसो = 26
ऐटले के 26+26= 52 टुक मां सति नो देह थयेल (खट =6))
(भगवान शिव दक्ष नो ध्वंस करवा हेतुज यग्न स्थाने आवेल
अने ते पछी हीमालय के महाराजा हिमावन अने मैनावती नी
भक्ती वान पुत्री पार्वती साथे लग्न हेतु कैलास पर रोकांण थयुं
अने माता पार्वती ना मेळाप थी अतः अष्टक ने अंतिम चरण
आपवा नो प्रयास आप सहुने गमशे ऐवी आशा व्यक्त करुं छुं)
ॐ नमः शिवाय

. ||दो अक्षरी दोहो||

हे हरी हर हुं हाररो. रह रह हर रही रार.
हरर रहो हरराह हर. हरी हररोह हरार.

जोगीदान गढवी कृत.

मात्र बेज अक्षर ह अने र ना उपयोग थी दोहो.
अर्थ.
हे हरी(विष्णुं) हर हुं(हुं शिव)
हाररो(हारी रह्यो छुं) रह रह (रही रही ने)हर (शिव)
रही रार(रार यानी फरीयाद रही छे.)
हरर(हरेरी गयो छुं)
हर राह(दरेक रस्तेथी)हर(शिव).
हरी (विष्णुं) हर (हरवुं हरीले)
रोह (क्रोध करी ने) हरार (हराववा वाळा ने).

जोगीदान गढवी ..मो.नं. 9898360102



दख साले स्रोवर तटा, छटा आवणी याद
जळ नवला लै जोगडा, वरह भला वरसाद

छत्र प्रबंध

रचना: जोगीदान गढवी (चडीया)

अंतिम चरण लुप्त प्रबंध दोहो

आदरणीय पिंगळसी बापु ना चरणे काव्यात्मक पुष्प

रचना: जोगीदान गढवी (चडीया)

5 मनन प्रंकट क्रिष्णा वचं 7

(6 — प्रं)

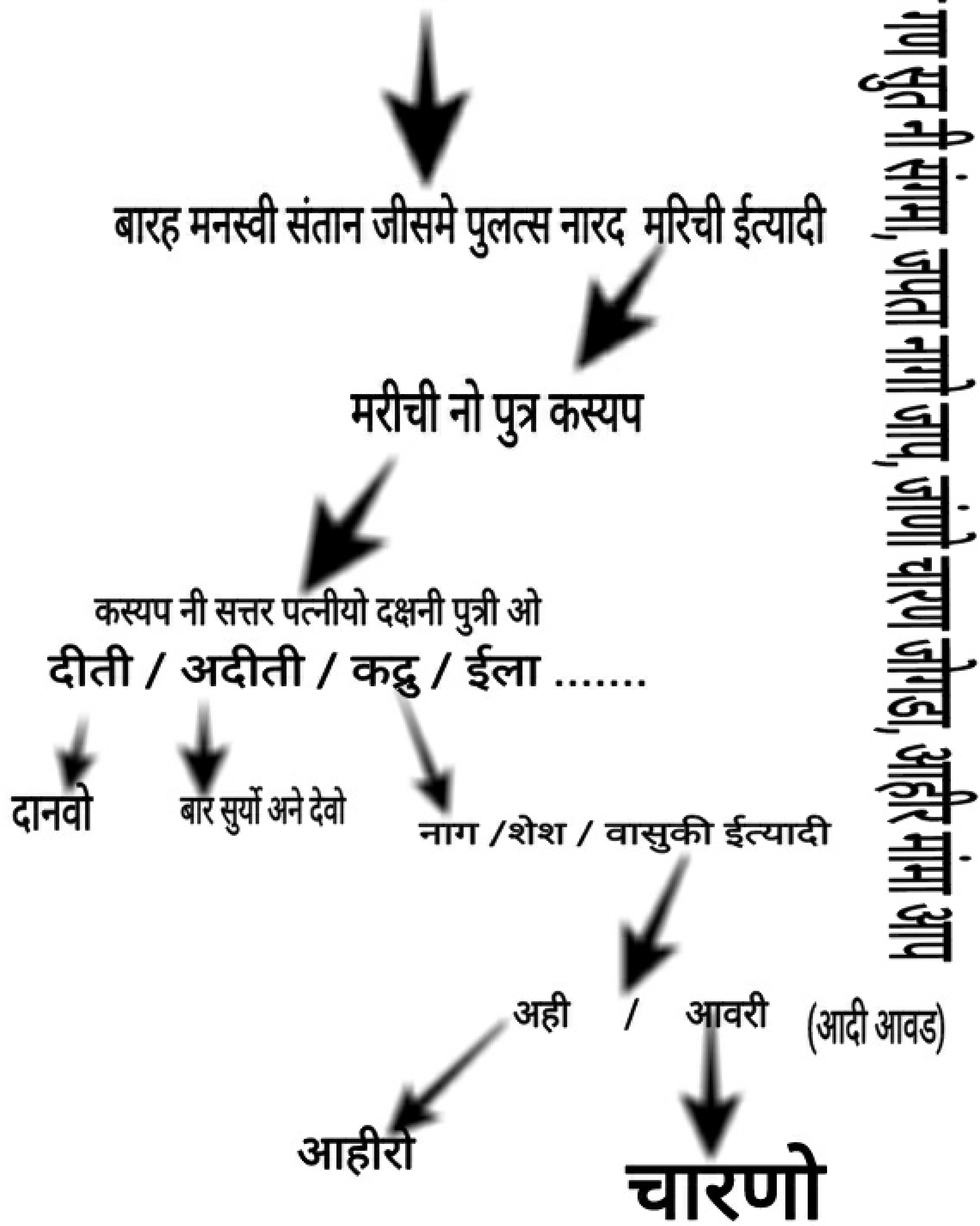
4 नात प्रित नव खंड 8

3 लखत जोगडा गृहन अपिं 1

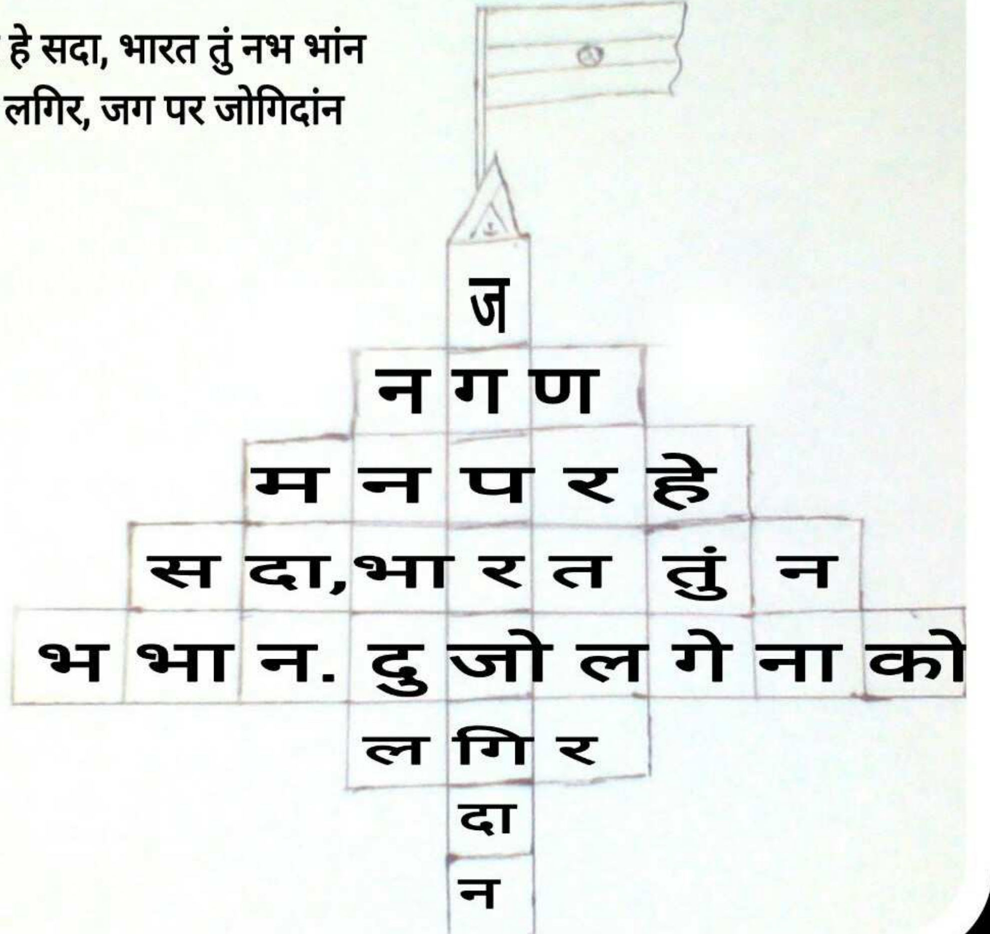
(2 — गृ)

नंबर 1 थी 8 ना ऐक ऐक अक्षरो क्रमसः जोडशो ऐटले चोथुं चरण मळशे...
जेने समजायुं होय ते लखो के चोथुं चरण शुं हशे ?

जोगीदानभाई गढवी मो - नं. 9898360102



ब्रह्मा जी से सृष्टी की उत्पत्ती
बारह मनस्वी संतान जीसमे पुलत्स नारद मरिची ईत्यादी
मरीची नो पुत्र कस्यप
कस्यप नी सत्तर पत्नीयो दक्षनी पुत्री ओ
दीती / अदीती / कद्रु / ईला ....
दानवो
बार सुर्यो अने देवो
नाग /शेश / वासुकी ईत्यादी
अही / आवरी (आदी आवड)
आहीरो
चारणो
शिव गण सुत नी संगम, जपता नागो जाप, जंगो चारण जोगडा, अहीर मांमा आप



जोगीदानभाई गढवी मो - नं. 9898360102



5 अंतिम चरण लुप्त प्रबंध दोहो 7

6

शिव रीपु षड काट दे

4 आ चडीयो उच रेण 8

लखन वखन शुभ्रां वदे

3 2 1

चोथु चरण कयुं हशे आ दोहा नुं ??

रचना : जोगीदान गढवी (चडीया)

. (संपुर्ण बोडीया अक्षर लाळो छंद)



. छंद :रेणंकी

. रचना : जोगीदान गढवी कृत.

करशन मन कपट.झपट दल दशमन.वरसत सर झट फरड फणण.
घरसण कज धरण.वरण रत वरणन.परणन अपसर मरण घणण.
हर खण दल झळळ.भळळ वसतर हर.करधर चकरण करण हणण.
जगदन रच सरळ तरळ कवतण जग.लरळ लरळ मगलहण मणण.

जोगीदान गढवी कृत

(सरलार्थ)
करशन-कृष्ण.मनमे कपट करके दुसमन के दलपर टुटा.
वरसत-बरसते है.सर-बांण.घरसण-जंग.धरण-धरती.
वरण -रंग.रत रातो लाल लोहीयाळ.परणन अपसर-अप्सरा ने वरवा घणांय मर्या.
हर खण- हरेक क्षण.वसतर हर-वस्तरा हरण.
करधर चकरण- कर हाथ मां चक्र धरवा वाळो.
जगदन -जोगीदान. कवतण -कविता.
लरळ -लळी लळी.मगलहण - मोगल ने मांनी ने.

कविश्री जोगीदानभाई गढवी (चडीया) Mo :- 9898360102

चारण कविश्री जोगीदानभाई गढवी (चडीया) रचित रचनाओ चारणी साहित्य ब्लोग ना माध्यमथी संकलन करी ई-बुक स्वरूपे मुकेल छे आ ई-बुक मां काईं भूल होय तो क्षमा मांगु छु

ई-बुक बाय :- वेजांध गढवी - मोटा भाडिया मांडवी-कच्छ

www.charansangathan.in
www.charanisahity.in

Mo :- 9913051642



अवनवा समाचार, साहित्य, रोजगार समाचार वगेरे आपना मोबाईल पर मेळववा माटे चारण संगठन ऐप्लीकेशन अवश्य डाउनलोड करो

CHARANSANGATHAN APPLICATION DOWNLOAD KARO

https://play.google.com/store/apps/details?id=com.juniper.charan_sangathan